तमसो मा ज्योतिर्गमय

शिक्षा सारथी

विद्यालय शिक्षा विभाग, हरियाणा की पत्रिका

वर्ष- 14, अंक - 8-9, जुलाई-अगस्त 2026 , मूल्य-15 रु

schooleducationharyana.gov.in | shikshasaarthi@gmail.com

सुपर 100 :
सपनों को दे रहा नई उड़ान

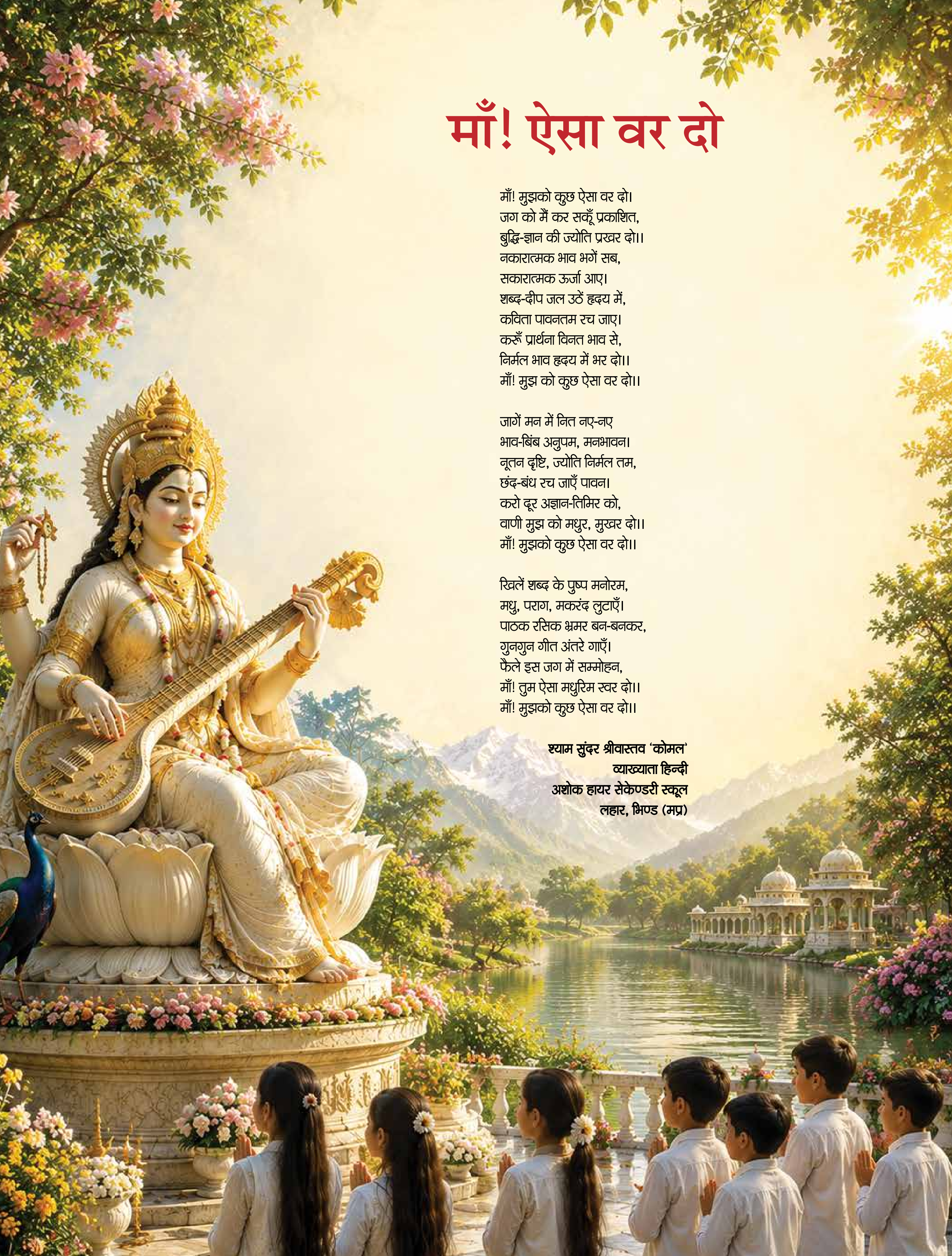

माँ! ऐसा वर दो

माँ! मुझको कुछ ऐसा वर दो।
जग को मैं कर सकूँ प्रकाशित,
बुद्धि-ज्ञान की ज्योति प्रखर दो।।
नकारात्मक भाव भगें सब,
सकारात्मक ऊर्जा आए।
शब्द-दीप जल उठें हृदय में,
कविता पावनतम रच जाए।
करूँ प्रार्थना विनत भाव से,
निर्मल भाव हृदय में भर दो।।
माँ! मुझ को कुछ ऐसा वर दो।।

जागें मन में नित नए-नए
भाव-बिंब अनुपम, मनभावन।
नूतन दृष्टि, ज्योति निर्मल तम,
छंद-बंध रच जाएँ पावन।
करो दूर अज्ञान-तिमिर को,
वाणी मुझ को मधुर, मुखर दो।।
माँ! मुझको कुछ ऐसा वर दो।।

खिलें शब्द के पुष्प मनोरम,
मधु, पराग, मकरंद लुटाएँ।
पाठक रसिक भ्रमर बन-बनकर,
गुनगुन गीत अंतरे गाएँ।
फैले इस जग में सम्मोहन,
माँ! तुम ऐसा मधुरिम स्वर दो।।
माँ! मुझको कुछ ऐसा वर दो।।

श्याम सुंदर श्रीवास्तव 'कोमल'
व्याख्याता हिन्दी
अशोक हायर सेकेण्डरी स्कूल
लहार, भिण्ड (मप्र)

शिक्षा सारथी

जुलाई-अगस्त 2026

प्रधान संरक्षक
नायब सिंह
मुख्यमंत्री, हरियाणा

संरक्षक
महीपाल ढांडा
शिक्षा मंत्री, हरियाणा

मुख्य संपादक
विजय सिंह दहिया
प्रधान सचिव,
विद्यालय शिक्षा विभाग, हरियाणा

संपादकीय परामर्श मंडल

जितेंद्र कुमार
महानिदेशक,
माध्यमिक शिक्षा, हरियाणा

मनिता मलिक
निदेशक,
मौलिक शिक्षा, हरियाणा

स्वप्निल रविंद्र पाटिल
राज्य परियोजना निदेशक,
हरियाणा विद्यालय शिक्षा परियोजना परिषद्

डॉ. ऋचा राठी
अतिरिक्त निदेशक (प्रशासन)
माध्यमिक शिक्षा, हरियाणा

संपादक
डॉ. देवियानी सिंह

उप-संपादक
डॉ. प्रदीप राठौर

डिजाइन एवं प्रिंटिंग
हरियाणा संवाद सोसायटी

मूल्य: 15 रुपये, **वार्षिक**: 150 रुपये

Published & Printed by **Parveen Sangwan** on behalf of President, Shiksha Lok Society-cum-Director General Secondary Education, Haryana. Published from office of Director General Secondary Education, Haryana, Plot No. 1-B, Shiksha Sadan, Sector - 5, Panchkula.

Printed by M/ s. J.K. Offset Graphic Pvt. Ltd. at its printing press B-278, Okhla, Industrial Area, Phase -I,
New Delhi-110020

Editor: Dr. Deviyani Singh.

"सीखना जीवन का अंतहीन सफर है, हर नई बात एक नया क्षितिज खोलती है।"

» हरियाणा सुपर-100 बना प्रतिभाओं की उड़ान का सशक्त मंच -मनोहर लाल 5
» सरकारी विद्यालयों से IIT और AIIMS तक 7
» 'स्प्रिंट' प्रशिक्षण ने खिलाड़ियों में भरी नई ऊर्जा 12
» ज्ञान, कौशल और नवोन्मेष : एआई के साथ भारत की उड़ान 16
» मनाली की बर्फीली वादियों में साहस, संस्कृति और राष्ट्रप्रेम 18
» मोरनी हिल्स की वादियों में स्काउट मास्टर की जीवंत डायरी 20
» पहेलियाँ : भाषा, संस्कृति और सृजन का अद्वितीय संगम 22
» जगह नहीं, पूरा सिस्टम बदलना होगा 24
» खेल-खेल में विज्ञान 28
» मम्मी की रसोई, मेरी प्रयोगशाला 30
» उड़ान : ग्रामीण भारत में युवा नवप्रवर्तक की नई उड़ान 31
» A Book Club 32
» A Childhood Measured by Monsoons 34
» The Canvas of Every Child 37
» Views of Vivekananda 40
» Monsoon: A Season of Memories and Emotions 42
» Guru Purnima 44
» Raksha Bandhan 46
» Krishna Janmashtami 48

पत्रिका में प्रकाशित लेखों में लेखकों की निजी राय हो सकती है।
यह आवश्यक नहीं कि विभाग उनसे सहमत हो।

प्रतिभा, नवाचार और सीखने की नई उड़ान

शिक्षा केवल पुस्तकों के पन्नों तक सीमित ज्ञान का नाम नहीं, बल्कि वह सतत प्रक्रिया है जो बाल मन को सपने देखने, प्रश्न पूछने, सीखने और उन सपनों को साकार करने का साहस देती है। 'शिक्षा सारथी' का जुलाई-अगस्त अंक इसी व्यापक शैक्षिक-दृष्टि, नवाचार, प्रतिभा और जीवन-मूल्यों को समर्पित है।

हरियाणा की धरती प्रतिभाओं से समृद्ध रही है। आवश्यकता केवल उन्हें उचित अवसर, मार्गदर्शन और मंच देने की है। इस अंक में 'हरियाणा सुपर-100' के माध्यम से प्रतिभाशाली विद्यार्थियों को मिली नई उड़ान, उनकी उपलब्धियों और संभावनाओं को रेखांकित किया गया है। इसी क्रम में 'स्प्रिंट प्रशिक्षण' खेल प्रतिभाओं को अनुशासन, आत्मविश्वास, धैर्य और उत्कृष्टता की ओर बढ़ाने वाली एक प्रेरक पहल के रूप में सामने आता है। शिक्षा और खेल का यह समन्वय विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास की दिशा में महत्त्वपूर्ण कदम है।

इस अंक में शिक्षा के साथ अनुभव और संवेदना की भी सुंदर यात्रा है। मनाली की बर्फीली वादियों से लेकर मोरनी हिल्स की पहाड़ियों तक की यात्राएँ साहस, प्रकृति, संस्कृति, अनुशासन और राष्ट्रप्रेम के विविध रंगों से परिचित कराती हैं। पहेलियों के माध्यम से भाषा और संस्कृति का सृजनात्मक संगम तथा 'मम्मी की रसोई, मेरी प्रयोगशाला' के माध्यम से दैनिक जीवन में छिपे विज्ञान को समझने का प्रयास सीखने को रोचक बनाता है।

'बाल सारथी' और 'खेल-खेल में विज्ञान' जैसे स्तंभ बाल-मन की जिज्ञासा, कल्पनाशीलता और नवाचार को स्वर देते हैं। हमारा विश्वास है कि प्रत्येक बच्चा संभावनाओं से भरा है। आवश्यकता है उसे विश्वास, अवसर और सही दिशा देने की। 'शिक्षा सारथी' इसी विश्वास के साथ ज्ञान, संवेदना, नवाचार और प्रेरणा की यात्रा को निरंतर आगे बढ़ाने का संकल्प दोहराता है।

आइए, मिलकर ऐसी शिक्षा का निर्माण करें जो केवल भविष्य के लिए तैयार न करे, बल्कि विद्यार्थियों को अपने वर्तमान को बेहतर बनाने और समाज के भविष्य को गढ़ने का सामर्थ्य भी दे।

- संपादक

हरियाणा सुपर-100 बना प्रतिभाओं की उड़ान का सशक्त मंच -मनोहर लाल

बुनियाद योजना के तहत संचालित 103 केंद्रों में 25 नए केंद्र जुड़ेंगे, कुरुक्षेत्र सुपर-100 सेंटर को मिलेंगे 100 नए कंप्यूटर

डॉ. प्रदीप राठौर

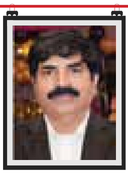

हरियाणा के मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी ने बीते दिनों चंडीगढ़ में आयोजित हरियाणा सुपर-100 अभिनंदन कार्यक्रम में बतौर मुख्य अतिथि शिरकत की। इस अवसर पर उन्होंने हरियाणा सुपर-100 योजना के मेधावी विद्यार्थियों को उनकी उत्कृष्ट उपलब्धियों पर बधाई देते हुए दो महत्त्वपूर्ण घोषणाएँ कीं। मुख्यमंत्री ने कहा कि बुनियाद योजना के तहत वर्तमान में संचालित 103 केंद्रों में 25 नए केंद्र जोड़े जाएँगे, ताकि प्रदेश के अधिक से अधिक प्रतिभाशाली विद्यार्थियों को गुणवत्तापूर्ण मार्गदर्शन उपलब्ध कराया जा सके। इसके साथ ही उन्होंने कुरुक्षेत्र स्थित सुपर-100 सेंटर को 100 नए कंप्यूटर उपलब्ध कराने की भी घोषणा की। इस मौके पर केंद्रीय ऊर्जा मंत्री, श्री मनोहर लाल भी मौजूद रहे।

मुख्यमंत्री ने कहा कि आज अपने सामने नए भारत का एक चमकता हुआ भविष्य देख रहा हूँ। उन्होंने कहा कि आज हरियाणा सुपर-100 के बच्चों ने अपनी कड़ी मेहनत, संकल्प और पुरुषार्थ से यह सिद्ध कर दिया है कि वे देश का भाग्य बदलने की क्षमता रखते हैं। उन्होंने कहा कि देश की सबसे प्रतिष्ठित और कठिन मानी जाने वाली आईआईटी-जेईई परीक्षा उत्तीर्ण कर इन मेधावी विद्यार्थियों ने यह साबित कर दिया है कि यदि हौसला बुलंद हो तो हर बाधा को पार कर सुपर परिणाम प्राप्त किए जा सकते हैं।

मुख्यमंत्री ने सभी प्रतिभावान विद्यार्थियों, उनके माता-पिता तथा गुरुजन को इस उल्लेखनीय सफलता पर हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ दीं। उन्होंने कहा कि हरियाणा सुपर-100 योजना की शुरुआत इस सोच के साथ की गई थी कि धन और संसाधनों की कमी कभी भी किसी मेधावी विद्यार्थी की प्रतिभा के मार्ग में बाधा नहीं बननी चाहिए। इस योजना का उद्देश्य प्रदेश के प्रतिभाशाली विद्यार्थियों को उनकी क्षमता के अनुरूप अवसर उपलब्ध कराना है। उन्होंने कहा कि सरकारी स्कूलों में पढ़ने वाले ग्रामीण पृष्ठभूमि के बच्चों को भी उच्च शिक्षा के लिए बेहतर अवसर उपलब्ध हो, आज सुपर 100 इसे सार्थक कर रहा है

मुख्यमंत्री ने विशेष प्रसन्नता व्यक्त करते हुए कहा कि सफलता प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों की सूची में प्रदेश की बेटियाँ अग्रिम पंक्ति में खड़ी हैं। उन्होंने कहा कि ये सभी बेटियाँ पूरे प्रदेश की अन्य बालिकाओं के लिए प्रेरणा का स्रोत हैं और इनकी उपलब्धियाँ समाज के लिए गर्व का विषय हैं।

उन्होंने इस अवसर पर हरियाणा सुपर-100 के शिक्षकों की भी विशेष सराहना करते हुए कहा कि उन्होंने इन बच्चों को केवल किताबी ज्ञान ही नहीं दिया, बल्कि उनके भीतर छिपे आत्मविश्वास और विश्वास को भी जागृत किया, जिसके परिणामस्वरूप आज ये विद्यार्थी नई ऊँचाइयों तक पहुँचे हैं।

मुख्यमंत्री ने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी का सपना है कि वर्ष 2047 तक भारत एक विकसित राष्ट्र बने। उन्होंने कहा कि इस विकसित भारत की भव्य इमारत का निर्माण आप जैसे होनहार, प्रतिभाशाली और तकनीकी रूप से सक्षम युवा करेंगे। आपकी बुद्धिमत्ता, नवाचार और खोज मेक इन इंडिया तथा आत्मनिर्भर भारत के संकल्प को साकार करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाएगी। मुख्यमंत्री ने विश्वास व्यक्त किया कि हरियाणा सुपर-100 के विद्यार्थी भविष्य में भी अपनी प्रतिभा, परिश्रम और नवाचार केबल पर प्रदेश और देश का नाम राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय स्तर पर गौरवान्वित करेंगे।

हरियाणा सुपर-100 अभिनंदन कार्यक्रम में अपने उद्बोधन में केंद्रीय मंत्री मनोहर लाल ने कहा कि वर्ष 2015 में उनकी सरकार ने शिक्षा-व्यवस्था में व्यापक सुधार लाने के उद्देश्य से मेरिट को मिशन बनाया। उन्होंने कहा कि सरकार का स्पष्ट लक्ष्य था कि प्रत्येक

प्रतिभाशाली विद्यार्थी को उसकी योग्यता के अनुरूप आगे बढ़ने का अवसर मिले।

उन्होंने कहा कि उनकी सरकार ने बिना खर्ची, बिना पर्ची के सिद्धांत पर सरकारी नौकरियाँ देने की व्यवस्था लागू की तथा योग्यता के आधार पर पारदर्शी भर्ती प्रक्रिया सुनिश्चित की। उन्होंने कहा कि सरकार ने प्रतिभा और मेहनत को ही सफलता का आधार बनाया। केंद्रीय मंत्री ने कहा कि हरियाणा सरकार और श्री नवीन मिश्रा के संयुक्त प्रयासों से सुपर-100 योजना की शुरुआत की गई, जिसका उद्देश्य आर्थिक रूप से कमजोर और मेधावी विद्यार्थियों को उच्च स्तरीय प्रतियोगी परीक्षाओं की गुणवत्तापूर्ण तैयारी उपलब्ध कराना है।

उन्होंने कहा कि वर्ष 2018 में उनकी सरकार ने योग्यता के आधार पर 18,218 सरकारी नौकरियाँ प्रदान कीं, जो पारदर्शी एवं मेरिट आधारित भर्ती व्यवस्था का प्रमाण है।

केंद्रीय मंत्री ने कहा कि सुपर-100 कार्यक्रम के अंतर्गत विद्यार्थियों ने IIT एवं NEET जैसी प्रतिष्ठित प्रतियोगी परीक्षाओं में सफलता प्राप्त कर हरियाणा का नाम रोशन किया है। उन्होंने इस उपलब्धि को विद्यार्थियों की कड़ी मेहनत, शिक्षकों के समर्पण तथा सरकार की दूरदर्शी पहल का परिणाम बताया। केंद्रीय मंत्री ने कार्यक्रम में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले सभी विद्यार्थियों को उज्ज्वल भविष्य के लिए शुभकामनाएँ दीं तथा उनके अभिभावकों को भी इस सफलता पर हार्दिक बधाई दी। उन्होंने विश्वास व्यक्त किया कि सुपर-100 योजना आगे भी हरियाणा के प्रतिभाशाली विद्यार्थियों के सपनों को नई उड़ान देती रहेगी। उन्होंने कहा कि सरकार ने गाँव-गाँव में लाइब्रेरी खोलने का संकल्प लिया है।

इस अवसर पर विद्यालय शिक्षा विभाग के प्रधान सचिव विजय सिंह दहिया, मुख्यमंत्री के उपप्रधान सचिव यशपाल यादव, महानिदेशक माध्यमिक शिक्षा जितेंद्र दहिया, महानिदेशक सूचना जनसंपर्क एवं भाषा-विभाग केएम पांडुरंग, अतिरिक्त निदेशक मनीष लोहान, मीडिया सचिव प्रवीण आत्रेय, विकल्प फाउंडेशन के संस्थापक नवीन मिश्रा सहित विद्यालय शिक्षा विभाग के कई वरिष्ठ अधिकारी मौजूद रहे।

drpradeeprathore@gmail.com

साक्षी, आईआईटी रुड़की

मैं एक कृषक परिवार से संबंध रखती हूँ। मेरे माता-पिता ने कठिन परिश्रम करके मुझे आगे बढ़ने का अवसर दिया और उनका त्याग मेरे लिए सबसे बड़ी प्रेरणा है। मेरे परिवार का विश्वास और मेरे शिक्षक श्री नवीन मिश्रा जी का मार्गदर्शन मेरी सफलता की सबसे बड़ी ताकत रहे हैं।

सुपर-100 ने मेरे बड़े सपनों को एक स्पष्ट दिशा दी। यहाँ मुझे ऐसे शिक्षक और साथी मिले, जिन्होंने हर दिन मुझे बेहतर बनने के लिए प्रेरित किया। मैंने अनगिनत रातें मेहनत करते हुए बिताईं, लेकिन कभी अपने लक्ष्य से ध्यान नहीं हटने दिया। मैं केवल एक परीक्षा की तैयारी नहीं कर रही थी, बल्कि अपने परिवार और अपने गाँव के सपनों को साकार करने की कोशिश कर रही थी। आज आईआईटी रुड़की तक पहुँचकर मुझे विश्वास हो गया है कि समर्पण, सही मार्गदर्शन और निरंतर परिश्रम से कोई भी लक्ष्य असंभव नहीं होता।

आदित्य कसानिया, आईआईटी (बीएचयू), वाराणसी कंप्यूटर साइंस एवं इंजीनियरिंग

मैं एक साधारण कृषक परिवार से हूँ। मेरे माता-पिता ने हमेशा मुझे आगे बढ़ने के लिए प्रेरित किया और मेरे शिक्षकों ने मेरी हर कमज़ोरी को दूर करने में मेरा साथ दिया। पहले मैं थोड़ा आलसी था, लेकिन उन्होंने मुझे निरंतर आगे बढ़ते रहने की सीख दी। विज्ञान विषय में मेरी रुचि ने भी मेरा आत्मविश्वास बढ़ाया।

कक्षा-9 तक मुझे यह भी पता नहीं था कि IIT-JEE क्या होता है और आगे किस क्षेत्र में जाना है। मेरी यात्रा मिशन बुनियाद से शुरू हुई, जिसने मुझे सही दिशा दिखाई। इसके बाद सुपर-100 ने मुझे उत्कृष्ट मार्गदर्शन, अनुशासित वातावरण और ऐसा आत्मविश्वास दिया कि मेरा सपना साकार हो गया। आज मैं आईआईटी (बीएचयू), वाराणसी में कंप्यूटर साइंस एवं इंजीनियरिंग की पढ़ाई करने जा रहा हूँ। मेरा विश्वास है कि सही दिशा, निरंतर मेहनत और अपने शिक्षकों पर भरोसा हमें किसी भी मंज़िल तक पहुँचा सकता है।

कुमारी अंशु, आईआईटी मद्रास

मेरे पिता छोटे दुकानदार हैं। मेरे माता-पिता और शिक्षकों ने हर परिस्थिति में मेरा हौसला बढ़ाया। मेरी तैयारी की शुरुआत आसान नहीं थी। शुरू-शुरू में मेरे टेस्ट में बहुत कम अंक आते थे। उस समय मैंने हार मानने के बजाय अपनी गलतियों को समझने का निर्णय लिया। मैंने यह विश्लेषण करना शुरू किया कि मेरी कमजोरियाँ कहाँ हैं, किन विषयों पर अधिक मेहनत करने की आवश्यकता है और अपने समय का बेहतर उपयोग कैसे करना है।

मैंने नियमित रूप से अपनी पढ़ाई की योजना बनाई, अनुशासन के साथ उसका पालन किया और सबसे महत्त्वपूर्ण बात मैंने कभी स्वयं को किसी से कम नहीं समझा। यही आत्मविश्वास मेरी सबसे बड़ी ताकत बना। आज आईआईटी मद्रास तक पहुँचने की मेरी यात्रा मुझे यह सिखाती है कि यदि हम अपनी कमियों को स्वीकार करके उन पर लगातार काम करें, तो सफलता अवश्य मिलती है।

खुशी, आईआईटी दिल्ली

मैं फतेहाबाद जिले से हूँ। वर्ष 2021 में मेरे पिता का निधन हो गया। उसके बाद मेरी माँ, जो मिड-डे मील वर्कर हैं, ने बहुत कठिन परिस्थितियों में हम दोनों भाई-बहनों का पालन-पोषण किया। हमारी आर्थिक स्थिति बहुत साधारण रही, लेकिन मेरी माँ ने कभी हमारे सपनों को टूटने नहीं दिया।

जब भी मेरा आत्मविश्वास डगमगाया, मेरे बड़े भाई ने मुझे हमेशा आगे बढ़ने के लिए प्रेरित किया। पिछले वर्ष मैं परीक्षा में सफल नहीं हो पाई थी। उस समय मैं बहुत निराश थी और समझ नहीं पा रही थी कि आगे क्या करूँ। लेकिन मेरे भाई ने मेरा हौसला बढ़ाया और मुझे दोबारा पूरी लगन से तैयारी करने के लिए प्रेरित किया। उसी विश्वास, अपनी मेहनत और सुपर-100 के मार्गदर्शन की बदौलत इस वर्ष मैं सफल होकर आईआईटी दिल्ली तक पहुँची हूँ। मेरा मानना है कि कठिन परिस्थितियाँ हमें रोकने के लिए नहीं, बल्कि और अधिक मज़बूत बनाने के लिए आती हैं।

सरकारी विद्यालयों से IIT और AIIMS तक:

सुपर-100 और मिशन बुनियाद की प्रेरक शैक्षिक यात्रा

दीपा रानी

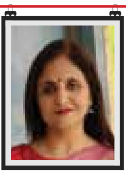

यदि किसी राष्ट्र को सशक्त बनाना है तो उसकी शिक्षा व्यवस्था को सशक्त बनाना होगा, क्योंकि विद्यालयों की कक्षाओं में ही भविष्य के वैज्ञानिक, चिकित्सक, अभियंता, शिक्षक और राष्ट्र निर्माता तैयार होते हैं।

शिक्षा केवल ज्ञान अर्जित करने का माध्यम नहीं, बल्कि समाज के समग्र विकास की आधारशिला है। यह व्यक्ति के भीतर छिपी संभावनाओं को पहचानकर उन्हें सही दिशा देने का कार्य करती है। जब गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, सक्षम शिक्षक, उचित मार्गदर्शन और अवसर एक साथ मिलते हैं, तब साधारण पृष्ठभूमि से आने वाले विद्यार्थी भी असाधारण उपलब्धियाँ प्राप्त करते हैं। हरियाणा सरकार की दो महत्त्वपूर्ण शैक्षिक पहल- सुपर-100 और मिशन बुनियाद- इसी विचार को व्यावहारिक रूप देती हैं।

आज इन दोनों योजनाओं ने हजारों सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों के जीवन में नई आशा, नया आत्मविश्वास और नई दिशा का संचार किया है। इन योजनाओं का उद्देश्य केवल प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी कराना नहीं है, बल्कि ऐसी शैक्षिक संस्कृति का निर्माण करना है, जहाँ प्रतिभा आर्थिक संसाधनों की सीमाओं से मुक्त होकर अपनी पूर्ण क्षमता तक पहुँच सके।

एक समय था, जब इंजीनियरिंग और चिकित्सा जैसी राष्ट्रीय स्तर की प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी को केवल बड़े शहरों और महँगे निजी संस्थानों से जोड़कर देखा जाता था। ग्रामीण क्षेत्रों अथवा सरकारी विद्यालयों में पढ़ने वाले अनेक प्रतिभाशाली विद्यार्थी आर्थिक अभाव, उचित मार्गदर्शन के अभाव और जानकारी की कमी के कारण अपनी वास्तविक क्षमता का प्रदर्शन नहीं कर पाते थे। ऐसे विद्यार्थियों के लिए हरियाणा सरकार ने एक ऐसी व्यवस्था विकसित की, जिसने प्रतिभा की पहचान से लेकर उसकी सफलता तक की सम्पूर्ण यात्रा को व्यवस्थित रूप दिया।

सुपर-100: प्रतिभा को उत्कृष्टता तक पहुँचाने का संकल्प-

इसी उद्देश्य को साकार करने के लिए वर्ष 2018 में हरियाणा विद्यालय शिक्षा विभाग ने विकल्प फाउंडेशन के सहयोग से हरियाणा सुपर-100 कार्यक्रम का शुभारम्भ किया। इस कार्यक्रम का मूल उद्देश्य सरकारी विद्यालयों के मेधावी विद्यार्थियों को IIT-JEE तथा NEET जैसी राष्ट्रीय स्तर की प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए उच्च गुणवत्ता की पूर्णतः निःशुल्क आवासीय कोचिंग उपलब्ध कराना है। यह पहल इस विश्वास पर आधारित है कि प्रतिभा किसी आर्थिक वर्ग की नहीं होती; अवसर मिलने पर सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थी भी देश के सर्वोच्च शिक्षण संस्थानों तक पहुँच सकते हैं।

यह कार्यक्रम केवल कोचिंग तक सीमित नहीं है। इसका उद्देश्य विद्यार्थियों में प्रतिस्पर्धी सोच, आत्मविश्वास, अनुशासन और निरंतर अध्ययन की आदत विकसित करना भी है। प्रतियोगी परीक्षाओं में सफलता केवल विषय ज्ञान से नहीं मिलती, बल्कि समय-प्रबंधन, मानसिक दृढ़ता और नियमित अभ्यास भी उतने ही आवश्यक होते हैं। सुपर-100 इन सभी पहलुओं पर समान रूप से कार्य करता है।

कैसे होता है चयन ?

सुपर-100 कार्यक्रम के लिए विद्यार्थियों का चयन पूरी तरह योग्यता आधारित प्रक्रिया से किया जाता है। सरकारी विद्यालयों की कक्षा 10 के मेधावी विद्यार्थियों में से राज्य स्तर पर चयन किया जाता है। इस प्रक्रिया में विद्यार्थियों के शैक्षणिक प्रदर्शन के साथ-साथ प्रतियोगी लिखित परीक्षा भी सम्मिलित होती है। इसके आधार पर अंतिम चयनसूची तैयार की जाती है और चयनित विद्यार्थियों को कक्षा 11 एवं 12 के लिए आवासीय कार्यक्रम

हरियाणा के लिए गर्व का क्षण-

हरियाणा सुपर-100 ने एक बार फिर शानदार प्रदर्शन करते हुए आईआईटी-जेईई मेन 2026 में नया इतिहास रचा है। वर्ष 2018 से आरंभ हुए सुपर-100 कार्यक्रम में तथा वर्ष 2022 से आरंभ हुए मिशन बुनियाद कार्यक्रम ने हज़ारों विद्यार्थियों के लिए अवसर के नये द्वार खोले हैं।

कक्षा-9 से ही प्रतिभाओं की पहचान, वैज्ञानिक सोच का विकास, नियमित मार्गदर्शन और उसके बाद आईआईटी-जेईई तथा नीट जैसी राष्ट्रीय प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए निःशुल्क आवासीय कोचिंग -यह संपूर्ण शैक्षणिक यात्रा हरियाणा की शिक्षा-व्यवस्था की एक प्रेरक पहचान बन चुकी है।

यह सफलता बताती है कि सीमित संसाधनों वाले परिवारों के बच्चों को सही मार्गदर्शन और अवसर मिले तो वे किसी भी मुकाम तक पहुँच सकते हैं। सभी सफल विद्यार्थियों, अभिभावकों, शिक्षकों और सहयोगी संस्थाओं को हार्दिक बधाई। भविष्य में भी हमारे युवा ऐसे ही नई ऊँचाइयाँ छूते रहें।

-महीपाल ढांडा
शिक्षा मंत्री, हरियाणा सरकार

में प्रवेश दिया जाता है।

योग्यता आधारित चयन व्यवस्था विद्यार्थियों में स्वस्थ प्रतिस्पर्धा की भावना विकसित करती है। इससे उन्हें यह विश्वास मिलता है कि सफलता का आधार केवल उनकी प्रतिभा और परिश्रम है।

श्रेष्ठ सुविधाएँ, श्रेष्ठ परिणाम-

सुपर-100 कार्यक्रम की सफलता का एक बड़ा कारण इसकी सुविचारित शैक्षणिक संरचना है। चयनित विद्यार्थियों को केवल कक्षाएँ ही नहीं मिलतीं, बल्कि ऐसा वातावरण उपलब्ध कराया जाता है जो उन्हें प्रतियोगी परीक्षाओं के अनुरूप तैयार करता है।

इस योजना के अंतर्गत विद्यार्थियों को-

- निःशुल्क आवास एवं भोजन,
- विशेषज्ञ शिक्षकों द्वारा नियमित शिक्षण,
- आईआईटीयन संकाय का मार्गदर्शन,
- रिमेडियल कक्षाएँ,
- डाउट-क्लियरिंग सत्र,
- नियमित मूल्यांकन,
- व्यक्तिगत मेंटरिंग, तथा सुव्यवस्थित दैनिक अध्ययन कार्यक्रम उपलब्ध कराया जाता है।

इन सुविधाओं का उद्देश्य केवल पाठ्यक्रम पूरा कराना नहीं, बल्कि विद्यार्थियों की अवधारणात्मक समझ को मज़बूत बनाना तथा उन्हें कठिन से कठिन प्रश्नों का समाधान खोजने के लिए तैयार करना है।

बरना केंद्र : उत्कृष्टता का केंद्र-

सुपर-100 कार्यक्रम के अंतर्गत प्रत्येक वर्ष लगभग 400 विद्यार्थियों का चयन किया जाता है। वर्तमान में लगभग 700 विद्यार्थी कुरुक्षेत्र स्थित बरना केंद्र में गुणवत्तापूर्ण आवासीय कोचिंग प्राप्त कर रहे हैं।

बरना केंद्र केवल एक कोचिंग संस्थान नहीं, बल्कि ऐसा शैक्षणिक परिसर है जहाँ विद्यार्थियों का सम्पूर्ण व्यक्तित्व विकसित करने का प्रयास किया जाता है। अनुशासित दिनचर्या, नियमित अध्ययन, स्वस्थ प्रतिस्पर्धा और अनुभवी शिक्षकों का सतत मार्गदर्शन विद्यार्थियों को उत्कृष्ट प्रदर्शन के लिए प्रेरित करता है।

यहीं से अनेक ऐसे विद्यार्थियों ने अपनी यात्रा प्रारम्भ की, जिन्होंने आगे चलकर IIT, AIIMS, NIT और देश के अन्य प्रतिष्ठित संस्थानों में प्रवेश प्राप्त कर हरियाणा का गौरव बढ़ाया।

सुपर-100 की सफलता ने यह सिद्ध कर दिया कि यदि सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों को गुणवत्तापूर्ण संसाधन, सक्षम शिक्षक और अनुकूल वातावरण उपलब्ध कराया जाए तो वे किसी भी राष्ट्रीय स्तर की प्रतियोगिता में उत्कृष्ट प्रदर्शन कर सकते हैं।

मिशन बुनियाद प्रतिभा की मज़बूत नींव-

किसी भी विशाल भवन की मज़बूती उसकी नींव पर निर्भर करती है। ठीक उसी प्रकार किसी विद्यार्थी की बड़ी सफलता का आधार उसकी प्रारम्भिक तैयारी, सही मार्गदर्शन और समय पर मिली प्रेरणा होती है। इसी सोच

को साकार रूप देने के उद्देश्य से हरियाणा विद्यालय शिक्षा विभाग ने वर्ष 2022 में मिशन बुनियाद की शुरुआत की। यदि सुपर-100 उत्कृष्ट प्रतिभाओं को राष्ट्रीय स्तर की प्रतियोगी परीक्षाओं तक पहुँचाने का अभियान है, तो मिशन बुनियाद उन प्रतिभाओं की प्रारम्भिक पहचान और उन्हें व्यवस्थित रूप से तैयार करने का सशक्त माध्यम है। दोनों योजनाएँ एक-दूसरे की पूरक हैं और मिलकर सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों के लिए सफलता का सुनियोजित मार्ग तैयार करती हैं।

मिशन बुनियाद का मूल उद्देश्य केवल किसी परीक्षा की तैयारी कराना नहीं है, बल्कि विद्यार्थियों में वैज्ञानिक सोच, तार्किक क्षमता, गणितीय दक्षता, समस्या-समाधान की योग्यता और प्रतियोगी परीक्षाओं के अनुरूप अध्ययन संस्कृति विकसित करना है। यह कार्यक्रम विद्यार्थियों को प्रारम्भिक अवस्था से ही बड़े लक्ष्य निर्धारित करने और उन्हें प्राप्त करने का आत्मविश्वास प्रदान करता है।

कक्षा-9 से प्रारम्भ होती है सफलता की यात्रा-

मिशन बुनियाद की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि यह विद्यार्थियों को समय रहते पहचान लेता है। अक्सर देखा गया है कि अनेक प्रतिभाशाली विद्यार्थी उचित दिशा के अभाव में अपनी वास्तविक क्षमता तक नहीं पहुँच पाते। यह योजना उसी कमी को दूर करती है।

कार्यक्रम के अंतर्गत कक्षा 9 एवं 10 के विद्यार्थियों की प्रतिभा को पहचानकर उन्हें व्यवस्थित रूप से प्रशिक्षित किया जाता है, ताकि आगे चलकर वे सुपर-100 जैसी उच्च स्तरीय योजना में सफलतापूर्वक प्रवेश प्राप्त कर सकें। इस प्रकार मिशन बुनियाद केवल एक शैक्षणिक कार्यक्रम नहीं, बल्कि भविष्य की सफलताओं का आधार तैयार करने वाला अभियान है।

इस पहल का सबसे बड़ा लाभ यह है कि विद्यार्थियों को प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए अचानक तैयारी नहीं करनी पड़ती, बल्कि प्रारम्भिक स्तर से ही उनकी अवधारणाएँ मज़बूत बनाई जाती हैं। परिणामस्वरूप उनमें आत्मविश्वास, तार्किक सोच और कठिन विषयों को समझने की क्षमता स्वाभाविक रूप से विकसित होती जाती है।

तीन चरणों वाली चयन प्रक्रिया-

मिशन बुनियाद में प्रवेश के लिए विद्यार्थियों का चयन एक सुव्यवस्थित प्रक्रिया के माध्यम से किया जाता है। योजना के अंतर्गत लेवल-1, लेवल-2 और लेवल-3 की चयन प्रक्रिया निर्धारित की गई है। इन चरणों के माध्यम से विद्यार्थियों की शैक्षणिक क्षमता, तार्किक समझ और प्रतियोगी योग्यता का मूल्यांकन किया जाता है। इसके आधार पर योग्य विद्यार्थियों का चयन कर उन्हें विशेष मार्गदर्शन उपलब्ध कराया जाता है।

यह चयन प्रणाली विद्यार्थियों में स्वस्थ प्रतिस्पर्धा की भावना विकसित करती है और उन्हें निरंतर उत्कृष्ट प्रदर्शन के लिए प्रेरित करती है।

ऑनलाइन बुनियाद केंद्रः शिक्षा का व्यापक विस्तार-

हरियाणा सरकार की इस पहल की सबसे उल्लेखनीय विशेषताओं में से एक है इसका व्यापक विस्तार। प्रदेश के प्रत्येक शैक्षिक खंड तक गुणवत्तापूर्ण कोचिंग पहुँचाने के उद्देश्य से 103 ऑनलाइन बुनियाद

केंद्र स्थापित किए गए हैं। इन केंद्रों के माध्यम से वर्तमान में लगभग 4,700 विद्यार्थी से अध्ययन कर रहे हैं। अब बुनियाद केंद्रों में 25 नये केंद्र जुड़ रहे हैं।

यह व्यवस्था शिक्षा के लोकतंत्रीकरण का उत्कृष्ट उदाहरण है। अब गुणवत्तापूर्ण प्रतियोगी मार्गदर्शन केवल महानगरों या निजी संस्थानों तक सीमित नहीं रह गया है। दूर-दराज़ के गाँवों में रहने वाले विद्यार्थी भी आधुनिक तकनीक के माध्यम से समान गुणवत्ता का मार्गदर्शन प्राप्त कर रहे हैं।

इन ऑनलाइन केंद्रों ने यह सिद्ध कर दिया है कि यदि तकनीक का सकारात्मक उपयोग किया जाए, तो गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रत्येक विद्यार्थी तक पहुँचाई जा सकती है।

सिर्फ पढ़ाई नहीं, व्यक्तित्व विकास भी-

मिशन बुनियाद का उद्देश्य केवल पाठ्यक्रम पूरा कराना नहीं है। इसके माध्यम से विद्यार्थियों में अनुशासन, समय-प्रबंधन, विश्लेषणात्मक सोच, नियमित अभ्यास और आत्मविश्वास जैसी जीवनोपयोगी क्षमताओं का भी विकास किया जाता है।

विद्यार्थियों को नियमित अभ्यास, सतत मूल्यांकन, डाउट-क्लियरिंग सत्र, अवधारणात्मक शिक्षण तथा व्यक्तिगत प्रगति की निरंतर निगरानी के माध्यम से आगे बढ़ाया जाता है। इससे उनकी विषयगत समझ मजबूत होती है और प्रतियोगी परीक्षाओं के प्रति उनका आत्मविश्वास निरंतर बढ़ता है।

शिक्षकों की भूमिका केवल विषय पढ़ाने तक सीमित नहीं रहती, बल्कि वे विद्यार्थियों के मार्गदर्शक, प्रेरक और मेंटर के रूप में भी कार्य करते हैं। यही कारण है कि अनेक विद्यार्थी इस कार्यक्रम को अपने जीवन का निर्णायक मोड़ मानते हैं।

सुपर-100 और मिशन बुनियाद : एक-दूसरे के पूरक

इन दोनों योजनाओं की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि ये अलग-अलग कार्यक्रम नहीं, बल्कि एक सतत शैक्षणिक श्रृंखला का निर्माण करते हैं। मिशन बुनियाद विद्यार्थियों की प्रारम्भिक प्रतिभा को पहचानकर उसे विकसित करता है, जबकि सुपर-100 उसी प्रतिभा को राष्ट्रीय स्तर की प्रतियोगी परीक्षाओं तक पहुँचाने का कार्य करता है। इस प्रकार कक्षा 9 से लेकर IIT, AIIMS और अन्य प्रतिष्ठित संस्थानों तक पहुँचने का एक सुव्यवस्थित शैक्षिक मार्ग तैयार हो जाता है।

यह मॉडल इस दृष्टि से भी महत्त्वपूर्ण है कि इसमें प्रतिभा को केवल पहचाना ही नहीं जाता, बल्कि उसे निरंतर सँवारने, मार्गदर्शन देने और लक्ष्य तक पहुँचाने की सम्पूर्ण व्यवस्था उपलब्ध कराई जाती है।

आज अनेक विद्यार्थी इस एकीकृत मॉडल का लाभ लेकर देश के प्रतिष्ठित तकनीकी और चिकित्सा संस्थानों में अध्ययन कर रहे हैं। इससे यह स्पष्ट होता है कि यदि शिक्षा व्यवस्था दीर्घकालिक योजना के साथ कार्य करे, तो सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थी भी राष्ट्रीय स्तर पर उत्कृष्ट उपलब्धियाँ प्राप्त कर सकते हैं।

मिशन बुनियाद और सुपर-100 ने हरियाणा की शिक्षा व्यवस्था को एक नई दिशा दी है। इन योजनाओं ने यह स्थापित किया है कि गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, आधुनिक तकनीक, समर्पित शिक्षक और सुविचारित योजना के समन्वय से प्रतिभाओं को नई ऊँचाइयों तक पहुँचाया जा सकता है। यही कारण है कि आज ये दोनों कार्यक्रम सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों के लिए आशा, अवसर और उत्कृष्टता के पर्याय बन चुके हैं।

उपलब्धियाँ, प्रेरक सफलता की कहानियाँ और भविष्य की दिशा-

शिक्षा का वास्तविक उद्देश्य केवल परीक्षाएँ उत्तीर्ण कराना नहीं, बल्कि ऐसी पीढ़ी तैयार करना है जो अपने ज्ञान, कौशल और मूल्यों के बल पर समाज और राष्ट्र के विकास में सार्थक योगदान दे सके।

हरियाणा में सुपर-100 और मिशन बुनियाद की सफलता केवल योजनाओं के संचालन तक सीमित नहीं है, बल्कि उनके परिणामों में स्पष्ट दिखाई देती है। इन पहलों ने यह सिद्ध कर दिया है कि यदि सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों को समय पर सही मार्गदर्शन, गुणवत्तापूर्ण शिक्षण, आधुनिक संसाधन और प्रेरक वातावरण उपलब्ध कराया जाए, तो वे भी देश की सबसे कठिन प्रतियोगी परीक्षाओं में उल्लेखनीय सफलता प्राप्त कर सकते हैं।

इन योजनाओं की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इन्होंने सरकारी विद्यालयों में पढ़ने वाले विद्यार्थियों के मन से हीन-भावना को दूर किया है। आज वे स्वयं को किसी निजी विद्यालय या महँगे कोचिंग संस्थानों के विद्यार्थियों से कम नहीं मानते। उनमें यह विश्वास जागा है कि प्रतिभा अवसर की प्रतीक्षा करती है और जब अवसर मिलता है तो सफलता स्वयं उनके कदम चूमती है।

उपलब्धियों ने बदली सरकारी विद्यालयों की तस्वीर-

किसी भी योजना की सफलता का सबसे प्रामाणिक प्रमाण उसके परिणाम होते हैं। सुपर-100 कार्यक्रम ने पिछले कुछ वर्षों में ऐसे परिणाम दिए हैं, जिन्होंने पूरे देश का ध्यान आकर्षित किया है।

वर्ष 2020 से 2026 के बीच इस कार्यक्रम के विद्यार्थियों ने राष्ट्रीय स्तर की प्रतियोगी परीक्षाओं में उल्लेखनीय सफलता अर्जित की है। इस अवधि में इस योजना के माध्यम से 302 विद्यार्थियों ने आईआईटी, एनआईटी, एम्स तथा सरकारी मेडिकल कॉलेजों सहित देशक के प्रतिष्ठित संस्थानों में प्रवेश प्राप्त कर हरियाणा का गौरव बढ़ाया है। इन विद्यार्थियों ने यह सिद्ध कर दिया कि प्रतिभा किसी विद्यालय, शहर अथवा आर्थिक स्थिति की मोहताज नहीं होती।

ये आँकड़े केवल संख्याएँ नहीं हैं, बल्कि उन हज़ारों सपनों का साकार रूप हैं जो कभी संसाधनों के अभाव में अधूरे रह जाने की आशंका से घिरे रहते थे।

जब सपनों को मिली नई दिशा-

सुपर-100 और मिशन बुनियाद की सबसे बड़ी उपलब्धि यह है कि इन्होंने विद्यार्थियों के भीतर बड़े सपने देखने का साहस जगाया है। आज ऐसे अनेक विद्यार्थी हैं जो किसान परिवारों, छोटे दुकानदारों, श्रमिक परिवारों और साधारण आर्थिक पृष्ठभूमि से आते हैं। पहले वे यह भी नहीं जानते थे कि आईआईटी, एम्स अथवा राष्ट्रीय स्तर की प्रतियोगी परीक्षाओं तक कैसे पहुँचा जाए।

लेकिन मिशन बुनियाद ने उन्हें प्रारम्भिक दिशा दी और सुपर-100 ने उस दिशा को सफलता की मंज़िल तक पहुँचाने का कार्य किया।

इन योजनाओं के माध्यम से विद्यार्थियों ने केवल विषयों का अध्ययन नहीं किया, बल्कि समय-प्रबंधन, आत्म अनुशासन, लक्ष्य निर्धारण, निरंतर अभ्यास और कठिन परिस्थितियों में भी धैर्य बनाए रखने जैसी जीवनोपयोगी क्षमताएँ भी विकसित कीं। यही गुण आगे चलकर उन्हें प्रतिस्पर्धी जीवन में भी सफलता दिलाते हैं।

शिक्षक : सफलता के वास्तविक शिल्पकार-

किसी भी शैक्षिक पहल की सफलता उसके शिक्षकों की प्रतिबद्धता पर निर्भर करती है। सुपर-100 और मिशन बुनियाद में कार्यरत शिक्षक केवल अध्यापक नहीं, बल्कि मार्गदर्शक, प्रेरक और मेंटर की भूमिका निभाते हैं।

वे विद्यार्थियों की शैक्षणिक कठिनाइयों को समझते हैं, उनकी व्यक्तिगत आवश्यकताओं के अनुसार मार्गदर्शन देते हैं, नियमित मूल्यांकन करते हैं और आवश्यकता पड़ने पर अतिरिक्त कक्षाओं एवं डाउट-क्लियरिंग सत्रों के माध्यम से उनकी सहायता करते हैं। यही सतत सहयोग विद्यार्थियों में आत्मविश्वास उत्पन्न करता है और उन्हें निरंतर बेहतर प्रदर्शन के लिए प्रेरित करता है।

अभिभावकों का विश्वास भी बना सफलता की शक्ति-

इन योजनाओं ने अभिभावकों का सरकारी विद्यालयों के प्रति विश्वास भी मजबूत किया है। पहले अनेक परिवार अपने बच्चों को प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी के लिए महँगे निजी संस्थानों में भेजने में असमर्थ रहते थे। आज वही अभिभावक यह अनुभव कर रहे हैं कि सरकारी विद्यालयों के माध्यम से भी उनके बच्चे देश के सर्वोच्च संस्थानों तक पहुँच सकते हैं। यह विश्वास केवल योजनाओं की सफलता नहीं, बल्कि सार्वजनिक शिक्षा व्यवस्था की बढ़ती गुणवत्ता का भी प्रमाण है।

एक आदर्श शैक्षिक मॉडल-

सुपर-100 और मिशन बुनियाद का सबसे महत्त्वपूर्ण पक्ष यह है कि दोनों योजनाएँ मिलकर प्रतिभा विकास का एक सतत एवं एकीकृत मॉडल प्रस्तुत करती हैं।

» कक्षा 9 में प्रतिभा की पहचान,
» कक्षा 9 और 10 में बुनियादी शैक्षणिक सुदृढ़ीकरण,
» कक्षा 11 और 12 में आवासीय प्रतियोगी प्रशिक्षण,
» विशेषज्ञ शिक्षकों का मार्गदर्शन,
» आधुनिक शिक्षण संसाधन,
» नियमित मूल्यांकन,
» व्यक्तिगत मेंटरिंग,

इन सभी चरणों को सुव्यवस्थित रूप से जोड़कर विद्यार्थियों के लिए सफलता का एक स्पष्ट मार्ग तैयार किया गया है। यही इस मॉडल की सबसे बड़ी विशेषता है।

विकसित भारत के निर्माण में महत्त्वपूर्ण योगदान-

आज भारत ज्ञान-आधारित अर्थव्यवस्था की ओर तेज़ी से अग्रसर है। विज्ञान, प्रौद्योगिकी, चिकित्सा और नवाचार के क्षेत्र में देश को बड़ी संख्या में सक्षम युवाओं की आवश्यकता है। ऐसे समय में सुपर-100 और मिशन बुनियाद जैसी पहलें केवल प्रतियोगी परीक्षाओं तक सीमित नहीं हैं, बल्कि विकसित भारत के लिए योग्य मानव संसाधन तैयार करने की दिशा में भी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं।

जब ग्रामीण क्षेत्र का कोई विद्यार्थी आईआईटी पहुँचता है, जब किसी किसान की बेटी एम्स में प्रवेश प्राप्त करती है, या जब सरकारी विद्यालय का छात्र राष्ट्रीय स्तर पर अपनी पहचान बनाता है, तब वह केवल व्यक्तिगत सफलता प्राप्त नही ंकरता, बल्कि समाज के हज़ारों अन्य विद्यार्थियों को भी प्रेरित करता है।

निष्कर्ष-

सुपर-100 और मिशन बुनियाद हरियाणा की शिक्षा व्यवस्था में दूरदर्शी सोच, सुविचारित योजना और गुणवत्तापूर्ण क्रियान्वयन के उत्कृष्ट उदाहरण हैं। इन पहलों ने यह सिद्ध कर दिया है कि यदि प्रतिभा को समय पर पहचाना जाए, उसे उचित मार्गदर्शन, आधुनिक संसाधन और प्रेरक वातावरण उपलब्ध कराया जाए, तो सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थी भी राष्ट्रीय स्तर पर उत्कृष्ट प्रदर्शन कर सकते हैं।

वर्ष 2018 में प्रारम्भ हुआ सुपर-100 और वर्ष 2022 में शुरू हुआ मिशन बुनियाद आज केवल दो योजनाएँ नहीं, बल्कि हज़ारों विद्यार्थियों के सपनों को साकार करने वाला सशक्त शैक्षिक आंदोलन बन चुके हैं। इनके माध्यम से सैकड़ों विद्यार्थियों ने IIT, AIIMS, NIT, IIIT तथा अन्य प्रतिष्ठित संस्थानों में प्रवेश प्राप्त कर यह प्रमाणित किया है कि सफलता प्रतिभा और परिश्रम की होती है, परिस्थितियों की नहीं।

निस्संदेह, इन योजनाओं ने हरियाणा के सरकारी विद्यालयों में पढ़ने वाले विद्यार्थियों के भीतर यह विश्वास स्थापित किया है कि यदि लक्ष्य स्पष्ट हो, मार्गदर्शन सही हो और प्रयास निरंतर हों, तो कोई भी सपना असंभव नहीं होता। यही विश्वास आने वाले वर्षों में प्रदेश के शिक्षा जगत् को नई ऊँचाइयों तक ले जाएगा और विकसित हरियाणा से विकसित भारत के संकल्प को और अधिक सशक्त बनाएगा।

पीजीटी फाइन आर्ट्स
राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय
सैक्टर-19,पंचकूला

'स्प्रिंट' प्रशिक्षण ने खिलाड़ियों में भरी नई ऊर्जा

पाँच दिवसीय प्रशिक्षण शिविर में खिलाड़ियों को बॉक्सिंग खेल तकनीक का मिला प्रशिक्षण

सुभाष शर्मा

हरियाणा के सरकारी विद्यालयों में खेल प्रतिभाओं को तराशने और उन्हें उच्च स्तर की प्रतियोगिताओं के लिए तैयार करने की दिशा में समग्र शिक्षा, हरियाणा द्वारा आयोजित पाँच दिवसीय स्प्रिंट (SPRINT- Sports Preparedness Resilience through Intensive Nurturing Training) प्रशिक्षण शिविर खिलाड़ियों के लिए सीख, अनुशासन, आत्मविश्वास और नई ऊर्जा से भरपूर रहा। समग्र शिक्षा, हरियाणा स्कूल शिक्षा परियोजना द्वारा प्रथम स्प्रिंट बॉक्सिंग प्रशिक्षण शिविर स्पोर्ट्स अथॉरिटी ऑफ इंडिया (SAI) के सहयोग से पंचकूला के सैक्टर-3 स्थित ताऊ देवी लाल स्पोर्ट्स कॉम्प्लेक्स में आयोजित किया गया। इस शिविर का शुभारंभ मुख्यमंत्री महोदय के ओएसडी श्री बी.बी.भारती ने किया।

इस प्रशिक्षण शिविर में प्रदेश के सभी सरकारी विद्यालयों के 85 विद्यार्थियों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। इस अवसर पर मुख्यमंत्री के ओएसडी श्री बी.बी.भारती ने कहा कि केंद्र सरकार की इस परियोजना को हरियाणा शिक्षा विभाग द्वारा प्रभावी रूप से लागू किया गया है, जिसके लिए हरियाणा का शिक्षा विभाग बधाई का पात्र है। उन्होंने कहा कि विकसित भारत-2047 के विज़न को पूरा करने में यह परियोजना काफी सार्थक साबित होगी। उन्होंने कहा कि स्प्रिंट आने वाले समय में मील का पत्थर साबित होगी।

इस अवसर पर प्रधान सचिव विजय सिंह दहिया ने कहा कि हरियाणा देश का पहला राज्य है, जहाँ स्प्रिंट प्रशिक्षण शिविर का शुभारंभ किया गया है। स्प्रिंट योजना का प्रारूप हरियाणा शिक्षा विभाग द्वारा भारत-सरकार के समक्ष प्रस्तुत किया गया था। भारत-सरकार ने इस अभिनव पहल को सराहा और हरियाणा-सरकार को इसकी स्वीकृति प्रदान की। योजना के प्रभावी क्रियान्वयन के लिए केंद्र सरकार द्वारा हरियाणा सरकार को लगभग पौने चार करोड़ रुपये की राशि प्रदान की गई है।

उन्होंने बताया कि स्प्रिंट प्रशिक्षण शिविर के अंतर्गत प्रदेश के सरकारी विद्यालयों में अध्ययनरत लगभग 2,300 विद्यार्थियों को विभिन्न खेल विधाओं में आवासीय प्रशिक्षण प्रदान किया जाएगा। इन शिविरों में विद्यार्थियों को खेलों की बारीकियों, तकनीकी दक्षताओं और अनुशासन के साथ-साथ अभ्यास का अवसर मिलेगा। ऐसे प्रशिक्षण शिविर सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों में छिपी खेल प्रतिभाओं को पहचानने और उन्हें निखारने का सशक्त माध्यम हैं। इससे विद्यार्थियों को अपनी प्रतिभा को उच्च स्तर पर प्रदर्शित करने के लिए बेहतर मंच और अवसर प्राप्त होंगे।

इस अवसर पर राज्य परियोजना अधिकारी स्वप्निल रवींद्र पाटिल ने अपने विचार साझा करते हुए कहा कि हरियाणा की खेल प्रतिभाओं ने राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अपनी विशिष्ट पहचान बनाई है। स्प्रिंट प्रशिक्षण शिविर जैसी पहल से प्रदेश के खिलाड़ियों को वैज्ञानिक एवं व्यवस्थित प्रशिक्षण के साथ राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर का एक्सपोज़र मिल सकेगा। इससे वे भविष्य में राष्ट्रीय तथा अंतरराष्ट्रीय प्रतियोगिताओं में और भी बेहतर प्रदर्शन कर सकेंगे तथा प्रदेश और देश का गौरव बढ़ाएँगे।

उन्होंने कहा कि शिक्षा के साथ खेलों का समन्वय विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास के लिए अत्यंत आवश्यक है। खेल विद्यार्थियों में अनुशासन, आत्मविश्वास, नेतृत्व क्षमता, टीम भावना और निरंतर प्रयास करने की प्रवृत्ति विकसित करते हैं। इसलिए विद्यालय स्तर पर खेल प्रतिभाओं को उचित प्रशिक्षण, मार्गदर्शन और अवसर उपलब्ध कराना सरकार की प्राथमिकताओं में शामिल है। स्प्रिंट प्रशिक्षण शिविर इसी दिशा में एक महत्त्वपूर्ण कदम है, जो सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों को अपनी खेल प्रतिभा को पहचानने, निखारने और उसे राष्ट्रीय एवं

अंतरराष्ट्रीय मंच तक पहुँचाने का अवसर प्रदान करेगा।

संयुक्त राज्य परियोजना अधिकारी डॉ. मयंक वर्मा ने कहा कि इस प्रकार के प्रशिक्षण शिविर विद्यार्थियों को आधुनिक खेल तकनीकों से परिचित कराने के साथ-साथ उनकी मानसिक मज़बूती और रणनीतिक सोच विकसित करने का महत्त्वपूर्ण अवसर प्रदान करते हैं। किसी भी खिलाड़ी की सफलता के लिए शारीरिक दक्षता के साथ मानसिक दृढ़ता, अनुशासन, एकाग्रता और परिस्थितियों के अनुसार सही रणनीति बनाने की क्षमता अत्यंत महत्त्वपूर्ण होती है। प्रशिक्षण शिविरों के माध्यम से विद्यार्थियों को इन सभी पक्षों पर व्यवस्थित रूप से कार्य करने का अवसर मिलता है।

उन्होंने कहा कि शिविर का उद्देश्य केवल खिलाड़ियों की खेल क्षमता को निखारना ही नहीं, बल्कि उन्हें शारीरिक रूप से मज़बूत, मानसिक रूप से दृढ़ और विभिन्न प्रतियोगिताओं की चुनौतियों के लिए पूरी तरह तैयार करना भी है। प्रशिक्षण के दौरान विद्यार्थियों को नियमित अभ्यास, खेल तकनीकों की समझ और अनुशासित दिनचर्या के साथ अपनी क्षमताओं को बेहतर बनाने के अवसर प्राप्त होते हैं। इससे उनमें आत्मविश्वास और प्रतिस्पर्धात्मक भावना का भी विकास होता है।

डॉ. मयंक वर्मा ने कहा कि खेल प्रतिभाओं को सही समय पर उचित प्रशिक्षण और मार्गदर्शन मिलना उनके भविष्य के लिए अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। ऐसे शिविर विद्यार्थियों को अपनी कमियों को पहचानने, उन पर कार्य करने और अपनी खेल क्षमता को निरंतर बेहतर बनाने के लिए प्रेरित करते हैं। साथ ही, उन्हें प्रतियोगिताओं के दबाव और चुनौतियों का सकारात्मक ढंग से सामना करने के लिए मानसिक रूप से तैयार किया जाता है। इस प्रकार के प्रयासों से विद्यार्थियों में खेल के प्रति रुचि और समर्पण बढ़ता है तथा वे भविष्य में उच्च स्तरीय प्रतियोगिताओं में बेहतर प्रदर्शन के लिए तैयार हो पाते हैं।

खेल प्रतिभाओं को मिला विशेष प्रशिक्षण-

पाँच दिनों के दौरान खिलाड़ियों को बॉक्सिंग की मूलभूत तकनीकों से लेकर उन्नत प्रशिक्षण तक विभिन्न पहलुओं की जानकारी दी गई। प्रशिक्षण सत्रों में खिलाड़ियों ने पंचिंग तकनीक, फुटवर्क, डिफेंस, अटैक, काउंटर अटैक, रिंग मूवमेंट तथा मुकाबले के दौरान प्रभावी रणनीति बनाने का अभ्यास किया। प्रशिक्षकों ने खिलाड़ियों की तकनीकी दक्षता को बेहतर बनाने के साथ-साथ उनकी शारीरिक क्षमता, गति, संतुलन और समन्वय पर भी विशेष ध्यान दिया। अभ्यास के दौरान खिलाड़ियों को अपनी तकनीकों का निरंतर मूल्यांकन

करने और आवश्यकतानुसार उनमें सुधार करने के लिए प्रेरित किया गया।

प्रशिक्षकों ने खिलाड़ियों को बताया कि बॉक्सिंग केवल शारीरिक ताकत का खेल नहीं है, बल्कि इसमें धैर्य, एकाग्रता, समय की समझ, आत्मविश्वास और सही निर्णय लेने की क्षमता भी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती है। रिंग में प्रतिद्वंद्वी की गतिविधियों को समझते हुए उचित समय पर सही तकनीक का प्रयोग करना एक कुशल खिलाड़ी की महत्त्वपूर्ण विशेषता है। इसी प्रकार, परिस्थितियों के अनुसार अपनी रणनीति में बदलाव करना और पूरे मुकाबले के दौरान एकाग्रता बनाए रखना भी आवश्यक है।

प्रशिक्षकों ने नियमित अभ्यास और अनुशासन को खिलाड़ी की सफलता की कुंजी बताया। उन्होंने कहा कि खेल में बेहतर प्रदर्शन के लिए निरंतर मेहनत, समय-बद्ध अभ्यास और प्रशिक्षण के प्रति समर्पण आवश्यक है। खिलाड़ियों को अपनी शारीरिक फिटनेस के साथ-साथ मानसिक दृढ़ता पर भी ध्यान देने के लिए प्रेरित किया गया। पाँच दिवसीय प्रशिक्षण के माध्यम से खिलाड़ियों को तकनीकी ज्ञान और व्यावहारिक अभ्यास के साथ प्रतियोगिताओं के लिए आवश्यक आत्मविश्वास विकसित करने का अवसर मिला।

शारीरिक क्षमता के साथ मानसिक मजबूती पर जोर-

स्प्रिंट प्रशिक्षण शिविर की विशेषता यह रही कि खिलाड़ियों के शारीरिक प्रशिक्षण के साथ-साथ उनकी मानसिक मज़बूती पर भी विशेष ध्यान दिया गया। प्रशिक्षण के दौरान खिलाड़ियों को कठिन परिस्थितियों में धैर्य बनाए रखने, चुनौतियों का सकारात्मक ढंग से सामना करने, हार से सीख लेने और अगली चुनौती के लिए स्वयं को बेहतर तरीके से तैयार करने के लिए प्रेरित किया गया। खिलाड़ियों को यह समझाया गया कि किसी भी खेल में सफलता के लिए शारीरिक क्षमता के साथ मानसिक दृढ़ता, आत्मविश्वास और निरंतर प्रयास भी आवश्यक हैं।

खिलाड़ियों को संदेश दिया गया कि खेल में जीत और हार, दोनों ही सीखने और आगे बढ़ने के अवसर हैं। जीत जहाँ आत्मविश्वास बढ़ाती है, वहीं हार खिलाड़ी को अपनी कमियों को पहचानने और उनमें सुधार करने की प्रेरणा देती है। एक अच्छे खिलाड़ी की पहचान केवल पदक जीतने से नहीं, बल्कि कठिन परिस्थितियों में धैर्य बनाए रखने, संघर्ष करने और निरंतर बेहतर प्रदर्शन करने की क्षमता से होती है।

प्रशिक्षकों ने खिलाड़ियों को अनुशासन, नियमित अभ्यास और सकारात्मक सोच को अपनी दिनचर्या का हिस्सा बनाने के लिए प्रेरित किया। उन्हें बताया गया कि खेल के मैदान में आने वाली प्रत्येक चुनौती खिलाड़ी के अनुभव और आत्मविश्वास को मजबूत करती है। निरंतर अभ्यास, आत्म मूल्यांकन और सीखने की प्रवृत्ति के माध्यम से खिलाड़ी अपनी क्षमता को और बेहतर बना सकते हैं। इस प्रकार, स्प्रिंट प्रशिक्षण शिविर ने खिलाड़ियों के शारीरिक कौशल के साथ-साथ उनके मानसिक और व्यक्तित्व विकास को भी सुदृढ़ करने का महत्त्वपूर्ण अवसर प्रदान किया।

साहसिक गतिविधियों ने बढ़ाया आत्मविश्वास-

प्रशिक्षण शिविर के दौरान बॉक्सिंग खिलाड़ियों को खेल प्रशिक्षण के साथ-साथ विभिन्न साहसिक गतिविधियों का अनुभव भी कराया गया। इन गतिविधियों का उद्देश्य खिलाड़ियों में साहस, टीम भावना, नेतृत्व क्षमता, आत्मविश्वास और चुनौतियों का सामना करने की क्षमता विकसित करना रहा। साहसिक गतिविधियों में भाग लेते हुए खिलाड़ियों ने अपने डर पर नियंत्रण रखना, आत्मविश्वास के साथ आगे बढ़ना और एक-दूसरे का सहयोग करना सीखा। इन गतिविधियों से खिलाड़ियों में आपसी समन्वय और सहयोग की भावना भी मजबूत हुई। इससे खिलाड़ियों के प्रशिक्षण का दायरा केवल रिंग तक सीमित न रहकर जीवन की विभिन्न चुनौतियों का सामना करने तक विस्तारित हुआ।

आहार और फिटनेस की भी दी जानकारी-

खिलाड़ियों को बेहतर प्रदर्शन के लिए संतुलित एवं पौष्टिक आहार के महत्त्व के बारे में भी जानकारी दी गई। उन्हें बताया गया कि नियमित प्रशिक्षण के साथ उचित खान-पान, पर्याप्त आराम और अनुशासित दिनचर्या खिलाड़ी के प्रदर्शन को बेहतर बनाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। खिलाड़ियों को अपनी फिटनेस बनाए रखने, शरीर को पर्याप्त आराम देने और प्रशिक्षण के दौरान सही तकनीक अपनाने के लिए भी जागरूक किया गया। साथ ही, उन्हें अपनी दिनचर्या में नियमित अभ्यास और स्वास्थ्य संबंधी अच्छी आदतों को शामिल करने के लिए प्रेरित किया गया।

विशेषज्ञ प्रशिक्षकों के मार्गदर्शन में हुआ अभ्यास-

शिविर में खिलाड़ियों को अनुभवी प्रशिक्षकों एवं विशेषज्ञों के मार्गदर्शन में अभ्यास कराया गया। प्रत्येक खिलाड़ी की क्षमता और आवश्यकता के अनुसार उसकी तकनीक में सुधार करने पर विशेष ध्यान दिया गया। अभ्यास सत्रों के दौरान खिलाड़ियों की कमियों को पहचान कर उन्हें दूर करने के लिए व्यक्तिगत सुझाव भी दिए गए। प्रशिक्षकों ने खिलाड़ियों की तकनीकी दक्षता, अभ्यास की निरंतरता और खेल के प्रति अनुशासन पर विशेष जोर दिया।

प्रशिक्षकों ने खिलाड़ियों को राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर की प्रतियोगिताओं के लिए आवश्यक अनुशासन, खेल भावना और निरंतर अभ्यास के महत्त्व से अवगत कराया। उन्होंने खिलाड़ियों को नियमित मेहनत, सकारात्मक सोच और आत्मविश्वास के साथ आगे बढ़ने के लिए प्रेरित किया। इस दौरान खिलाड़ियों को बताया गया कि बेहतर प्रदर्शन के लिए निरंतर अभ्यास के साथ-साथ खेल भावना और अनुशासन को बनाए रखना भी उतना ही आवश्यक है।

स्प्रिंट बना प्रतिभाओं को अवसर देने का मंच-

स्प्रिंट प्रशिक्षण कार्यक्रम सरकारी विद्यालयों में छिपी खेल प्रतिभाओं को पहचानने और उन्हें उचित प्रशिक्षण एवं अवसर प्रदान करने की दिशा में एक महत्त्वपूर्ण पहल के रूप में सामने आया है। ऐसे कार्यक्रम उन खिलाड़ियों के लिए विशेष रूप से महत्त्वपूर्ण हैं, जिनमें प्रतिभा तो है, लेकिन उन्हें उच्च स्तर का प्रशिक्षण प्राप्त करने के पर्याप्त अवसर नहीं मिल पाते। विद्यालय स्तर पर प्रतिभाशाली खिलाड़ियों की पहचान कर उन्हें विशेषज्ञ

मार्गदर्शन और नियमित अभ्यास का अवसर उपलब्ध कराने से उनकी खेल क्षमता को बेहतर ढंग से विकसित किया जा सकता है।

स्प्रिंट प्रशिक्षण के माध्यम से खिलाड़ियों को अपनी प्रतिभा को पहचानने, उसे निखारने और बड़े मंच पर प्रदर्शन करने का आत्मविश्वास मिला। प्रशिक्षण के दौरान खिलाड़ियों को खेल की तकनीकी बारीकियों को समझने तथा अपने प्रदर्शन में निरंतर सुधार करने का अवसर प्राप्त हुआ। इससे उनमें अनुशासन, आत्मविश्वास, मेहनत और लक्ष्य के प्रति समर्पण की भावना को भी बढ़ावा मिला।

यह कार्यक्रम विद्यार्थियों को यह विश्वास दिलाने में सहायक रहा कि सरकारी विद्यालयों में अध्ययनरत प्रतिभाशाली खिलाड़ी भी उचित प्रशिक्षण, मार्गदर्शन और अवसर मिलने पर उच्च स्तर की प्रतियोगिताओं में अपनी पहचान बना सकते हैं। ऐसे प्रयास खेल प्रतिभाओं को शुरुआती स्तर पर प्रोत्साहित करने के साथ-साथ उन्हें भविष्य की चुनौतियों के लिए तैयार करने में भी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। स्प्रिंट प्रशिक्षण कार्यक्रम के माध्यम से खिलाड़ियों को अपनी क्षमता को पहचानने और उसे निरंतर बेहतर बनाने की प्रेरणा मिली, जिससे वे आने वाले समय में बड़े मंच पर बेहतर प्रदर्शन के लिए अधिक आत्मविश्वास के साथ आगे बढ़ सकेंगे।

खिलाड़ियों में दिखा उत्साह-

पाँच दिवसीय प्रशिक्षण के दौरान खिलाड़ियों में विशेष उत्साह देखने को मिला। सुबह से शुरू होने वाले प्रशिक्षण सत्रों से लेकर तकनीकी अभ्यास और साहसिक गतिविधियों तक खिलाड़ियों ने पूरे जोश, अनुशासन और उत्साह के साथ भाग लिया। प्रशिक्षण की विभिन्न गतिविधियों में खिलाड़ियों ने सक्रिय सहभागिता दिखाई और प्रत्येक सत्र में नई तकनीकों को सीखने तथा अपनी क्षमताओं को बेहतर बनाने का प्रयास किया। शिविर का वातावरण सीखने, अभ्यास करने और एक-दूसरे से प्रेरणा लेने की भावना से परिपूर्ण रहा।

शिविर में भाग लेने वाले खिलाड़ियों का मानना रहा कि इस प्रशिक्षण से उन्हें बॉक्सिंग की तकनीक सीखने के साथ-साथ यह समझने का अवसर मिला कि एक सफल खिलाड़ी बनने के लिए मेहनत, अनुशासन, आत्मविश्वास और निरंतर अभ्यास कितना आवश्यक है। खिलाड़ियों ने बताया कि प्रशिक्षण के दौरान उन्हें खेल की तकनीकी बारीकियों को समझने और उन्हें अभ्यास के माध्यम से आत्मसात् करने का अवसर मिला। इसके साथ ही, उन्हें अपनी शारीरिक क्षमता और मानसिक दृढ़ता को बेहतर बनाने की प्रेरणा भी मिली।

खिलाड़ियों ने कहा कि शिविर के दौरान प्रशिक्षकों से प्राप्त मार्गदर्शन उनके लिए उपयोगी और प्रेरणादायक रहा। नियमित अभ्यास तथा अनुशासित दिनचर्या के महत्त्व को समझने के साथ-साथ उन्हें यह भी सीखने को मिला कि खेल के क्षेत्र में सफलता निरंतर प्रयास और धैर्य से प्राप्त होती है। खिलाड़ियों के अनुसार, इस प्रशिक्षण ने उनके आत्मविश्वास को बढ़ाने और भविष्य की प्रतियोगिताओं के लिए स्वयं को बेहतर ढंग से तैयार करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई।

भविष्य के चैंपियनों की नींव-

स्प्रिंट-प्रशिक्षण शिविर का समापन केवल पाँच दिनों के प्रशिक्षण के साथ नहीं हुआ, बल्कि यह खिलाड़ियों के आगामी खेल सफर की एक नई शुरुआत बना। प्रशिक्षण के दौरान सीखी गई तकनीकों, अनुशासन और सकारात्मक सोच को खिलाड़ी अपने नियमित अभ्यास में शामिल कर सकेंगे। शिविर के दौरान प्राप्त अनुभव उन्हें भविष्य की प्रतियोगिताओं के लिए बेहतर ढंग से तैयार करने में सहायक होंगे।

समग्र शिक्षा, हरियाणा द्वारा खेल प्रतिभाओं को मंच प्रदान करने की यह पहल प्रदेश के सरकारी विद्यालयों में खेल संस्कृति को मजबूत करने और भविष्य के चैंपियन तैयार करने की दिशा में एक महत्त्वपूर्ण कदम है। ऐसे प्रशिक्षण शिविरों के माध्यम से विद्यार्थियों को अपनी प्रतिभा पहचानने, उसे निखारने और उच्च स्तर पर प्रदर्शन करने के लिए आवश्यक मार्गदर्शन एवं अवसर प्राप्त होते हैं।

पाँच दिनों की कड़ी मेहनत, सीख और अनुभव ने खिलाड़ियों को यह विश्वास दिया कि सही मार्गदर्शन, निरंतर अभ्यास और मज़बूत इच्छा-शक्ति के साथ कोई भी लक्ष्य हासिल किया जा सकता है। स्प्रिंट प्रशिक्षण शिविर ने इन युवा खिलाड़ियों को केवल बेहतर बॉक्सर बनने का प्रशिक्षण नहीं दिया, बल्कि उन्हें अनुशासन, आत्मविश्वास, धैर्य और सकारात्मक सोच के साथ जीवन की विभिन्न चुनौतियों का सामना करने के लिए भी तैयार किया।

इस कार्यक्रम को सफल बनाने में एसोसिएट कंसल्टेंट डॉ. सुधीर शर्मा, जिला परियोजना अधिकारी जोगिंदर लाठर, विपुल शर्मा, महावीर सिंह तथा दयानंद का विशेष योगदान रहा।

प्रधानाचार्य
राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, खुड्डा कलाँ
अंबाला, हरियाणा

ज्ञान, कौशल और नवोन्मेष : एआई के साथ भारत की उड़ान

प्रवीण सांगवान

हमारा देश वैश्विक एआई पावरहाउस के रूप में अपना स्थान बना रहा है और इस दिशा में तेज़ी से प्रगति कर रहा है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता के क्षेत्र में भारत की बढ़ती सक्रियता न केवल तकनीकी नवोन्मेष को गति दे रही है, बल्कि उद्योग, उद्यमिता और रोज़गार के नए अवसर भी तैयार कर रही है। 2024 में 89 प्रतिशत नए स्टार्टअप एआई-संचालित थे और 87 प्रतिशत उद्यम सक्रिय रूप से एआई का इस्तेमाल कर रहे थे। यह तो शुरुआती आँकड़ा है। भारतीय एआई बाज़ार के 2027 तक 25 से 35 प्रतिशत की दर से बढ़ने की संभावना है। इस तेज़ी से बढ़ते क्षेत्र के लिए कुशल मानव-संसाधन की आवश्यकता भी उतनी ही महत्त्वपूर्ण है। इस वृद्धि को गति देने के लिए भारत को, जिसके पास 2024 में 6,00,000 - 6,50,000 का एआई प्रतिभा-पूल था, नैसकॉम के अनुसार, 2027 तक 15 प्रतिशत सीएजीआर की दर से बढ़ते हुए 1.25 मिलियन से अधिक एआई पेशेवरों की आवश्यकता होगी।

सरकार की कई पहल और नीतियाँ एआई के कारण श्रम बाज़ार में हो रहे बड़े बदलावों के अनुरूप स्वयं को ढाल रही हैं। राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) 2020 आर्थिक विकास, शिक्षण संबंधी चुनौतियों के समाधान, अध्यापकों की क्षमता बढ़ाने और व्यक्तिगत शिक्षण में एआई की क्षमता को पहचानती है तथा सभी शैक्षणिक स्तरों पर एआई-आधारित सीखने के महत्त्व पर ज़ोर देती है। इसका व्यापक उद्देश्य विद्यार्थियों को भविष्य की तकनीकी और आर्थिक आवश्यकताओं के अनुरूप तैयार करना तथा उनमें ऐसे कौशल विकसित करना है, जो बदलती दुनिया में उन्हें नए अवसरों का लाभ उठाने में सक्षम बनाएँ। इसी दिशा में इंडिया एआई मिशन (मार्च 2024 में शुरू) का उद्देश्य सरकार, संस्थानों, स्टार्टअप्स, निजी क्षेत्र और शिक्षा के सभी क्षेत्रों में नवोन्मेष को बढ़ावा देकर भारत को विश्व का एआई लीडर बनाना है। यह पहल एआई के क्षेत्र में अनुसंधान, कौशल, नवाचार और उपयोग की संभावनाओं को व्यापक बनाने की दिशा में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

इस रणनीति का मुख्य हिस्सा प्रौद्योगिकी तक पहुँच और उसके उपयोग को आसान बनाना है। यह सुनिश्चित करना कि एआई उपकरण और डिजिटल प्लेटफ़ॉर्म दूर-दराज़ के गाँवों, जनजातीय क्षेत्रों और वंचित समुदायों तक पहुँचें, जिससे डिजिटल विभाजन को कम किया जा सके। एआई का लाभ केवल बड़े शहरों और तकनीकी रूप से विकसित क्षेत्रों तक सीमित न रहे, बल्कि समाज के हर वर्ग तक पहुँचे, यही इस व्यापक दृष्टिकोण का महत्त्वपूर्ण आधार है। इससे शिक्षा, कौशल-विकास और रोज़गार के अवसरों में समानता को बढ़ावा देने में भी मदद मिल सकती है।

यह समग्र दृष्टिकोण 'विकसित भारत 2047' की कल्पना के अनुरूप है, जो भारत को एक समावेशी और वैश्विक एआई लीडर के रूप में स्थापित करने की दिशा में आगे बढ़ता है। एआई की शक्ति, व्यापक डिजिटल पहुँच, गुणवत्तापूर्ण शिक्षा और कुशल मानव संसाधन के समन्वय से भारत आने वाले वर्षों में तकनीकी नवोन्मेष के साथ-साथ समावेशी विकास की दिशा में भी नई उपलब्धियाँ हासिल कर सकता है

एआई पर राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020-

राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) 2020 यह मानती है कि एआई, बिग डेटा और मशीन लर्निंग आने वाले समय में श्रम बाज़ार को व्यापक रूप से बदलेंगे और नवोन्मेष को नई गति देंगे। यह सुनिश्चित करने के लिए कि युवा इन बड़े बदलावों के लिए तैयार रहें और बदलती दुनिया की आवश्यकताओं के अनुरूप स्वयं को ढाल सकें, एनईपी बहुविषयक शिक्षा के अंतर्गत एआई, कंप्यूटर विज्ञान और डेटा विज्ञान के साथ-साथ अन्य विषयों के अध्ययन की अहमियत पर भी ज़ोर देती है।

इस नीति का उद्देश्य इन उभरते हुए क्षेत्रों में छात्रों को ज्ञान और कौशल से सशक्त बनाना है, ताकि वे भविष्य में आर्थिक सफलता के साथ-साथ शिक्षा, रोज़गार और उद्यमिता के अधिक अवसरों का लाभ उठा सकें। इस दृष्टि से एआई शिक्षा को केवल तकनीकी ज्ञान तक सीमित न रखकर, विद्यार्थियों की रचनात्मकता, समस्या-समाधान क्षमता और भविष्य के लिए आवश्यक कौशल विकसित करने के माध्यम के रूप में देखा गया है।

क्योंकि शिक्षा समवर्ती सूची में है, इसलिए एनईपी 2020 की सिफारिशें केंद्र और राज्य/केंद्र शासित प्रदेश दोनों की शिक्षा नीतियों को प्रभावित करती हैं। इस प्रकार, यह नीति देश में एआई-आधारित शिक्षा के विस्तार और भारत को वैश्विक एआई लीडर बनाने के सरकार के प्रयासों को भी सहयोग प्रदान करती है।

स्कूली शिक्षा में एआई की पहल-

शिक्षा मंत्रालय ने राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) 2020 और राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (एनसीएफ) 2023 के तहत, ग्रेड 9 से शुरुआत करते हुए, सीबीएसई और एनसीईआरटी के माध्यम से पूरे भारत में स्कूली पाठ्यक्रम में एआई को शामिल किया है। इसका उद्देश्य विद्यार्थियों को कम उम्र से ही उभरती तकनीकों की बुनियादी समझ देना और उन्हें भविष्य की शिक्षा तथा रोज़गार की बदलती आवश्यकताओं के लिए तैयार करना है।

वर्तमान में, सीबीएसई कक्षा VI से 15 घंटे का एआई कौशल मॉड्यूल तथा कक्षा IX-XII में एआई को एक वैकल्पिक विषय के रूप में उपलब्ध कराता है। वहीं, एनसीईआरटी ने कक्षा XI की कंप्यूटर विज्ञान और इंफॉर्मेटिक्स प्रैक्टिस की पाठ्य-पुस्तक में एआई विषय को शामिल किया है।

इसके अतिरिक्त, ग्रेड 1-2 की पाठ्यपुस्तकों को 22 भारतीय भाषाओं में अनुवाद करने के लिए एआई/एमएल का उपयोग किया गया है। इससे शिक्षा सामग्री को अधिक सुलभ, समावेशी और बहुभाषी बनाने की दिशा में तकनीक की उपयोगिता सामने आती है।

छात्रों और शिक्षकों के लिए एआई पाठ्यक्रम-

दीक्षा प्लेटफॉर्म-

शिक्षा मंत्रालय की एक महत्त्वपूर्ण पहल, दीक्षा (डिजिटल इंफ्रास्ट्रक्चर फॉर नॉलेज शेयरिंग), शिक्षा को अधिक समावेशी और सुलभ बनाने के लिए एआई का उपयोग करती है। इसमें वीडियो में एआई-आधारित मुख्य शब्दों की खोज तथा दृष्टिहीन छात्रों के लिए सामग्री को ज़ोर से पढ़कर सुनाने जैसी सुविधाएँ उपलब्ध हैं। दीक्षा मोबाइल ऐप अध्यापकों के साथ-साथ छात्रों और अभिभावकों के लिए भी उपलब्ध है।

इस प्लेटफॉर्म पर विद्यार्थियों और शिक्षकों के लिए रोचक एवं उपयोगी अध्ययन सामग्री उपलब्ध कराई जाती है, जो स्कूलों में निर्धारित पाठ्यक्रम की आवश्यकताओं के अनुरूप होती है। इस प्रकार, दीक्षा डिजिटल तकनीक के माध्यम से सीखने की प्रक्रिया को अधिक सहज और व्यापक बनाने में सहायक है।

एसओएआर पहल-

कौशल विकास एवं उद्यमिता मंत्रालय ने कक्षा 6-12 के छात्रों और अध्यापकों में एआई के प्रति जागरूकता बढ़ाने तथा आवश्यक कौशल विकसित करने के लिए एसओएआर (स्किलिंग फॉर एआई रेडीनेस) की शुरुआत की है। इस कार्यक्रम में तीन 15-घंटे के छात्र मॉड्यूल और एक 45-घंटे का एआई फॉर एजुकेटर्स शिक्षक मॉड्यूल शामिल है।

इस पहल का व्यापक उद्देश्य विद्यार्थियों और शिक्षकों को एआई की संभावनाओं से परिचित कराना तथा उन्हें भविष्य की तकनीक-आधारित दुनिया के लिए तैयार करना है।

एआई फॉर एजुकेटर्स मॉड्यूल-

यह मॉड्यूल अध्यापकों को एआई पाठ्यक्रम और उसके शिक्षण-पद्धति में उपयोग को समझने, कक्षा में एआई टूल्स का प्रभावी ढंग से इस्तेमाल करने तथा विभिन्न प्रकार के शिक्षार्थियों के लिए समावेशी वातावरण विकसित करने का प्रशिक्षण देता है। इसके साथ ही, इसमें शैक्षिक एआई परियोजनाएँ विकसित करने और ज़िम्मेदार एआई के आचार एवं नीति संबंधी पहलुओं को समझने पर भी ध्यान दिया जाता है।

इस प्रशिक्षण के माध्यम से शिक्षक केवल एआई उपकरणों का उपयोग करना ही नहीं सीखते, बल्कि विद्यार्थियों को तकनीक के सुरक्षित, जिम्मेदार और रचनात्मक उपयोग के लिए मार्गदर्शन देने में भी सक्षम बनते हैं।

स्वयं प्लेटफॉर्म-

शिक्षा मंत्रालय का स्वयं (स्टडी वेब्स ऑफ़ एक्टिव लर्निंग फ़ॉर यंग एस्पायरिंग माइंड्स) प्लेटफॉर्म उच्च शिक्षा और कौशल-आधारित सीखने के क्षेत्र में भी एआई शिक्षा के अवसरों का विस्तार कर रहा है। इस प्लेटफॉर्म पर आईआईटी और आईआईएससी से 110+ निःशुल्क एआई पाठ्यक्रम उपलब्ध हैं, जिनमें 41.2 लाख छात्रों ने नामांकन किया हुआ है।

इस प्रकार, राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 की व्यापक दृष्टि, स्कूली पाठ्यक्रम में एआई के समावेश से लेकर छात्रों और शिक्षकों के कौशल-विकास तक, शिक्षा व्यवस्था को भविष्य की तकनीकी आवश्यकताओं के अनुरूप तैयार करने की दिशा में एक महत्त्वपूर्ण कदम है।

उच्च शिक्षा में एआई-

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (यूजीसी)-

उच्च शिक्षा के क्षेत्र में भी कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई) को पाठ्यक्रम और कौशल-विकास से जोड़ने पर विशेष बल दिया जा रहा है। 2022 के स्नातक पाठ्यक्रमों में एआई, -डी मशीनिंग, बिग डेटा एनालिसिस, मशीन लर्निंग, ड्रोन टेक्नोलॉजी और डीपलर्निंग जैसे उभरते विषयों को शामिल किया गया है। इन तकनीकों का उपयोग स्वास्थ्य, पर्यावरण और टिकाऊ जीवन जैसे महत्त्वपूर्ण क्षेत्रों में किया जा सकता है। इस प्रकार, उच्च शिक्षा में एआई का समावेश विद्यार्थियों को आधुनिक तकनीकी ज्ञान से परिचित कराने के साथ-साथ उन्हें भविष्य की आवश्यकताओं के अनुरूप तैयार करने में भी सहायक है।

अखिल भारतीय तकनीकी शिक्षा परिषद् (एआईसीटीई)-

तकनीकी शिक्षा के क्षेत्र में एआई को बढ़ावा देने के लिए अखिल भारतीय तकनीकी शिक्षा परिषद् (एआईसीटीई) की ओर से भी कई पहल की गई हैं।

» आईटी से जुड़े सभी पाठ्यक्रमों में एआई घटक को शामिल किया गया है।
» एआई के प्रति जागरूकता और नवोन्मेष को बढ़ावा देने के लिए हैकाथॉन आयोजित किए गए हैं।
» महिलाओं को इंजीनियरिंग शिक्षा के लिए प्रगति और सरस्वती जैसी छात्रवृत्तियाँ प्रदान की गई हैं।
» शिक्षकों के तकनीकी एवं व्यावसायिक कौशल को मजबूत करने के लिए फैकल्टी डेवलपमेंट प्रोग्राम आयोजित किए गए हैं।

इन पहलों का उद्देश्य विद्यार्थियों और शिक्षकों को एआई की बदलती दुनिया से जोड़ना तथा तकनीकी शिक्षा को उद्योग और भविष्य के रोज़गार की आवश्यकताओं के अनुरूप अधिक उपयोगी बनाना है।

निष्कर्ष-

कृत्रिम बुद्धिमत्ता आज केवल तकनीकी बदलाव का माध्यम नहीं, बल्कि शिक्षा, कौशल, अनुसंधान, रोज़गार और नवोन्मेष के भविष्य को आकार देने वाली महत्त्वपूर्ण शक्ति बन चुकी है। भारत ने एआई की इस संभावनाशील दुनिया को समझते हुए राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020, इंडिया एआई मिशन और विभिन्न शैक्षिक एवं कौशल-विकास पहलों के माध्यम से एक व्यापक आधार तैयार किया है।

स्कूली शिक्षा में एआई के प्रारंभिक परिचय से लेकर उच्च शिक्षा में एआई-आधारित पाठ्यक्रम, अनुसंधान, हैकाथॉन और नवोन्मेषी कार्यक्रमों तक, शिक्षा व्यवस्था को भविष्य की आवश्यकताओं से जोड़ने का प्रयास स्पष्ट दिखाई देता है।

दीक्षा, एसओएआर, स्वयं, एआई फॉर एजुकेटर्स जैसी पहलें विद्यार्थियों और शिक्षकों को केवल तकनीक का उपभोक्ता नहीं, बल्कि उसके रचनात्मक और जिम्मेदार उपयोगकर्ता के रूप में तैयार करने की दिशा में आगे बढ़ रही हैं। आने वाले समय में एआई की सफलता इस बात पर निर्भर करेगी कि उसकी पहुँच कितनी व्यापक, समावेशी और ज़िम्मेदार बनती है। यदि गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, डिजिटल पहुँच, कुशल मानव संसाधन और अनुसंधान को समान गति मिले, तो एआई भारत की ज्ञान-आधारित अर्थव्यवस्था को नई ऊँचाई दे सकता है। यही यात्रा विकसित भारत-2047 की परिकल्पना को साकार करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है।

संयुक्त निदेशक, आईटी, ईडीयू
स्कूल शिक्षा विभाग, हरियाणा, पंचकूला

मनाली की बर्फीली वादियों में साहस, संस्कृति और राष्ट्रप्रेम

पिंकी मलिक

ग्रीष्म की तीव्र तपन के बीच जब मन में 'मनाली' का विचार कौंधता है, तो हृदय में शीतलता और आनंद की एक पावन तरंग प्रवाहित हो उठती है। 18 से 22 जुलाई के मध्य हरियाणा के 'हिंदुस्तान स्काउट एंड गाइड' द्वारा आयोजित राज्य स्तरीय महिला एडवेंचर कैंप का आमंत्रण मेरे लिए केवल एक यात्रा नहीं, बल्कि जीवन की एक अमूल्य उपलब्धि बनकर आया। इस शिविर में प्रदेश के सभी जिलों से लगभग 200 महिला गाइड, शिक्षिकाओं और स्काउट प्रशिक्षकों ने सहभागिता की, जिनमें से एक प्रतिभागी बनने का परम सौभाग्य मुझे भी प्राप्त हुआ।

उत्तुंग हिम-शिखरों की धवल कांति, चीड़ और देवदार के सघन वृक्षों की हरीतिमा तथा व्यास नदी की कल-कल, छल-छल करती सुरम्य धारा- इन सबने मिलकर मनाली के सौंदर्य को अनुपम रूप दे दिया था। यह प्राकृतिक छटा केवल नेत्रों को तृप्त नहीं करती, बल्कि आत्मा को भी असीम शांति से भर देती है। इस शिविर का मूल उद्देश्य हमारी बेटियों में साहस, आत्मविश्वास, अनुशासन, नेतृत्व और राष्ट्र-रक्षा की अटूट भावना का बीजारोपण करना था। वास्तव में, जब विद्यार्थी कक्षा की चारदीवारी से निकलकर प्रकृति की विशाल प्रयोगशाला में आते हैं, तो वे केवल भूगोल नहीं बदलते, बल्कि संस्कृति, लोक-जीवन और व्यावहारिक ज्ञान को आत्मीयता से आत्मसात् करते हैं।

यात्रा का उल्लास एवं कक्षा से परे व्यावहारिक शिक्षा-

यात्रा का विचार आते ही मन में जिज्ञासा और उत्साह की लहरें उठने लगी थीं। हिंदुस्तान स्काउट एंड गाइड द्वारा सभी जिलों से आवागमन हेतु सुव्यवस्थित बसों का प्रबंध किया गया था। हँसते-खिलखिलाते चेहरों के साथ शुरू हुआ यह सफर मनाली पहुँचकर और भी सुंदर हो गया, जहाँ राज्य सचिव नवीन जय हिंद जी एवं उनकी कर्मठ टीम ने आवास और भोजन का अत्यंत आत्मीय एवं सुव्यवस्थित प्रबंध किया था।

यहाँ पाँच दिनों तक बेटियों ने केवल पुस्तकों में पढ़ा जाने वाला ज्ञान ही नहीं, बल्कि जीवन का प्रत्यक्ष अनुभव भी प्राप्त किया। 'रोप क्लाइंबिंग' में संतुलन साधना हो, 'जिपलाइनिंग' की रोमांचक उड़ान हो, 'ट्रैकिंग' में धैर्य की परीक्षा हो या सायंकालीन 'कैंपफायर' में गूँजते सांस्कृतिक स्वर; हर गतिविधि में बेटियों ने अपने कौशल और ऊर्जा का लोहा मनवाया।

अध्यात्म और परंपरा का संगम : हिडिंबा मंदिर एवं बौद्ध मठ-

साहसिक गतिविधियों के मध्य हमें क्षेत्र की सांस्कृतिक और पौराणिक धरोहर को जानने का अवसर भी मिला। ट्रैकिंग करते हुए जब हमारी टोली घने देवदार के वनों के बीच स्थित ऐतिहासिक हिडिंबा माता मंदिर पहुँची, तो वहाँ का वातावरण अद्भुत सकारात्मक ऊर्जा से सराबोर था। 1553 ई. में कुल्लू के महाराजा बहादुर सिंह द्वारा निर्मित यह बहुमंजिला पगोड़ा शैली का काष्ठ-मंदिर भारतीय वास्तुकला का उत्कृष्ट उदाहरण है। महाभारत कालीन पांडव पुत्र भीम की पत्नी हिडिंबा देवी को समर्पित यह धाम आस्था और प्रकृति का पावन नीड़ है।

यात्रा के अंतिम चरण में मॉल रोड के समीप स्थित बौद्ध मठ के दर्शन हुए। महात्मा बुद्ध की भव्य एवं शांत प्रतिमा, रंग-बिरंगे भित्ति-चित्र और तिब्बती शिल्प-शैली ने मन को परम शांति प्रदान की। इन पावन स्थलों ने शिक्षिकाओं और छात्राओं के मन में सेवा, सद्भाव और भारतीय संस्कृति के प्रति अगाध श्रद्धा को और सुदृढ़ कर दिया।

बरोट-परशा जलप्रपात एवं व्यास का तट : पर्यावरण-बोध-

पहाड़ों की घुमावदार पगडंडियों और ठंडी बयार के बीच बरोट-परशा जलप्रपात तक की ट्रैकिंग किसी स्वप्निल यात्रा जैसी थी। जब ऊँचाई से गिरते जलप्रपात की नन्ही-नन्ही फुहारें तन को छूती हैं, तो यात्रा की सारी थकान छूमंतर हो जाती है।

हर कदम पर हिम्मत का नया इम्तिहान था,
झरनों का संगीत और प्रकृति का सम्मान था।
मंज़िल पर पहुँच कर एहसास यही हुआ,
संघर्ष के बाद ही सफलता का वरदान था।

वहीं व्यास नदी के तट पर बैठकर बिताए गए पल अत्यंत भावुक और विचारोत्तेजक थे। बहते जल की मधुर ध्वनि के बीच प्रशिक्षकों ने विद्यार्थियों को पर्यावरण-संरक्षण, नदियों की स्वच्छता और प्रकृति के प्रति नैतिक

दायित्वों का बोध कराया। यह संदेश हर हृदय में अंकित हो गया कि धरती की स्वच्छता ही हमारी संस्कृति की पहली शर्त है।

सिली कुंड का हिम-क्रीड़ा उत्सव एवं अटल टनल-

रोहतांग क्षेत्र के निकट स्थित सिली कुंड में चारों ओर बिछी सफेद बर्फ की चादर ने सभी को मुग्ध कर दिया। बर्फ पर फिसलना, एक-दूसरे पर हिम-गोलों से क्रीड़ा करना केवल मनोरंजन नहीं था, बल्कि वह बेटियों के भीतर छिपे भय को दूर कर आत्मविश्वास जगाने का एक माध्यम था।

इसी यात्रा में 10,000 फीट से अधिक ऊँचाई पर निर्मित 9.02 किलोमीटर लंबी अटल टनल के भव्य प्रवेश द्वार को देखना आधुनिक भारत के अभूतपूर्व अभियांत्रिक कौशल (Engineering Marvel) पर गर्व करने जैसा था।

पर्वतों को चीरकर जो राह नई बनी,
भारत की मेहनत और विज्ञान की जीत बनी।
अटल संकल्प का यह अनुपम प्रमाण है,
नए भारत की प्रगति की यही पहचान है।

शिंकुला टॉप पर फहराया राष्ट्रध्वज-

बर्फीली चोटियों पर जब तिरंगा लहराया,
हर बेटी ने भारत का गौरव बढ़ाया।
साहस, सेवा और राष्ट्रभक्ति का संदेश दिया,
हरियाणा का नाम हिमालय तक पहुँचाया।

इस पूरे एडवेंचर कैंप का सबसे अविस्मरणीय और रोमांच से भर देने वाला क्षण वह था, जब हरियाणा की बेटियों ने अपने अदम्य साहस और देशभक्ति का परिचय देते हुए हिमाचल प्रदेश के सुदूर शिंकुला टॉप पर पहुँचकर राष्ट्रध्वज फहराया। शून्य से नीचे के तापमान और कठिन भौगोलिक परिस्थितियों का सामना करते हुए जब बेटियों ने वहाँ भारत का राष्ट्रीय ध्वज 'तिरंगा' तथा 'हिंदुस्तान स्काउट एंड गाइड' का ध्वज फहराया, तो पूरा परिवेश 'भारत माता की जय' के उद्घोष से गूँज उठा। यह क्षण हर प्रतिभागी के जीवन का सबसे गौरवमय पल बन गया।

प्रेरणादायक नेतृत्व-

इस भव्य और सफल आयोजन की सफलता का श्रेय हिंदुस्तान स्काउट एंड गाइड के राज्य सचिव श्री नवीन जय हिंद जी, हरियाणा शिक्षा विभाग तथा सभी जिला सचिवों को जाता है। राज्य सचिव श्री नवीन जय हिंद का नेतृत्व वास्तव में 'वन मैन आर्मी' की भाँति प्रेरणादायक रहा। उन्होंने हर साहसिक गतिविधि में स्वयं आगे रहकर सुरक्षा, अनुशासन और टीम-भावना का जो उदाहरण प्रस्तुत किया, वह सच्चे नेतृत्व का प्रतीक है। उनकी कार्य-शैली दर्शाती है कि किसी भी संस्था या कार्य को केवल आदेश से नहीं, बल्कि समर्पण से चलाया जाता है।

इसके साथ ही, मैं अपने पानीपत जिला सचिव श्री विनोद वत्स जी का हृदय से आभार व्यक्त करती हूँ, जिनकी प्रेरणा से हमारे जिले की शिक्षिकाओं- गीता शर्मा, पूनम देवी, सीमा रानी, मीराबाई और मुझे इस ऐतिहासिक यात्रा का हिस्सा बनने का अवसर प्राप्त हुआ।

उपसंहार-

मनाली की यह बर्फीली वादियों वाली यात्रा केवल एक स्मृति नहीं, बल्कि एक जीवन-दर्शन बन चुकी है। शिक्षा विभाग से विनम्र प्रार्थना है कि ऐसे प्रकृति-केंद्रित साहसिक शिविरों का आयोजन निरंतर होता रहे, ताकि हमारी बेटियाँ कक्षा की सीमाओं से बाहर निकलकर प्रकृति से जुड़ सकें, आत्मनिर्भर बन सकें और राष्ट्र का मस्तक यूँ ही ऊँचा करती रहें।

यादों की यह यात्रा जीवन भर साथ रहेगी,
साहस और सेवा की ज्योति सदा जलती रहेगी।
प्रकृति, संस्कृति और राष्ट्रप्रेम का यह संदेश,
हर विद्यार्थी के जीवन को उज्ज्वल करता रहेगा।

अर्थशास्त्र प्रवक्ता
पीएम श्री राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय
छाजपुर (पानीपत) हरियाणा

मोरनी हिल्स की वादियों में स्काउट मास्टर की जीवंत डायरी

मनोज वशिष्ठ

मोरनी की पहाड़ियाँ केवल शिवालिक की ऊँचाइयाँ नहीं हैं; वे प्रकृति के बीच मनुष्य को आत्मचिंतन, अनुशासन और आत्मविश्वास का अवसर देने वाली जीवंत प्रयोगशाला हैं। 27 से 29 मई 2026 तक 'द हरियाणा स्टेट भारत स्काउट्स एंड गाइड्स, जिला रेवाड़ी' के तत्त्वावधान में आयोजित 'ग्रुप लीडर ओरिएंटेशन कोर्स' मेरे लिए एक अविस्मरणीय अनुभव रहा। इसमें प्राचार्यों, स्नातकोत्तर शिक्षकों और प्रशिक्षित स्नातक शिक्षकों सहित रेवाड़ी जिले के लगभग 44 प्रतिभागियों ने भाग लिया। तीन दिवसीय प्रशिक्षण ने सेवा, अनुशासन, नेतृत्व और जीवन-कौशल के प्रति नई दृष्टि प्रदान की।

प्रशासनिक नेतृत्व और प्रशिक्षण की सफलता-

रेवाड़ी में इस प्रशिक्षण के आयोजन के पीछे जिला शिक्षा अधिकारी श्री बिजेंद्र हुड्डा की दूरदर्शी सोच और प्रशासनिक इच्छाशक्ति की महत्त्वपूर्ण भूमिका रही। उनका मानना रहा कि विद्यालयी नेतृत्व को स्काउटिंग की व्यावहारिक गतिविधियों से जोड़ने से विद्यार्थियों में अनुशासन, सेवा-भाव और नेतृत्व जैसे गुणों को बढ़ावा दिया जा सकता है। प्रशिक्षण के संचालन और समन्वय में जिला संगठन आयुक्त (DOC) श्री प्रदीप यादव एवं श्रीमती सरोज वर्मा की भी महत्त्वपूर्ण भूमिका रही। उनकी सक्रिय सहभागिता और मार्गदर्शन से प्रशिक्षण की विभिन्न गतिविधियाँ व्यवस्थित रूप से संचालित हुईं। यह आयोजन इस बात का उदाहरण रहा कि प्रशासनिक सहयोग और सामूहिक प्रयास से प्रशिक्षण को प्रभावी एवं सार्थक बनाया जा सकता है।

मोरनी का घुमावदार मार्ग : धैर्य और संतुलन का पाठ-

पंचकूला से आगे मोरनी हिल्स की ओर बढ़ते ही हरी-भरी पहाड़ियों, घाटियों और घुमावदार सड़कों का मनोहारी दृश्य सामने आने लगा। हर मोड़ एक नया दृश्य और नया अनुभव प्रस्तुत कर रहा था। मोरनी का यह घुमावदार मार्ग जीवन की यात्रा का प्रतीक भी प्रतीत हुआ। जैसे कुशल चालक कठिन मोड़ों पर संतुलन बनाए रखते हुए यात्रियों को सुरक्षित गंतव्य तक पहुँचाता है, वैसे ही एक कुशल लीडर भी परिस्थितियों के उतार-चढ़ाव में धैर्य बनाए रखते हुए अपनी टोली को लक्ष्य तक ले जाता है। मोरनी पहुँचने से पहले ही यह यात्रा हमें प्रकृति, नेतृत्व और जीवन के बीच संबंधों पर सोचने का अवसर दे चुकी थी। चीड़ और देवदार के वृक्षों के बीच से छनकर आती शुद्ध वायु, पहाड़ियों के घुमावदार रास्तों का रोमांच और गाड़ी के भीतर रेवाड़ी के शिक्षाविदों का आत्मीय एवं गंभीर संवाद -इन सबने मिलकर मोरनी हिल्स पहुँचने से पहले ही हमें उस प्रशिक्षण के लिए मानसिक रूप से तैयार कर दिया था। यह यात्रा हमारे मानस-पटल पर एक अविस्मरणीय स्मृति बनकर अंकित हो गई।

'बीपी सिक्स' और भोर की मूक क्रांति-

आधुनिक जीवन की सुविधाओं से दूर, मोरनी हिल्स की प्राकृतिक गोद में प्रातःकालीन प्रशिक्षण का अनुभव अपने आप में अनूठा था। सुबह पाँच बजे, जब शिवालिक की चोटियों पर सूर्य की पहली किरण भी नहीं पहुँची थी, तब 44 प्रतिभागी अनुशासित कदमताल के साथ दिन की शुरुआत कर रहे थे।

प्रशिक्षण में 'बीपी सिक्स' अर्थात् बेडेन-पॉवेल से संबद्ध छह व्यायामों का अभ्यास कराया गया। ये स्काउटिंग की पारंपरिक शारीरिक गतिविधियों का हिस्सा हैं और शरीर को सक्रिय एवं चुस्त रखने पर केंद्रित हैं। इन्हें केवल व्यायाम न मानकर अनुशासन, नियमितता और आत्म नियंत्रण के अभ्यासके रूप में देखना अधिक सार्थक है। इन व्यायामों के दौरान मन में यह विचार आया कि सीधी होती रीढ़ केवल शारीरिक मुद्रा नहीं, बल्कि जीवन में दृढ़ता और आत्मानुशासन का भी प्रतीक हो सकती है।

स्काउटिंग के तीन मूल सिद्धांत-

प्रशिक्षण के दौरान स्काउटिंग के तीन मूल सिद्धांतों- ईश्वर के प्रति कर्तव्य, दूसरों के प्रति कर्तव्य और स्वयं के प्रति कर्तव्य पर चिंतन का अवसर मिला। भारत में भारत स्काउट्स एंड गाइड्स के आधिकारिक सिद्धांतों में भी ये तीनों आधार स्पष्ट रूप से उल्लिखित हैं। इनका व्यापक अर्थ है- आध्यात्मिक मूल्यों के प्रति निष्ठा, समाज एवं राष्ट्र के प्रति जिम्मेदारी तथा स्वयं के विकास और अनुशासन की जिम्मेदारी। यही भाव स्काउटिंग को केवल गतिविधियों का समूह न बनाकर जीवन-शिक्षा का माध्यम

बनाता है।

वर्दी : समानता और सेवा का प्रतीक-

स्काउट वर्दी ने इस प्रशिक्षण में समानता और टीम-भावना का अनुभव कराया। जब विभिन्न पदों पर कार्यरत शिक्षाविद् एक ही वर्दी में साथ खड़े होते हैं, तो पदगत भेद पीछे छूट जाते हैं और समूह की पहचान अधिक महत्त्वपूर्ण हो जाती है। स्कार्फ और वोगल भी स्काउट वर्दी के परिचित अंग हैं। इन्हें केवल सजावटी वस्तु के रूप में न देखकर अनुशासन, समूह-पहचान और स्काउटिंग की परंपरा के प्रतीक के रूप में देखा जा सकता है। वर्दी ने हमें यह अनुभव कराया कि नेतृत्व का वास्तविक अर्थ अधिकार जताना नहीं, बल्कि सेवा, अनुशासन और सहयोग की भावना से कार्य करना है।

रस्सियों का संसार और जीवन का गणित-

ओरिएंटेशन कोर्स में विभिन्न गाँठों (Knots) और बंधनों (Lashings) का अभ्यास कराया गया। स्काउटिंग में ये केवल तकनीकी कौशल नहीं हैं; इनके माध्यम से समस्या-समाधान, धैर्य, सटीकता और सहयोग जैसे जीवन-कौशल भी विकसित होते हैं। रीफ नॉट दो रस्सियों को जोड़ने के लिए प्रयुक्त होती है। क्लोवहिच किसी खंभे या आधार से रस्सी बाँधने में उपयोगी है, जबकि फिशरमैन नॉट रस्सियों को जोड़ने के लिए प्रयुक्त होने वाली एक अन्य गाँठ है। इनके व्यावहारिक उपयोग को जीवन के संबंधों और नेतृत्व से जोड़कर देखना एक सुंदर रूपक हो सकता है। इन गाँठों ने मुझे यह सोचने पर विवश किया कि जीवन में भी संतुलन आवश्यक है। बहुत ढीले संबंध आसानी से बिखर सकते हैं और अत्यधिक कसाव व्यक्ति की स्वतंत्रता को प्रभावित कर सकता है। नेतृत्व का सार इसी संतुलन में है।

टेंट निर्माण : 'मैं' से 'हम' की यात्रा-

मोरनी की ढलानदार भूमि पर सीमित साधनों से टेंट तैयार करना प्रशिक्षण का महत्त्वपूर्ण अनुभव था। जब अलग-अलग विद्यालयों के प्राचार्य, पीजीटी और टीजीटी एक ही टोली में मिलकर तिरपाल, बाँस, खूंटियों और रस्सियों के साथ काम करते हैं, तो पद और वरिष्ठता पीछे छूट जाती है। टेंट किसी एक व्यक्ति की उपलब्धि नहीं, बल्कि पूरी टोली के सहयोग और सामूहिक प्रयास का परिणाम बनता है। यही स्काउटिंग के 'टीम सिस्टम' की शक्ति है। भारत स्काउट्स एंड गाइड्स भी अपने स्काउट मेथड में छोटे दलों के माध्यम से सहयोग, नेतृत्व, जिम्मेदारी और सहभागिता को महत्त्व देताहै। इस अनुभव ने नेतृत्व की एक सरल परिभाषा मेरे सामने रखी। सच्चा लीडर वह है जो अकेले आगे नहीं बढ़ता, बल्कि पूरी टोली को साथ लेकर लक्ष्य तक पहुँचता है।

कैंप फायर : संस्कृति और आत्ममंथन का संगम-

मोरनी की पहाड़ियों में शाम का कैंप फायर प्रशिक्षण का सबसे आत्मीय अनुभव रहा। अग्नि के चारों ओर जब सभी प्रतिभागी एक साथ बैठे, तो पद और औपचारिकताएँ

गौण हो गईं। वहाँ सभी केवल स्काउट थे, एक-दूसरे के साथी। हरियाणवी लोकगीतों, रागिनी और जीवन-अनुभवों ने वातावरण को जीवंत बना दिया। उस शाम यह अनुभव हुआ कि प्रत्येक शिक्षक अपने भीतर अनुभवों और कहानियों का एक विशाल संसार लेकर चलता है। कैंप फायर ने हमें अपनी लोक-संस्कृति, साथियों और स्वयं से जुड़ने का अवसर दिया।

Be Prepared : जीवन-पथ का पाथेय-

स्काउटिंग का प्रसिद्ध मूलमंत्र 'Be Prepared' (तैयार रहो) है। भारत स्काउट्स एंड गाइड्स के अनुसार इसका संबंध शारीरिक रूप से मजबूत, मानसिक रूप से सजग और नैतिक रूप से दृढ़ रहने से है। मोरनी का यह प्रशिक्षण मेरे लिए इस मंत्र के वास्तविक अर्थ को समझने का अवसर बना। तैयार रहना केवल किसी चुनौती का सामना करने की क्षमता नहीं, बल्कि बदलती परिस्थितियों में संयम बनाए रखना, दूसरों की सहायता करना, जिम्मेदारी स्वीकार करना और सीखते रहने की निरंतर प्रक्रिया है। मोरनी की पहाड़ियों से लौटते समय हमारे पास केवल प्रशिक्षण का प्रमाण नहीं था, हमारे पास सहयोग, अनुशासन, नेतृत्व और सेवा के कुछ ऐसे अनुभव थे, जो विद्यालय और जीवन दोनों में लंबे समय तक हमारा मार्गदर्शन कर सकते हैं।

मोरनी की वादियों से लौटकर जब मैंने अपने विद्यालय, राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, रेवाड़ी में प्रवेश किया, तो अपने अंतर्मन में एक मंत्र अंकित पाया- 'BE PREPARED' अब मेरे लिए इसका अर्थ केवल किसी गतिविधि के लिए तैयार रहना नहीं, बल्कि विद्यार्थियों को जीवन की अनपेक्षित परिस्थितियों का धैर्य और आत्मविश्वास से सामना करने के लिए तैयार करना है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 और स्काउटिंग

राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 अनुभवात्मक, समग्र और कौशल-आधारित शिक्षा पर बल देती है। इस दृष्टि से स्काउटिंग और गाइडिंग की गतिविधियाँ विद्यार्थियों में नेतृत्व, सहयोग, अनुशासन, सेवा-भाव और जीवन-कौशल विकसित करने का उपयोगी माध्यम बन सकती हैं। इसलिए स्काउटिंग को केवल एक गतिविधि न मानकर विद्यालयी शिक्षा में उपलब्ध अनुभवात्मक एवं सह-पाठ्यचर्या अवसरों के रूप में अधिक प्रभावी ढंग से उपयोग किया जाना चाहिए। शिक्षा केवल ज्ञान अर्जित करने का माध्यम नहीं; उसका उद्देश्य जिम्मेदार, संवेदनशील और सक्षम नागरिक तैयार करना भी है।

रावमा विद्यालय
रेवाड़ी, हरियाणा

पहेलियाँ : भाषा, संस्कृति और सृजन का अद्वितीय संगम

डॉ. सुदेश रानी

पहेलियाँ मानव सभ्यता का एक ऐसा अनुपम अंग हैं, जो न केवल मनोरंजन का साधन हैं, बल्कि समाज, संस्कृति और भाषा के अनमोल रत्न भी हैं। प्रारंभ से ही विभिन्न सभ्यताओं में पहेलियाँ लोगों के ज्ञान, सोचने की क्षमता, कल्पना शक्ति, तथा भाषा के प्रयोग को विकसित करने का सशक्त माध्यम रही हैं। भारत जैसे विविधताओं से भरपूर देश में प्रत्येक क्षेत्रीय भाषा की अपनी अनूठी पहेली परंपरा है, जो वहाँ की लोक संस्कृति, रीति-रिवाज और सामाजिक दृष्टिकोण का प्रतीक मानी जाती है।

पहेलियों का इतिहास-

पहेली मानव सभ्यता की एक बहुत ही प्राचीन और रोचक रचनात्मक परंपरा है। यह केवल शब्दों का खेल नहीं, बल्कि बुद्धि, कल्पना और लोक ज्ञान की अभिव्यक्ति है। पहेलियों का इतिहास हजारों वर्ष पुराना है और ये हर संस्कृति में किसी न किसी रूप में मिलती हैं।

भारत में पहेलियों की परंपरा वैदिक काल से ही दिखाई देती है। ऋग्वेद में अनेक मंत्र ऐसे हैं जो प्रतीकात्मक भाषा में गूढ़ अर्थ प्रकट करते हैं- इन्हें विद्वान् पहेलियों का ही प्राचीन रूप मानते हैं। उदाहरण के लिए, ऋग्वेद में एक मंत्र में कहा गया है- चार सींग, तीन पैर, दो सिर, सात हाथ... यह एक पहेली है, जिसका उत्तर 'यज्ञ' बताया गया है।

उपनिषदों और पुराणों में भी ऐसी अनेक गूढ़ कथाएँ और प्रश्नोत्तर मिलते हैं, जिनका उद्देश्य जिज्ञासा और चिंतन को जाग्रत करना था। समय के साथ पहेलियाँ लोक-संस्कृति का महत्त्वपूर्ण हिस्सा बन गईं। गाँवों में रात को चाँदनी में या आग के चारों ओर बैठकर बच्चे-बूढ़े सब मिलकर पहेलियाँ बुझाते थे। यह मनोरंजन का साधन तो था ही, साथ ही यह बच्चों की बुद्धि, तर्कशक्ति और शब्द-ज्ञान को भी विकसित करता था। लोकगीतों, कथाओं और लोक-कथाओं में पहेलियाँ सहज रूप से गुँथी मिलती हैं।

मध्यकाल में जब भक्ति और लोक काव्य का उत्कर्ष हुआ, तब कवियों ने भी पहेलियों को साहित्यिक रूप दिया। संत कवि अमीर खुसरो को पहेलियों का जनक माना जाता है। उन्होंने उर्दू-हिंदी मिश्रित भाषा में अनेक सुंदर और चतुराईपूर्ण पहेलियाँ रचीं- एक थाली में दो लड्डू, खाने वाला लाखों में एक। इसका उत्तर है-आँखें।

अमीर खुसरो की पहेलियाँ आज भी लोकजीवन में उतनी ही लोकप्रिय हैं। आधुनिक हिंदी साहित्य में भी पहेलियों ने बच्चों के साहित्य और पत्र-पत्रिकाओं में विशेष स्थान पाया। बाल भारती, नंदन, चंपक जैसी पत्रिकाओं में पहेलियाँ बच्चों को सोचने, हँसने और सीखने के लिए प्रेरित करती रहीं। आज भी टीवी, रेडियो और डिजिटल माध्यमों पर पहेली-क्विज़ कार्यक्रमों की लोकप्रियता बनी हुई है।

पहेलियाँ केवल मनोरंजन नहीं, बल्कि शिक्षा का भी सशक्त माध्यम हैं। ये बच्चों में रचनात्मकता, विश्लेषण क्षमता और भाषा-ज्ञान को बढ़ाती हैं। आधुनिक शिक्षा में रिडल गेम्स या क्विज़ इसी परंपरा की आधुनिक कड़ी हैं। पहेलियाँ केवल बच्चों के लिए नहीं, बल्कि वयस्कों के लिए भी ज्ञानवर्धन, मनोरंजन और मानसिक व्यायाम का महत्वपूर्ण साधन हैं। ये छोटे-छोटे प्रश्न या विचारोत्तेजक वाक्य होते हैं, जिनमें समाधान खोजने के लिए सोचने, तुलना करने और तर्क स्थापित करने की आवश्यकता होती है। उदाहरण के लिए, एक साधारण पहेली-

सफेद वस्त्र में रहता हूँ, बिना पंख के उड़ता हूँ, बिना पैरों के चलता हूँ, बताओ मैं कौन? उत्तर होता है- बादल।

इस प्रकार की पहेलियाँ न केवल भाषा के प्रयोग को रोचक बनाती हैं, बल्कि बच्चों को प्राकृतिक घटनाओं, सामाजिक पहलुओं, और वस्तुओं के बीच संबंध स्थापित करना भी सिखाती हैं।

भारत की प्रत्येक भाषा में पहेलियों की एक समृद्ध परंपरा विद्यमान है। संस्कृत से लेकर हिंदी, तमिल,

बंगाली, मलयालम और मराठी तक हर क्षेत्र की पहेलियाँ वहाँ की संस्कृति, विश्वास, तथा ऐतिहासिक घटनाओं से गहराई से जुड़ी हुई हैं। उदाहरण स्वरूप, उत्तर भारत की परंपरा में धार्मिक, सामाजिक, और लोक-जीवन से प्रेरित पहेलियाँ प्रचलित रही हैं, वहीं दक्षिण भारत में प्रकृति के विविध रूपों पर आधारित पहेलियाँ बहुत प्रसिद्ध हैं। हरियाणा की लोक भाषाओं में भी पहेलियाँ ग्राम्य जीवन, त्योहारों, खेत-खलिहान, और पारिवारिक घटनाओं पर आधारित होती हैं, जो सरल भाषा में गूढ़ संदेश देती हैं।

वर्तमान शैक्षिक परिप्रेक्ष्य में पहेलियाँ बच्चों को भाषा के सार्थक संदर्भ में उपयोग करने का अनोखा अवसर प्रदान करती हैं। न केवल ये भाषा के व्याकरणिक या शब्द-संपदा कौशल को बढ़ाती हैं, बल्कि बच्चों की तर्कशक्ति, सृजनात्मकता, अवलोकन शक्ति, और समस्या सुलझाने की क्षमता को भी प्रोत्साहित करती हैं। जब शिक्षक अपने पाठ्यक्रम में पहेलियाँ सम्मिलित करते हैं, तो ये शिक्षण प्रक्रिया को सजीव बनाकर बच्चों को आनंदपूर्वक सीखने के प्रति प्रेरित करती हैं।

आज के समय में एनसीईआरटी के नए पाठ्यक्रम में भी आज की पहेली को शामिल किया गया है। इसका उद्देश्य बच्चों को प्रत्येक दिन एक नई चुनौती प्रदान करना है। यह नवाचार शिक्षा के पारंपरिक तरीकों में एक क्रांतिकारी परिवर्तन लेकर आया है। 'आज की पहेली' न केवल बच्चों के सोचने की क्षमता को बढ़ाती है, बल्कि उन्हें दैनिक जीवन में छिपे रहस्यों, घटनाओं, और सामाजिक-सांस्कृतिक पहलुओं को समझने के लिए प्रेरित करती है। इससे बच्चों की रुचि पाठ्यपुस्तक में बनी रहती है और वे सीखने के प्रति उत्साहित रहते हैं। इससे उनके भीतर स्वाध्याय और सृजनशीलता का विकास होता है। उदाहरण स्वरूप, किसी विशेष दिन शिक्षक एक पहेली प्रस्तुत कर सकते हैं

चार पैर होते हैं, पर चलता नहीं; होता हूँ घर में, पर दरवाजा नहीं; बताओ मैं कौन? उत्तर- कुर्सी।

ऐसी पहेलियाँ बच्चों को सहज भाषा में सोचने की प्रेरणा देती हैं। इसके अलावा, पहेली के माध्यम से बच्चों में अपने परिवेश को ध्यानपूर्वक देखने, समझने और उसमें छुपे रहस्यों को खोजने की प्रवृत्ति विकसित होती है। ये न केवल पारंपरिक ज्ञान पर आधारित होती हैं, बल्कि समय के साथ आधुनिक विषयों पर भी आधारित होती जा रही हैं। आज के डिजिटल युग में भी बच्चों में पहेलियों के प्रति रुचि बनी हुई है। मोबाइल ऐप्स, वेबसाइट्स और सोशल-मीडिया पर भी तरह-तरह की पहेलियाँ उपलब्ध हैं, जो उन्हें किसी एक विषय पर गहराई से सोचने और ज्ञान वर्धन का अवसर प्रदान करती हैं।

शिक्षकों के लिए यह अनिवार्य है कि वे पाठ्यक्रम में पहेलियों को सम्मिलित कर बच्चों को न केवल उत्तर देने का अभ्यास कराएँ, बल्कि स्वयं भी पहेलियाँ बनाने के लिए प्रेरित करें। इससे बच्चों में सृजनात्मक लेखन की प्रवृत्ति विकसित होती है। जब वे स्वयं से पहेलियाँ रचते हैं, तो उन्हें भाषा की संरचना और उसका व्यावहारिक उपयोग भी सहजता से समझ में आता है। साथ ही यह अभ्यास उनके आत्म-अभिव्यक्ति कौशल को भी प्रबल

बनाता है। एक अच्छा शिक्षण वातावरण वह होता है, जहाँ बच्चे प्रश्न पूछने से न डरें, और उन्हें हर प्रश्न का समाधान सोचने का अवसर मिले।

अंततः पहेलियाँ केवल एक खेल नहीं, बल्कि समाज और संस्कृति की धरोहर हैं। ये बच्चों को न केवल ज्ञान का रोचक स्रोत प्रदान करती हैं, बल्कि उन्हें अपने परिवेश, संस्कृति और भाषा के प्रति गहरी समझ विकसित करने में भी मदद करती हैं। एनसीईआरटी का यह नवाचार बच्चों की सोचने-समझने की क्षमता को बढ़ाता है, जिससे उनका संज्ञानात्मक विकास होता है। इसलिए विद्यालयों में पढ़ाई के साथ-साथ पहेलियों को शामिल करके, बच्चों को समग्र दृष्टि से विकसित करने का प्रयास किया जाना चाहिए। इस तरह के अनुभव न केवल उन्हें आत्मनिर्भर बनाते हैं, बल्कि उनके सोचने की क्षमता, कल्पना शक्ति और सामाजिक ज्ञान को भी समृद्ध करते हैं। यही कारण है कि पहेलियाँ शिक्षा के क्षेत्र में अत्यंत महत्त्वपूर्ण स्थान रखती हैं।

पहेली मानव बुद्धि की खेल-भावना का सुंदर रूप है। वैदिक ऋचाओं से लेकर आज के डिजिटल युग तक, यह हमारी संस्कृति में ज्ञान, हास्य और चिंतन का सेतु बनी हुई है। पहेलियाँ केवल प्रश्न नहीं होतीं, वे बुद्धि का दीया जलाने वाली छोटी-छोटी चिंगारियाँ हैं।

हिंदी अध्यापिका
रामा विद्यालय सैक्टर-25, पंचकूला

पहेलियाँ

बच्चे, बूढ़े या हों जवान,
सभी का मन लुभाती हैं पहेलियाँ।

काम के प्रति उत्सुकता,
बढ़ाती हैं पहेलियाँ।

सोच का विकास व
विस्तार करती हैं पहेलियाँ।

काम की गुणवत्ता में
निखार लाती हैं पहेलियाँ।

मस्तिष्क को भी
मज़बूत बनाती हैं पहेलियाँ।

याद्दाश्त में सुधार
करती हैं पहेलियाँ।

तनाव को दूर करने में
सहायक हैं पहेलियाँ।

अमूर्त तर्क को बढ़ावा
देती हैं पहेलियाँ।

एकाग्रता को नियंत्रित
करती हैं पहेलियाँ।

व्याख्या कौशल का
विकास करती हैं पहेलियाँ।

सहयोग की भावना का
विकास करती हैं पहेलियाँ।

समस्या-समाधान के कौशल का
विकास करती हैं पहेलियाँ।

हर समस्या का निवारण
करना सिखाती हैं पहेलियाँ।

सच मानो तो जीवन जीना
सिखाती हैं पहेलियाँ।

कविता
प्राथमिक अध्यापिका
राप्रा विद्यालय, सराय अलावर्दी
गुरुग्राम हरियाणा

जगह नहीं, पूरा सिस्टम बदलना होगा

ऑटिस्टिक बच्चों के लिए सच्चा समावेश क्या है?

डॉ.राजीव वत्स

भूमिकाः ऑटिज़्म को नए नज़रिए से देखना

शिक्षा की दुनिया में ऑटिज़्म को समझना यानी यह मान लेना कि हर बच्चा अलग है और हर बच्चे को अलग तरह की मदद की ज़रूरत हो सकती है। ऑटिज़्म एक सीधी लाइन नहीं, बल्कि एक स्पेक्ट्रम है, जहाँ बच्चों की संचार शैली, व्यवहार और रोज़मर्रा की क्षमताएँ एक-दूसरे से बहुत अलग दिख सकती हैं।

डायग्नॉस्टिक एंड स्टैटिस्टिकल मैनुअल ऑफ मेंटल डिसऑर्डर्स (डीएसएम-5-टीआर) में बताए गए तीन 'लेवल्स ऑफ सपोर्ट' हमें यह समझने में मदद करते हैं कि किसी बच्चे को कितनी और किस तरह की सहायता चाहिए न कि वह कितना 'अच्छा' या 'कमज़ोर' है। ये लेवल किसी की क्षमता पर मुहर नहीं लगाते, बल्कि स्कूलों और परिवारों को सही तरह का सपोर्ट प्लान बनाने की दिशा दिखाते हैं।

लेवल्स ऑफ सपोर्टः लेबल नहीं, मदद का नक्शा

डीएसएम-5-टीआर में ऑटिज़्म के लिए तीन स्तर बताए गए हैं:

» लेवल 1 सपोर्ट की ज़रूरत (रिक्वायरिंग सपोर्ट)
» लेवल 2 काफ़ी ज़्यादा सपोर्ट की ज़रूरत (रिक्वायरिंग सब्स्टैंशियल सपोर्ट)
» लेवल 3 बहुत अधिक, लगातार सपोर्ट की ज़रूरत (रिक्वायरिंग वेरी सब्स्टैंशियल सपोर्ट)

ये लेवल दो मुख्य क्षेत्रों को ध्यान में रखकर तय होते हैं:

» सामाजिक संवाद बातचीत, इशारों को समझना, रिश्ते बनाना
» दोहराए जाने वाले व्यवहार और सीमित रुचियाँ-ज़्यादा रूटीन, बदलाव से दिक्कत, किसी एक चीज़ में बहुत ज़्यादा डूब जाना

महत्त्वपूर्ण बात यह है कि ये लेवल स्थायी टैग नहीं हैं; जैसे-जैसे बच्चा बड़ा होता है, सीखता है और वातावरण बेहतर होता है, उसकी सपोर्ट ज़रूरतें भी बदल सकती हैं।

लेवल-1: हल्की नज़र नहीं, समझदार सपोर्ट

लेवल-1 वाले कई छात्र बोलचाल में सक्षम होते हैं, लेकिन उन्हें 'कैसे' और 'कब' बात करनी है, यह सामाजिक नियम समझने में कठिनाई होती है। वे दोस्ती शुरू करने, समूह में शामिल होने या मज़ाक, इशारे, छिपे हुए अर्थ समझने में अटक सकते हैं।

कक्षा में ऐसे बच्चे अक्सर इन चीज़ों से जूझते हैं:

» प्लानिंग, कॉपी-किताब सँभालना, होमवर्क समय पर ख़त्म करना
» एक काम से दूसरे काम या एक पीरियड से दूसरे में शिफ्ट होना
» अचानक बदलाव आज पीरियड बदला, सब्स्टीट्यूट टीचर, टाइम-टेबल में फेरबदल

लेवल-1 के लिए स्कूल आधारित रणनीतियाँ-

लेवल-1 के बच्चों के लिए अक्सर टियर-1 और टियर-2 सपोर्ट (एमटीएसएस/आरटीआई के अंदर) काफ़ी मददगार साबित होता है।

» कक्षा में ही सभी बच्चों को स्पष्ट नियम, विज़ुअल रूटीन, चेकलिस्ट और उदाहरणों के साथ सिखाना (टियर-1 यूनिवर्सल सपोर्ट)।
» छोटे समूह में सोशल स्किल्स, लचीला सोच (फ्लेक्सिबल थिंकिंग) और एग्ज़ीक्यूटिव फ़ंक्शनिंग पर खास सत्र (टियर-2 टार्गेटेड सपोर्ट)

यूनिवर्सल डिज़ाइन फ़ॉर लर्निंग (यूडीएल) के सिद्धांत कई तरीक़े से समझाना, कई तरीक़े से जवाब देने की छूट और अलग-अलग तरह से बच्चों को जोड़े रखना लेवल-1 के बच्चों को बिना उन्हें 'अलग' दिखाए मज़बूत आधार देते हैं।

लेवल-2: ज़्यादा गहराई वाली, मगर सम्भव सहायता-

लेवल-2 वाले छात्र बोलने-समझने में ज़्यादा चुनौतियाँ दिखा सकते हैं जैसे सीमित शब्दावली, लंबे निर्देश समझने में दिक्कत, या बहुत स्क्रिप्टेड/दुहराव वाली भाषा। वे अक्सर रोज़मर्रा की स्कूल रूटीन लाइन में लगना, पीरियड बदलना, नई एक्टिविटी शुरू करना के लिए लगातार वयस्क मार्गदर्शन चाहते हैं।

कठोर रूटीन, बदलाव से डर, और संवेदनशील सेंसरी सिस्टम (आवाज़, रोशनी, स्पर्श से परेशानी) के कारण उनके लिए दिन के छोटे-छोटे बदलाव भी बहुत भारी साबित हो सकते हैं।

लेवल-2 के लिए व्यावहारिक सपोर्ट

यहाँ नियमित, संरचित और विज़ुअल सपोर्ट बहुत ज़रूरी हो जाता है।

» एएसी (ऑगमेंटेटिव एंड अल्टरनेटिव कम्युनिकेशन) पिक्चर कार्ड, कम्युनिकेशन बुक, टैबलेट-आधारित टॉकिंग डिवाइस बोलने के साथ या उसके स्थान पर एक मज़बूत सहारा बनते हैं।
» टास्क एनालिसिस किसी बड़े काम को छोटे-छोटे, साफ़ स्टेप्स में बाँटकर सिखाना; हर स्टेप पर मॉडलिंग, प्रॉम्प्ट और पॉज़िटिवरी-इन्फोर्समेंट देना।
» एमटीएसएस में टियर-2 और टियर-3 छोटे समूह या व्यक्तिगत सत्र, जिनमें अकादमिक और व्यवहार दोनों पर डेटा-आधारित, योजनाबद्ध हस्तक्षेप किए जाते हैं।

क्लास-रूम जितना अधिक अनुमानित (प्रिडिक्टेबल) और विज़ुअली स्पष्ट होगा टाइम-टेबल, रूटीन, नियम उतना ही लेवल-2 के छात्र सुरक्षित और तैयार महसूस

करेंगे।

लेवल-3ः गहन ज़रूरतें, गहन साझेदारी

लेवल-3 के विद्यार्थियों को जीवन के लगभग हर क्षेत्र में बहुत अधिक और लगातार सहायता की ज़रूरत होती है। कई बार वे बहुत कम बोलते हैं या बिल्कुल नहीं बोलते, और अपनी ज़रूरतें व्यक्त करने के लिए पूरी तरह एएसी या अन्य वैकल्पिक तरीकों पर निर्भर होते हैं।

सामाजिक बातचीत, बदलाव बर्दाश्त करना, और सेंसरी रेगुलेशन में गहरी कठिनाइयाँ उन्हें कक्षा, गलियारे, बस या मैदान हर जगह अतिरिक्त जोखिम और तनाव में डाल सकती हैं; सुरक्षा (सेफ़्टी) इस स्तर पर एक बड़ा फोकस बन जाती है।

लेवल-3 के लिए गहन और बहु-अनुशासनिक सपोर्ट

ऐसे विद्यार्थियों के लिए आमतौर पर एक बहु-अनुशासनिक टीम स्पेशल एजुकेटर, स्पीच-लैंग्वेज थेरेपिस्ट, ऑक्यूपेशनल थेरेपिस्ट, साइकोलॉजिस्ट, बिहेवियर स्पेशलिस्ट और परिवार मिलकर बहुत व्यक्तिगत (इंडिविजुअलाइज़्ड) प्लान बनाते हैं।

» हाईली स्ट्रक्चर्ड क्लासरूम- जहाँ शारीरिक जगह, रूटीन और गतिविधियाँ सब पहले से स्पष्ट और स्थिर हों।
» सेंसरी-इन्फ़ॉर्म्ड रणनीतियाँ- शांति के कोने, सेंसरी ब्रेक, रेगुलेटेड मूवमेंट, नॉइज़ कंट्रोल ताकि बच्चा रेगुलेटेड रह सके और सीखने के लिए तैयार महसूस करे।
» फ़ंक्शनल कम्युनिकेशन पर गहरा काम- 'मुझे यह चाहिए', 'मुझे यह पसंद नहीं', 'मुझे ब्रेक चाहिए'जैसे संदेश एएसी के माध्यम से भी सम्मानपूर्वक सिखाना।

एमटीएसएस के टियर-3 स्तर पर यह सारी गहन सहायता भी स्कूल की बाकी व्यवस्था से जुड़ी रहती है, ताकि छात्र, जहाँ संभव हो, साझा गतिविधियों और सामूहिक अनुभवों में शामिल हो सके।

इनक्लूज़नः जगह नहीं, पूरा सिस्टम

अक्सर इनक्लूज़न को केवल 'मेनस्ट्रीम कक्षा में बिठा देना' समझ लिया जाता है, जबकि असल समावेशन इससे कहीं बड़ा है। शोध और नीतियाँ स्पष्ट कहती हैं कि ट्रू इनक्लूज़न का मतलब है- पूरा सिस्टम बदलना। पाठ्यचर्या, मूल्यांकन, कक्षा का वातावरण और स्कूल की संस्कृति ताकि सभी बच्चे, जिनमें ऑटिस्टिक विद्यार्थी भी शामिल हैं, सम्मान के साथ सीख सकें।

मल्टी-टियर्ड सिस्टम ऑफ सपोर्ट्स (एमटीएसएस) और रिस्पॉन्स टू इंटरवेंशन (आरटीआई) इसी सोच पर बने हैं। पहले से ही पूरे स्कूल में यूनिवर्सल सपोर्ट देना, ज़रूरत पर टार्गेटेड और इंटेंसिव सपोर्ट की परतें जोड़ना, और यह सब डेटा के आधार पर करना, न कि अनुमान के आधार पर।

यूनिवर्सल डिज़ाइन फ़ॉर लर्निंग (यूडीएल) इस सिस्टम को और मज़बूती देता है। यूडीएल कहता हैः

» सीखने के कई रास्ते (मल्टिपल मीन्स ऑफ रिप्रेज़ेंटेशन)
» भाग लेने के कई तरीके (मल्टिपल मीन्स ऑफ एंगेजमेंट)
» जवाब देने और अपनी क्षमता दिखाने के कई तरीके (मल्टिपल मीन्स ऑफ एक्शनएंड एक्सप्रेशन)

इस तरह इनक्लूज़न कोई 'फिलॉसफ़ी की लाइन' नहीं रह जाती, बल्कि रोज़ की प्लानिंग, पढ़ाने के तरीके और सहयोगी संस्कृति का हिस्सा बन जाती है।

जब सपोर्ट सही बैठता है, तो बच्चे खिलते हैं

दुनिया भर के आँकड़े दिखाते हैं कि ऑटिज़्म की पहचान बढ़ रही है और अब बड़ी संख्या में ऑटिस्टिक बच्चे सामान्य स्कूलों में पढ़ रहे हैं। ऐसे में सवाल यह नहीं है कि 'उन्हें कहाँ बिठाएँ?' बल्कि यह है कि 'हम अपना सिस्टम कितना लचीला और मानवीय बना रहे हैं?'

शोध और स्कूलों के अनुभव बताते हैंः

» जब सपोर्ट बच्चे की असली ज़रूरत के अनुसार होता है, तो उसकी संलग्नता (एंगेजमेंट) बढ़ती है।
» जब एंगेजमेंट बढ़ती है, तो सीखने के रास्ते खुलने लगते हैं। बच्चा ज़्यादा प्रयास करता है, जिज्ञासा दिखाता है और खुद पर भरोसा महसूस करता है।
» जब सीखना सुलभ और अर्थपूर्ण हो जाता है, तो बच्चा सिर्फ़ 'मैनेज' नहीं करता, बल्कि सचमुच आगे बढ़ता और खिलता है।

आख़िर में, लेवल्स ऑफ सपोर्ट हमें एक ही बात याद दिलाते हैंः

सपोर्ट का स्तर बच्चे की क्षमता नहीं तय करता वह केवल यह दिखाता है कि हमारे स्कूल और हमारा समाज, उस बच्चे के लिए कितना बदले और अनुकूल बने।

हर बच्चे का अधिकार है

» पहुँच (एक्सेस)
» सम्मान (डिग्निटी)और
» अर्थपूर्ण भागीदारी (मीनिंगफुल पार्टिसिपेशन)

-इन्हें सुनिश्चित करना सिर्फ़ 'दया' या 'उदार सोच' नहीं, बल्कि हमारी पेशेवर और नैतिक ज़िम्मेदारी है।

सहायक निदेशक (शैक्षणिक)
माध्यमिक शिक्षा निदेशालय, पंचकूला

'बाल सारथी' आपका अपना पन्ना है। हम चाहते हैं कि इसमें आपकी रचनाओं को स्थान दिया जाए। आपने कोई मौलिक कविता, कहानी या अन्य विधा की रचना लिखी हो तो अपने अध्यापक की सहायता से हमें ई-मेल या डाक द्वारा भेजें। आपकी रचनाओं को प्रकाशित करके हमें प्रसन्नता मिलेगी।

'बाल सारथी' आपको कैसा लगा, जरूर लिखना, अगले अंक में ज्ञान-विज्ञान और मनोरंजन की सामग्री लेकर फिर आपसे मिलूँगी।

- आपकी यामिका दीदी

रामायण के स्थान पहेली –

1. रामजी की जन्मभूमि
2. सीताजी की जन्मभूमि
3. निषादराज गुह का राज्य
4. जहाँ रावण का राज्य था
5. जहाँ वानरों का राज्य था
6. रामसेतु का आरंभ स्थान
7. राम-भरत का मिलाप-स्थल
8. भारत-लंका के बीच बना पुल
9. जहाँ से सीताजी का हरण हुआ
10. जहाँ ऋषि भरद्वाज का आश्रम था
11. पर्वत, जहाँ सुग्रीव छिपकर रहते थे
12. लंका में सीताजी का निवास-स्थान
13. जहाँ रामजी ने शिवजी की पूजा की
14. जहाँ माता शबरी ने रामजी को बेर खिलाए
15. पर्वत, जहाँ से हनुमानजी संजीवनी बूटी लाए
16. सघन वन, जहाँ रामजी ने राक्षसों का वध किया
17. आश्रम, जहाँ सीताजी ने कुश-लव को जन्म दिया
18. वह सरोवर, जिसके पास रामजी की हनुमानजी से प्रथम भेंट हुई

उत्तर -1. अयोध्या, 2. जनकपुर, 3. शृंगवेरपुर, 4. लंका, 5. किष्किन्धा, 6. धनुषकोटि, 7. चित्रकूट, 8. रामसेतु, 9. पंचवटी, 10. प्रयागराज, 11. ऋष्यमूक पर्वत, 12. अशोक वाटिका, 13. रामेश्वरम्, 14. शबरी आश्रम, 15. द्रोणागिरि पर्वत, 16.दण्डकारण्य, 17. वाल्मीकि आश्रम, 18. पंपा सरोवर

पहेली-निर्माता :
प्रशान्त अग्रवाल
प्राथमिक विद्यालय डहिया
फतेहगंज पश्चिमी, ज़िला बरेली, उत्तर प्रदेश

अखबार

सुबह-सुबह घर में आता है,
रोज़ एक अखबार।
जिसमें आती दुनिया भर की,
देखो खबर हज़ार।।
रोज़-रोज़ दादा जी पढ़ते,
देकर पूरा ध्यान।
छोटी-बड़ी सभी खबरों को,
देते पूरा मान।।
हुआ देश में घटित क्या-क्या,
क्या कर रही सरकार,
सुबह-सुबह घर में आता है,
रोज़ एक अखबार।।

कहते दादा जी, 'तुम भी पढ़ लो,
पढ़ने में ही ज्ञान।'
पढ़े अगर अखबार सदा जो,
बढ़ता उसका ज्ञान।।
बुद्धिमान पढ़ने वाले को,
कहता यह संसार,
सुबह-सुबह घर में आता है,
रोज़ एक अखबार।।

बाल-पहेली, कविता लाता,
और कहानी खास।
बच्चो, तुम छोड़ो मोबाइल,
पढ़ो बैठकर पास।।
रंगीन पेज लेकर आता,
देखो हर रविवार,
सुबह-सुबह घर में आता है,
रोज़ एक अखबार।।

-बलबीर सिंह वर्मा 'वागीश'
राजकीय प्राथमिक पाठशाला
मोहम्मद पुरिया
खण्ड- रानियाँ, सिरसा, हरियाणा

प्राकृतिक इंजीनियर : बया पक्षी

बच्चो! अपने आसपास के पेड़ों पर कुछ घोंसले विशेष प्रकार के लटकते हुए देखे होंगे। ये घोंसले बहुत ही खूबसूरत दिखाई देते हैं। ऐसा लगता है कि ये किसी मशीन द्वारा बनाए गए हों या किसी ने इन्हें बुन दिया हो। अनुमान लगाइए... भला कोई क्यों बुनेगा? किसको पड़ी है घोंसले को बुनने की? ये घोंसले तो उसी ने ही बुने होंगे, जिसको इनकी ज़रूरत होगी।आइए, घोंसले की छानबीन करते हैं। लेकिन, इसके लिए हमें समय देना होगा।

अरे!...देखो-देखो, अभी-अभी एक सुंदर-सी चिड़िया घोंसले से निकलकर फुर्र हो गई है। क्या आप इस सुंदर चिड़िया को पहचानते हैं? नहीं...तो आज हम आपके लिए इस सुंदर-सी दिखने वाली चिड़िया की जानकारी जुटाकर लाए हैं।

इस प्यारी-सी चिड़िया को हम बया, बोया आदि नामों से जानते हैं। यह पक्षी आम चिड़ियों से भिन्न है। यह घरों में नहीं रहता, बल्कि पेड़ों की टहनियों पर अपने घोंसले बनाता है। इसके विशेष प्रकार के घोंसले आपको पेड़ों की टहनियों पर लटकते हुए दिखाई देंगे। ये घोंसले वर्षा, धूप, सर्दी और शिकारी पक्षियों से इनकी तथा इनके बच्चों की रक्षा करते हैं।

सुरक्षा की दृष्टि से प्रायः ये अपने घोंसलों का निर्माण पानी के किनारे लगे पेड़ों, खजूर के पेड़ों, ताड़ के पेड़ों तथा काँटेदार पेड़ों पर करते हैं। लालटेन की तरह लटकते हुए इनके घोंसले रात में बहुत सुंदर दिखाई देते हैं।

विशेष प्रकार के घोंसलों के निर्माण के कारण इन्हें वीवर बर्ड (बुनकर चिड़िया) और 'प्राकृतिक इंजीनियर' भी कहते हैं। ये समूह में रहना पसंद करते हैं। विभिन्न प्रकार के अनाज, कीट आदि इनका प्रमुख भोजन हैं।

डॉ. कमलेन्द्र कुमार
रावगंज, कालपी, जिला जालौन
उत्तर प्रदेश, पिनः 285204

गुरुजी सबसे प्यारे

गुरुजी सबसे प्यारे हैं,
ज्ञान-दीप उजियारे हैं।
अच्छी बातें हमें सिखाते,
जीवन के रखवाले हैं।

अ,आ,इ,ई पढ़वाते,
गीत सुनाकर मन बहलाते।
हँसते-हँसते ज्ञान कराते,
सपनों को सच बनवाते।

सत्य-प्रेम का पाठ पढ़ाते,
सबसे मिलकर रहना सिखाते।
मेहनत करना, आगे बढ़ना,
हर मुश्किल से लड़ना सिखाते।

गुरु पूर्णिमा का शुभ दिन आया,
मन में खुशियों का दीप जलाया।
फूलों से हम करें अभिनंदन,
गुरुजी को शत-शत वंदन।

गुरु का हम सम्मान करेंगे,
उनका हर उपकार धरेंगे।
ज्ञान-पथ पर आगे बढ़कर,
ऊँचा देश का मान करेंगे।

गोपाल कौशल भोजवाल
नागदा, ज़िला- धार (मध्य प्रदेश)

पहेलियाँ

1. राष्ट्रगान से भी पहले अब
   बोलो क्या गाया जाता?
   दो पद में, पद चार जोड़कर,
   होकर पूर्ण और भाता।

2. आनंदमठ उपन्यास किसकी कृति?
   जिसकी रचना राष्ट्रगीत बनी।
   उस रचना के शब्द-शब्द में,
   मातृभूमि की गंध सनी।

3. 'वंदे मातरम्' की 150वीं जयंती,
   कब से कब तक गई मनाई?
   राष्ट्रगीत ने राष्ट्रीय व्यापी,
   पहली बार ख्याति तब पाई।

4. लाल किले से प्रथम बार कब,
   'वंदे मातरम्' गया है गाया?
   'जन-गण-मन' से भी पहले जब,
   गायन का सम्मान है पाया।

5. पूरे 'वंदे मातरम्' गायन की,
   समयावधि क्या है बोलो?
   खड़े हो सावधान मुद्रा में,
   तनिक न इधर-उधर डोलो।

6. राष्ट्रगीत गायन में बाधा,
   अब पहुँचाना है अपराध।
   नया बना कानून कौन-सा?
   पूरी हुई पुरानी साध।

उत्तर- 1. राष्ट्रगीत 'वंदे मातरम्', 2. बंकिमचंद्र चट्टोपाध्याय, 3. 7 नवंबर 2025 से 7 नवंबर 2026 तक, 4. 15 अगस्त,2026, 5. 3 मिनट 10 सेकंड, 6. राष्ट्रीय गौरव अपमान निवारण (संशोधन) अधिनियम, 2026

- गौरीशंकर वैश्य विनम्र
117 आदिलनगर, विकासनगर
लखनऊ-226022

विज्ञान श्रृंखला

खेल-खेल में विज्ञान

दर्शन लाल बवेजा

आदरणीय अध्यापक साथियो व उत्साही विद्यार्थियो! खेल-खेल में विज्ञान श्रृंखला के अंतर्गत कुछ नई व रुचिकर विज्ञान तथा अन्य आवश्यक गतिविधियाँ आपके समक्ष प्रस्तुत हैं-

1. जलता कागज़, बदलता द्रव्यमान :

विद्यार्थियों ने इलेक्ट्रॉनिक तुला की सहायता से दहन प्रक्रिया का रोचक प्रयोग किया। सबसे पहले तुला पर चाइना डिश रखकर उसका द्रव्यमान लिया गया। फिर उसमें कागज़ रखकर कुल वजन नोट किया गया। इसके बाद कागज़ में आग लगाई गई। विद्यार्थियों ने देखा कि जैसे-जैसे कागज़ जलता गया, तुला पर दिखने वाला वजन कम होता गया। अंत में केवल राख बची और लगभग 3 ग्राम का अंतर दिखाई दिया।

इस प्रयोग में कागज़ का रासायनिक परिवर्तन हुआ। जलने पर कागज़ का अधिकांश भाग वायु की ऑक्सीजन के साथ अभिक्रिया करके कार्बन-डाइऑक्साइड, जलवाष्प तथा अन्य गैसों में बदल गया। ये गैसें वातावरण में फैल गईं, इसलिए तुला पर केवल राख का भार शेष रह गया। इस सरल प्रयोग के माध्यम से विद्यार्थियों ने दहन, रासायनिक परिवर्तन और पदार्थ के रूपांतरण को प्रत्यक्ष रूप से समझा।

2. चुंबकीय गुणों से सीधी खड़ी हुई पेंसिल:

विद्यार्थियों को विभिन्न विज्ञान उपकरणों और सामग्रियों की सहायता से अपनी रचनात्मक समझ के आधार पर एक विज्ञान मॉडल बनाने का अवसर दिया गया। विद्यार्थियों ने दो चुंबकों के ध्रुवों के आकर्षण प्रतिकर्षण गुणों का उपयोग करते हुए बिना किसी सहारे के केवल चुंबकीय गुणों से सीधी खड़ी पेंसिल का मॉडल तैयार किया। डिस्क मैग्नेट, रिंग मैग्नेट, कॉनिकल फ्लास्क, ट्यूनिंग फोर्क, पेंसिल तथा अन्य सामग्री की सहायता से पेंसिल को चुंबकीय लैविटेशन द्वारा संतुलित अवस्था में सीधा खड़ा किया गया। यह गतिविधि विद्यार्थियों की वैज्ञानिक समझ को खेल-खेल में रचनात्मकता और प्रयोग की ओर ले गई।

3. धागा, पेपर क्लिप और चुंबक का विज्ञान-खेल :

विद्यार्थियों ने एक बड़े रिंग मैग्नेट, पेपर क्लिप्स और सिलाई के धागे की सहायता से एक रोचक एवं आकर्षक विज्ञान गतिविधि तैयार की। प्रत्येक पेपर क्लिप के एक सिरे पर धागा बाँधकर उन्हें रिंग मैग्नेट पर चिपकाया गया। फिर विद्यार्थी गोल घेरा बनाकर बैठ गए और धागों को धीरे-धीरे अपनी ओर खींचते रहे। पेपर क्लिप्स चुंबकीय आकर्षण

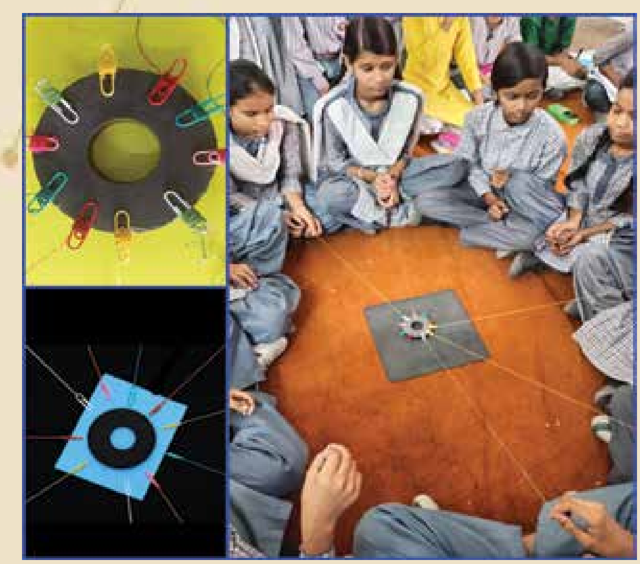

के कारण कुछ दूरी तक झूलते हुए चुंबक से जुड़े रहे। विद्यार्थियों ने इसे खेल की तरह विभिन्न समूहों में किया और देखा कि किस समूह की क्लिप्स सबसे अधिक समय तक चुंबक के आकर्षण में बनी रहती हैं। इस गतिविधि के माध्यम से विद्यार्थियों ने चुंबकीय बल, चुंबकीय क्षेत्र, आकर्षण तथा दूरी के प्रभाव को खेल-खेल में सीखा।

4. 'विश्व धरा दिवस' पर पेंटिंग प्रतियोगिता :

विश्व धरा दिवस पर विद्यार्थियों के लिए पेंटिंग एवं पोस्टर प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। विद्यार्थियों ने रंगों के माध्यम से पृथ्वी संरक्षण, पर्यावरण संतुलन, हरियाली, जल संरक्षण तथा स्वच्छता जैसे विषयों पर अपने विचार अत्यंत सुंदर ढंग से कागज़ पर उकेरे। प्रतियोगिता में विजयी छात्र-छात्राओं ने अपनी रचनाएँ मुख्य अतिथि, प्रधानाचार्या तथा अध्यापकों के साथ साझा कीं तथा उनका मार्गदर्शन और आशीर्वाद प्राप्त किया।

विद्यालय में विभिन्न अवसरों पर आयोजित ऐसी रचनात्मक गतिविधियाँ विद्यार्थियों को संबंधित दिवस के उद्देश्य और सामाजिक सरोकारों से जोड़ने का अवसर देती हैं। बच्चों को पोस्टर, पेंटिंग और ड्राइंग प्रतियोगिताएँ विशेष रूप से पसंद आती हैं, जो समसामयिक समस्याओं के प्रति उन्हें संवेदनशील बनाने के साथ-साथ समाज में जागरूकता फैलाने का भी प्रभावशाली माध्यम बनती हैं।

5. एचपीवी टीकाकरण जागरूकता एवं शिविर :

एचपीवी (ह्यूमन पैपिलोमा वायरस) टीकाकरण से संबंधित जागरूकता कार्यक्रम के माध्यम से छात्राओं ने एचपीवी तथा वैक्सीनेशन के महत्त्व को समझा। कार्यक्रम के प्रथम चरण में छात्राओं को एचपीवी संक्रमण, उससे होने वाले जोखिम तथा बचाव के उपायों के बारे में विस्तार से जानकारी दी गई। इसके बाद स्वास्थ्य विभाग की टीम ने छात्राओं एवं उनके अभिभावकों से संवाद करते हुए इस विषय से जुड़ी भ्रांतियों और अफवाहों का वैज्ञानिक तथ्यों के आधार पर निराकरण किया।

एचपीवी टीका भविष्य में सर्वाइकल कैंसर सहित एचपीवी संक्रमण से होने वाली अन्य गंभीर बीमारियों से बचाव में सहायक है। यह टीकाकरण किशोरियों के स्वास्थ्य सुरक्षा की दिशा में एक महत्त्वपूर्ण कदम है, जो उन्हें स्वस्थ और सुरक्षित भविष्य प्रदान करने में मदद करता है। अभिभावकों ने जागरूकता सत्र के पश्चात् अपनी सहमति देकर इस अभियान का समर्थन किया। तत्पश्चात् सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र के चिकित्सकों एवं एच.डब्ल्यू.सी. टीकाकरण टीम द्वारा विद्यालय परिसर में स्वास्थ्य शिविर लगाकर निर्धारित आयुवर्ग की छात्राओं का एचपीवी टीकाकरण किया गया। यह कार्यक्रम छात्राओं के स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता बढ़ाने और समाज में सकारात्मक संदेश देने की दिशा में अत्यंत सार्थक रहा।

6. प्राथमिक उपचार सेवा में विद्यार्थियों की सहभागिता :

विद्यालय में खेल-कूद तथा दैनिक गतिविधियों के दौरान विद्यार्थियों को कभी-कभी छोटी-छोटी चोटें या सामान्य स्वास्थ्य संबंधी समस्याएँ, जैसे पेट दर्द, हल्का बुखार, नकसीर, तेज खाँसी अथवा चक्कर आकर गिर जाना आदि हो जाते हैं। ऐसे समय विद्यालय में उपलब्ध फर्स्ट एड सुविधा उनके लिए तुरंत सहायता का माध्यम बनती है।

स्कूल हेल्थ एंबेसडर के रूप में मेरे द्वारा विद्यार्थियों को प्राथमिक उपचार उपलब्ध कराया जाता है। साथ ही, इस कार्य में सहयोग के लिए कुछ विद्यार्थियों को भी साथ रखा गया है, जो विद्यालय के फर्स्ट एड बॉक्स को व्यवस्थित एवं अद्यतन रखने की जिम्मेदारी निभाते हैं। वे समय-समय पर आवश्यक चिकित्सीय सामग्री की उपलब्धता तथा कमी-बेशी की जानकारी देते हैं।

यही विद्यार्थी ड्रेसिंग करने, ओआरएस घोल तथा ग्लूकोज देने और साप्ताहिक आयरन एवं फोलिक एसिड टैबलेट वितरण जैसे कार्यों में भी सक्रिय सहयोग करते हैं। इस प्रक्रिया से उनमें प्राथमिक चिकित्सीय ज्ञान के साथ-साथ सेवा, संवेदनशीलता और करुणा की भावना का भी विकास होता है।

अच्छा, तो आदरणीय अध्यापक साथियो एवं प्रिय विद्यार्थियो! आगामी अंक में फिर नई विज्ञान गतिविधियों के साथ मिलेंगे। आशा है कि आप उन्हें भी पसंद करेंगे और स्वयं करके देखेंगे।

साइंस मास्टर/ईएसएचएम
पीएम श्री राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, दामला
खंड- जगाधरी, यमुनानगर, हरियाणा

विज्ञान श्रृंखला

मम्मी की रसोई, मेरी प्रयोगशाला

पानी की कहानी - हाइड्रेशन और इलेक्ट्रोलाइट्स का विज्ञान

डॉ. मोनिका शर्मा

गर्मी के दिन में खेलकर घर लौटते ही जब मम्मी कहती हैं- पहले पानी पी लो, तो क्या आपने कभी सोचा है कि वे ऐसा क्यों कहती हैं? मम्मी को शायद इलेक्ट्रोलाइट्स शब्द न पता हो, लेकिन उन्हें यह ज़रूर पता होता है कि गर्मी में क्या पिलाना है। वे जानती हैं कि कब लस्सी देनी है, कब नींब-पानी और कब ओआरएस बनाना है। उनका पारंपरिक ज्ञान ही असली विज्ञान है।

क्या पानी सिर्फ प्यास बुझाने के लिए है, या इसके पीछे कोई बड़ा विज्ञान छिपा है? सच तो यह है कि पानी हमारे शरीर का सबसे बड़ा लाइफ सपोर्ट सिस्टम है।

हाइड्रेशन क्याहोता है?-

जब हमारे शरीर में पर्याप्त मात्रा में पानी होता है, तो उसे हाइड्रेशन कहते हैं। लेकिन यदि शरीर में पानी की कमी हो जाए, तो उसे डिहाइड्रेशन कहते हैं। डिहाइड्रेशन होने पर थकान महसूस होती है, चक्कर आ सकते हैं, सिरदर्द हो सकता है और शरीर कमज़ोर लगने लगता है। यही कारण है कि खेलते समय, यात्रा के दौरान या तेज़ गर्मी में बार-बार पानी पीना आवश्यक होता है।

जिस प्रकार बिना पानी के पौधे सूख जाते हैं, उसी प्रकार शरीर भी पानी की कमी से कमज़ोर पड़ने लगता है। हमारे शरीर का लगभग 60 से 70 प्रतिशत भाग पानी से बना है। हमारा खून लगभग 90 प्रतिशत पानी से बना होता है। इसलिए पानी केवल एक पेय नहीं, बल्कि जीवन की सबसे आवश्यक आवश्यकता है।

शरीर का कूलिंग सिस्टम-

हमारा शरीर हर समय काम करता रहता है- चलना, दौड़ना, पढ़ना, सोचना और खेलना; इन सभी कार्यों के लिए ऊर्जा की आवश्यकता होती है। इन कार्यों के दौरान शरीर में गर्मी उत्पन्न होती है। तब पानी हमारे शरीर के कूलिंग सिस्टम की तरह कार्य करता है।जब हमें पसीना आता है, तो वह त्वचा से वाष्पित होकर शरीर को ठंडा करता है। वास्तव में पसीना हमारे शरीर का प्राकृतिक एयर कंडीशनर है। यही कारण है कि गर्मी में अधिक पानी पीने की सलाह दी जाती है। अर्थात् हमारा शरीर स्वयं एक स्मार्ट कूलिंग मशीन है।

सिर्फ पानी नहीं, इलेक्ट्रोलाइट्स भी ज़रूरी-

आपने देखा होगा कि गर्मियों में मम्मी कभी नींबू-

पानी, कभी नमक-चीनी का घोल या ओआरएस देती हैं। ऐसा इसलिए, क्योंकि पसीने के साथ शरीर से केवल पानी ही नहीं, बल्कि कुछ आवश्यक लवण भी बाहर निकल जाते हैं। इन्हें इलेक्ट्रोलाइट्स कहा जाता है।मुख्य इलेक्ट्रोलाइट्स हैं- सोडियम, पोटैशियम, कैल्शियम और मैग्नीशियम। ये हमारे शरीर में माँसपेशियों को कार्य करने में, नसों के संकेत भेजने में, दिल की धड़कन को नियंत्रित करने में तथा पानी का संतुलन बनाए रखने में सहायता करते हैं।

ओरल रिहाइड्रेशन सॉल्यूशन-

जब किसी को दस्त या उल्टी होती है, तो डॉक्टर ओआरएस पीने की सलाह देते हैं। इसमें पानी, नमक और ग्लूकोज़ का सही संतुलन होता है। यह शरीर में खोए हुए पानी और इलेक्ट्रोलाइट्स को शीघ्र वापस लाने में सहायता करता है।

देसी पेय- असली सुपर ड्रिंक्स

आजकल बाज़ार में मिलने वाले रंग-बिरंगे सॉफ्ट ड्रिंक्स बहुत लोकप्रिय हैं, लेकिन उनमें अक्सर चीनी अधिक और पोषण कम होता है। इसके मुकाबले हमारे पारंपरिक देसी पेय शरीर को प्राकृतिक हाइड्रेशन, ऊर्जा और पोषण प्रदान करते हैं। मम्मी और दादी द्वारा दिए जाने वाले ये पेय वास्तव में नेचुरल साइंस ड्रिंक्स हैं।

नींबू पानी- प्राकृतिक ऊर्जा पेय-

गर्मियों में नींबू-पानी शरीर को तुरंत तरोताज़ा कर देता है। नींबू पानी गर्मियों का सबसे लोकप्रिय देसी पेय है। इसमें विटामिन 'सी' भरपूर मात्रा में होता है, जो हमारी प्रतिरक्षा प्रणाली को मजबूत बनाता है। नमक और चीनी मिलाने पर यह एक प्राकृतिक इलेक्ट्रोलाइट ड्रिंक बन जाता है, जो शरीर में सोडियम और ग्लूकोज़ का संतुलन बनाए रखता है। तेज़ गर्मी या थकान में नींबू पानी तुरंत ताज़गी प्रदान करता है।

नारियल पानी -प्रकृति का ओआरएस-

नारियल पानी को प्राकृतिक ओआरएस कहा जाता है, क्योंकि इसमें पोटैशियम, मैग्नीशियम और अन्य इलेक्ट्रोलाइट्स प्रचुर मात्रा में होते हैं। यह शरीर में पानी की कमी को तेज़ी से पूरा करता है तथा दिल और मांसपेशियों के कार्यों को संतुलित रखने में सहायता करता है। बीमारी या कमज़ोरी के समय डॉक्टर भी नारियल पानी पीने की सलाह देते हैं।

छाछ- पेट की कूलिंग मशीन-

छाछ केवल गर्मी दूर करने वाला पेय नहीं, बल्कि पाचन तंत्र का प्राकृतिक सहायक भी है। इसमें प्रोबायोटिक्स अर्थात् लाभकारी बैक्टीरिया होते हैं, जो हमारी आँतों को स्वस्थ रखते हैं और पाचन को बेहतर बनाते हैं। छाछ में पानी, कैल्शियम और इलेक्ट्रोलाइट्स भी होते हैं, जो शरीर में पानी की कमी पूरी करने में सहायता करते हैं। गर्मियों में छाछ शरीर का तापमान संतुलित रखने में भी सहायक होती है।

इसी प्रकार मीठी लस्सी शरीर को तुरंत ऊर्जा देती है, जबकि नमकीन लस्सी इलेक्ट्रोलाइट्स की कमी पूरी करती है। यह शरीर को ठंडक पहुँचाने के साथ-साथ मांसपेशियों को मज़बूत बनाने में भी सहायता करती है।

सत्तू ड्रिंक- देसी ऊर्जा बूस्टर-

सत्तू भुने हुए चने से बनाया जाता है और यह प्रोटीन, फाइबर तथा खनिज तत्वों का उत्कृष्ट स्रोत है। गर्मियों में सत्तू का घोल शरीर को लंबे समय तक ऊर्जा देता है और जल्दी भूख नहीं लगने देता। इसमें उपस्थित इलेक्ट्रोलाइट्स और जटिल कार्बोहाइड्रेट शरीर को धीरे-धीरे ऊर्जा प्रदान करते हैं। इसलिए इसे ग्रामीण भारत का प्राकृतिक ऊर्जा पेय कहा जाता है।

इन सभी देसी पेयों की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि ये केवल स्वाद ही नहीं देते, बल्कि विज्ञान के अनुसार शरीर को हाइड्रेशन, पोषण और ऊर्जा भी प्रदान करते हैं। यही कारण है कि हमारे पारंपरिक पेय आज भी आधुनिक ऊर्जा पेयों से कहीं अधिक लाभकारी माने जाते हैं।

बीआरपी (साइंस) मोरनी हिल्स
जिला- पंचकूला, हरियाणा

उड़ान : ग्रामीण भारत में युवा नवप्रवर्तक की नई उड़ान

ग्रामीण भारत के बच्चों में वैज्ञानिक सोच, जिज्ञासा और नवाचार की भावना विकसित करने के उद्देश्य से प्रारंभ की गई 'उड़ान' एक प्रेरणादायक शैक्षिक पहल है। इस पहल की शुरुआत युवा नवप्रवर्तक अपूर्व गुप्ता ने की है, जो हरियाणा राज्य के 20 से अधिक सरकारी एवं निजी विद्यालयों के विद्यार्थियों तक प्रयोगात्मक विज्ञान की शिक्षा पहुँचा रहे हैं।

विद्यार्थी अपूर्व गुप्ता का मानना है कि वैज्ञानिक जिज्ञासा प्रत्येक विद्यार्थी में स्वाभाविक रूप से होती है, किंतु उसे अभिव्यक्त करनेऔर प्रयोग करने का अवसर नहीं मिल पाता। 'उड़ान' इसी कमी को दूर करने का प्रयास है।

'उड़ान' का मुख्य उद्देश्य ग्रामीण विद्यार्थियों में पर्यावरण के प्रति जागरूकता, वैज्ञानिक जिज्ञासा तथा रचनात्मक सोच का विकास करना है। यह पहल उन बच्चों को विज्ञान का व्यावहारिक अनुभव प्रदान करती है, जिन्हें सामान्यतः केवल सैद्धांतिक शिक्षा ही प्राप्त होती है। अनुभवात्मक अधिगम (एक्सपीरिएंशियल लर्निंग) के माध्यम से विद्यार्थियों को इलेक्ट्रॉनिक्स की मूलभूत अवधारणाओं को सरल और रोचक ढंग से समझाया जाता है।

इसी उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए, मुंबई के धीरूभाई अंबानी इंटरनेशनल स्कूल के छात्र अपूर्व गुप्ता ने स्वयं 'स्वयं करें (डीआईवाई) इलेक्ट्रॉनिक्स किट' तैयार की हैं। इन किटों की सहायता से विद्यार्थी अपने हाथों से विभिन्न विद्युत परिपथ (सर्किट) बनाते हैं और यह समझते हैं कि विज्ञान का उपयोग हमारे दैनिक जीवन में किस प्रकार होता है। इन किटों की विशेषता यह है कि इन्हें प्रयोग में लाने के लिए किसी अतिरिक्त उपकरण की आवश्यकता नहीं होती।

अपने कार्य के सामाजिक प्रभाव को व्यापक बनाने के लिए अपूर्व गुप्ता ने सोसाइटी फॉर प्रमोशन ऑफ साइंस एंड टेक्नोलॉजी इन इंडिया तथा 'एक सोच नई सोच' जैसी गैर-सरकारी संस्थाओं के साथ मिलकर कार्य किया। इन संस्थाओं के सहयोग से उन्होंने हरियाणा के 20 से अधिक राजकीय एवं निजी विद्यालयों के विद्यार्थियों के लिए प्रयोगात्मक कार्यशालाएँ आयोजित कीं। इन कार्यशालाओं में विद्यार्थियों को इलेक्ट्रॉनिक्स की मूलभूत जानकारी, सरल विद्युत परिपथों का निर्माण तथा उनके दैनिक जीवन में उपयोग के बारे में व्यावहारिक प्रशिक्षण दिया गया।

कार्यशालाओं के उपरांत अपूर्व ने विद्यार्थियों, मार्गदर्शकों, विद्यालयों तथा सहयोगी संस्थाओं को 'उड़ान' किट उपलब्ध कराईं, ताकि सीखने की प्रक्रिया निरंतर जारी रह सके। इसके अतिरिक्त, 'उड़ान' की वेबसाइट पर वीडियो-आधारित शिक्षण-सामग्री उपलब्ध है, जिससे विद्यार्थी और शिक्षक किट का प्रभावी ढंग से उपयोग कर सकते हैं।

अपूर्व गुप्ता के इस सराहनीय योगदान के लिए उन्हें हरियाणा के सेठ जय प्रकाश पॉलिटेक्निक, दामला के प्रधानाचार्य द्वारा सम्मानित किया गया। साथ ही, शिक्षा के क्षेत्र में उनके उत्कृष्ट योगदान और नवाचार को देखते हुए उन्हें 'यंग चेंज मेकर अवॉर्ड' से भी सम्मानित किया जा चुका है।

ग्रामीण भारत में वैज्ञानिक चेतना और नवाचार की संस्कृति विकसित करने की दिशा में 'उड़ान' एक अनुकरणीय पहल है। यह अभियान न केवल विद्यार्थियों को विज्ञान से जोड़ रहा है, बल्कि उन्हें भविष्य के वैज्ञानिक, अभियंता और नवप्रवर्तक बनने की प्रेरणा भी प्रदान कर रहा है।

नए भारत का निर्माण हो रहा है, जहाँ एक विद्यार्थी अन्य विद्यार्थियों के बारे में सोच रहा है और उनके लिए कार्य कर रहा है।

दर्शन लाल बवेजा
साइंस मास्टर/ईएसएचएम
पीएम श्री राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय
दामला खंड जगाधरी, यमुनानगर, हरियाणा

2026

जुलाई-अगस्त माह के त्यौहार व विशेष दिवस

- 1 जुलाई- राष्ट्रीय चिकित्सक दिवस
- 3 जुलाई- आषाढ़ पूर्णिमा / गुरु पूर्णिमा
- 11 जुलाई- विश्व जनसंख्या दिवस
- 26 जुलाई- कारगिल विजय दिवस
- 31 जुलाई- शहीद ऊधम सिंह शहीदी दिवस
- 7 अगस्त- राष्ट्रीय हथकरघा दिवस
- 12 अगस्त- अंतरराष्ट्रीय युवा दिवस
- 15 अगस्त- स्वतंत्रता दिवस / हरियाली तीज
- 20 अगस्त- सद्भावना दिवस
- 26 अगस्त- मिलाद-उन-नबी / ईद-ए-मिलाद
- 28 अगस्त- रक्षाबंधन
- 29 अगस्त- राष्ट्रीय खेल दिवस

'शिक्षा सारथी' का यह अंक कैसा लगा? अपनी राय, विचार या सुझाव हमें अवश्य लिखें। लेखकों व शिक्षाविदों से अनुरोध है कि शिक्षा जगत् से जुड़े विषयों, योजनाओं, मुद्दों से संबंधित रचनाएँ व लेख हमें भेजें। अपने-अपने क्षेत्रों में होने वाली शिक्षा जगत् की गतिविधियों की रिपोर्ट भी हमें भेजें। हमारा पता- शिक्षा सारथी, तृतीय तल, शिक्षा सदन, सैक्टर-5, पंचकूला।
मेल भेजने का पता-
shikshasaarthi@gmail.com

A Book Club

"The power of a book lies in its power to turn a solitary act into a shared vision"

-Laura Bush

Ms. Rupam Jha

Books are magical, unravelling so many tales from far and wide. Stories of intrigue, rage, passion and crime all appear to be thrilling. The reader is enthralled and wants to share this with others, if only there was someone to share. That is possible in a Book Club. The purpose is to pool resources, disseminate,discuss and exchange books.

It is the love for books, for reading that binds the members together. The social interaction, the discussions on various aspects of human behavior, all add meaning and purpose to the club. Human emotions are understood by discussion method, every member getting a chance to express their viewpoints.

As part of Resource Integration in Foundational Literacy and Numeracy, the second chapter of National Education Policy 2020 on School Education, Book Clubs are recommended. A Book Club is a platform not just for pooling of resources but a platform for creating a linkage between the book and its readers. Basically, a group of people who read the same book and meet to discuss it. In the meeting itself, the next book to be read is decided upon.

A community of avid readers is created. In this era of individualism, social bonds develop and there is a reason to come together again. A bit of brainstorming about the book too is done. Reading for the joy of reading reduces stress. Books are never just text books or reference books. Story books open a wonderland for its reader.

A lending library offers a vast array of books to its members but it is too quiet a place. A Book Club has vibrancy

with active participation of members. If a member of the book club hosts the meeting, as at times the members take turns in hosting, then homes and hearts are opened. Then warmth and companionship light up homes.

Finger bites and coffee add charm to the book club meet. If the venue is a hired premise, then a change of physical space too will be welcomed by members. An excellent hobby, a book club allows for one to indulge in it as there is a timeline for finishing the book. Being part of a book club allows for some Me time as well because one makes time to read the book and to attend the meeting.

A common thread which binds the members together is the simple joy of reading. The mode for meeting may be Online or Offline, with offline being the preferred mode. The interval between meetings is generally one month. The genre of books may vary. It may be crime, drama, wars, voyages and the like. Both fiction and non-fiction are popular among readers. Be it literature or autobiographies, all may be read and discussed. Science-fiction, books which are spooky or ghoulish, supernatural phenomena may all be read and discussed by book club members.

Besides engaging literary discussions and social connections, vocabulary too improves in a Book Club. As does communication skills. To make the club meet livelier, members can put up one open ended question and that will lead to a healthy discussion.

Meeting up, not just for prattle, but with a purpose. This also broadens the horizon. Reading brings to you varied cultures, landscapes, food and habitat. With diverse perspective, an appreciation of human societies and mannerisms emerges in the mind.

Etiquette must be maintained at the Club meet. Punctuality is important as is also the need to inform of one's availability for the meet. Seating arrangements can be made accordingly by the host. To enhance the popularity of the club, maybe a friend can be brought along as a guest. Agenda, of the otherwise informal meeting, is to be the fulcrum of the event.

A Book Club is an excellent means to break down silos, to get a psychological boost. There is no shaming anyone as it is not a College Seminar where factual content is important. Here thoughts are given a voice. Reading as a fun filled activity is making a comeback. This also means a much-needed respite from social media. So, join a Book Club today, don't miss out on a fulfilling activity. You have books, you have friends, that makes for an awesome Book Club.

"A Book Club is like a Group Therapy without the depressing stories"

Senior Specialist
SCERT Haryana, Gurugram

A Childhood Measured by Monsoons

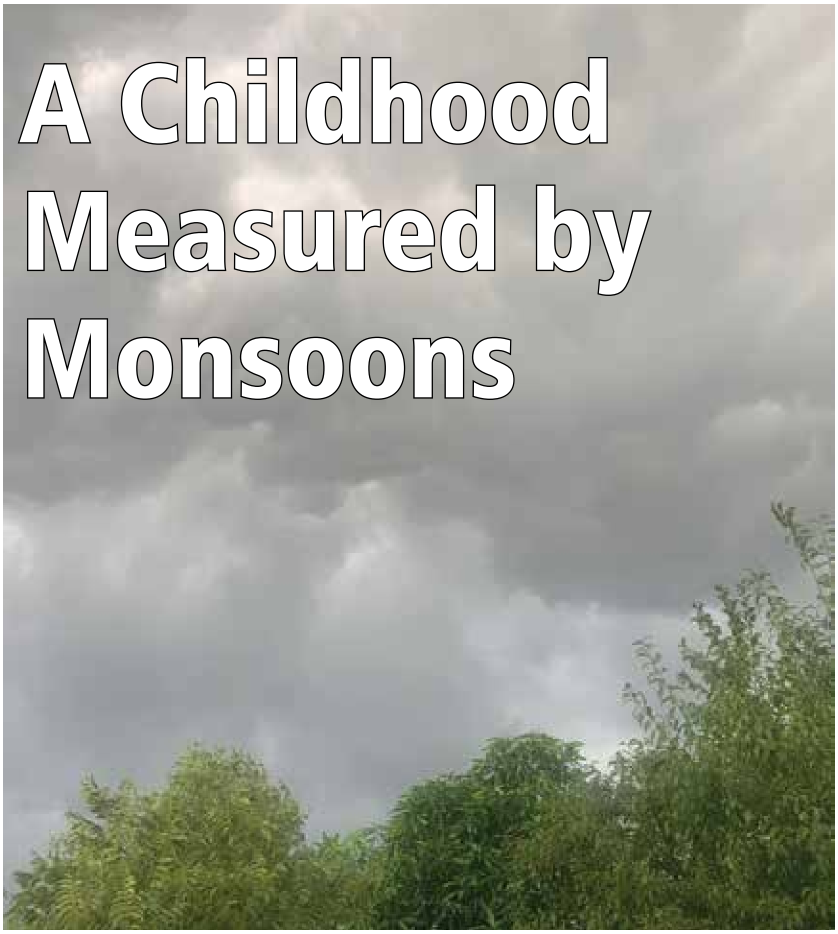

Anita Thakur

The First Rain

The first monsoon shower arrived this morning, and with it came a voice I haven't heard in years.

"Wake up, children... the monsoon is here!"

That was my father's annual announcement. Sometimes he would gently pat our cheeks awake, his excitement greater than ours. The arrival of the rains wasn't merely a change of weather—it was a celebration.

Before we left for school, he would remind my mother to hand us our brand-new Duck back raincoats, shiny school bags, and rubber shoes, all carefully bought during his yearly shopping trip to Delhi's Sadar Bazaar. Those little things carried the fragrance of new beginnings.

Of course, the rain often had plans of its own. On days when the downpour was relentless, we left our rubber shoes at home and wore simple flip-flops to school instead. Mud and water splashed up with every step.

By the time we reached school, the backs of our crisp white uniforms were splattered with muddy streaks and speckles, as though the road had left its signature on them. We would turn around to inspect one another's uniforms and burst into laughter because every one of us looked exactly the same.

My grandmother had a language of her own for the skies. Whenever dark, swollen clouds gathered, she would smile and say, "Jamun upak deaaye."To her, the clouds looked as ripe and deep as jamuns ready to be picked.

The kitchen would soon come alive. Mother fried crisp pakodas while the earthy fragrance of rain drifted through the windows.

Around the same time, our uncle from our maternal village in Himachal would arrive with baskets of juicy desi choosne wale mangoes, fresh patrod made from arbi leaves, dhiun, and ambada for pickles.

Every corner of the house smelled of love, rain, and home.

The Call of the Village

But for us six siblings, the first monsoon showers announced something even more exciting—a journey to our ancestral village in Punjab. Nestled in the foothills of the Shivaliks, about twenty-five kilometers from Hoshiarpur in the Kandi belt,

it was the place where some of our happiest childhood memories were made.

The excitement began with the first monsoon rain in Chandigarh and the anticipation of the bus ride to the village. Sometimes the downpour was so heavy that the seasonal rivulets, which we called choes, would suddenly swell into raging torrents. Our bus would wait for hours until the waters subsided enough for a safe crossing. We children never complained. Every delay only added to the adventure.

And then began what we eagerly awaited all year—our mango party.

Mango Summers

Before sunrise, armed with little baskets and buckets, we accompanied our grandfather or uncles into the orchards to collect the precious tapka—sun-ripened mangoes that had fallen naturally during the night.

Almost every home in the village had its own orchard. The trees weren't just trees; each had a personality and a name, often based on its appearance, flavour, or the person who had planted it.

Everyone knew which tree produced

the sweetest fruit and which one's mangoes ripened first.

There was an unwritten code of respect. No one ever trespassed into another family's orchard. Yet neighbours would lovingly arrive with baskets from their own trees, proudly insisting that their mangoes were the sweetest in the entire area. It was their affectionate way of welcoming us city children.

Breakfast in those days wasn't cereal or toast—it was unlimited mangoes.

Each of us sat with a bucket full of freshly washed mangoes soaking in cool water. Before taking the first sip, we were taught to squeeze out a little juice near the stem into the water. That sap was believed to be acidic. If swallowed, it could trigger a violent coughing spell, and if it touched the skin, it might leave dark stains for weeks.

The air was warm and humid, and eating mangoes was gloriously messy. To save our clothes from stubborn yellow stains, we children were made to sit for the feast wearing nothing more than our bloomers. Cousins from the village joined those of us visiting from the city, and together we competed over who could eat the most.

The mangoes themselves were a celebration of colour—green, golden yellow, orange, blushed pink, and deep red. These were the old desi varieties, long before grafted favourites like Dussehri, Langra, Chausa, Safeda, and Totapuri became common there.

Every tree had a flavour of its own. Nature's generosity was boundless. If a mango happened to be less sweet than expected, it was simply tossed aside without a second thought. Surrounded by such abundance, we never thought about waste.

Grandmother also preserved the season in her own magical way. Fresh mango pulp was spread on greased steel thalis and left to dry in the sun until it became silky sheets of homemade aampapad, as soft and thin as a rumal roti.

Before we returned home, she

carefully packed these golden delicacies so that summer travelled back with us.

Monsoon Nights

Our grandparents' home seemed made for large families. During the monsoon holidays, the spacious courtyard transformed into a giant open-air bedroom. Row upon row of woven jute charpais were laid out under the stars. Each was topped with a khind—a thick handmade mattress stitched with rows of running stitches; its filling made from layers of old clothes and covered with sturdy cloth. A clean white sheet completed the bed, while a warm handwoven cotton khesi kept us snug through the night.

Sleeping beneath a sky full of stars, listening to the chorus of crickets and the distant rumble of thunder, felt magical. But monsoon nights had a way of surprising us. Quite often, rain would begin after everyone had settled in. Suddenly the entire household would spring into action. Each person carried his or her own charpai and bedding into the large covered verandah. The younger children were helped by older siblings while the elders supervised the cheerful midnight migration.

Once under shelter, sleeping arrangements no longer mattered. We simply found the nearest empty space, paired up with whoever was beside us, pulled our khesis over ourselves, and drifted back to sleep.

Morning always brought renewed excitement. Overnight rain meant another dawn in the orchards, our little baskets filling once again with freshly fallen tapka mangoes.

After our mango feast, if it had rained during the night, the khadd beside our grandparents' land would be roaring with fresh mountain water. We children rushed there without delay, laughing as we splashed, floated, and swam in the gushing stream. Sometimes the water reached our waists, making us feel like fearless adventurers.

Someone invariably overindulged in mangoes and ended up with an upset stomach. The family remedy was as traditional as the feast itself. The mothers kept a bucket of thin kachcha lassi ready—just a little milk mixed with plenty of water. Each child was handed a glass after the mango feast. It was believed to cool the body, balance the sweetness, and keep stomach troubles away. We drank it obediently, never questioning the wisdom of our elders.

Back in Chandigarh, another favourite ritual awaited us. We folded paper boats and raced them along the little streams flowing beside the roads. Our entire Z-street echoed with children's laughter as we splashed through puddles and invented games in the rainwater.

We returned home soaked to the skin, convinced that the first rain washed away the summer's prickly heat.

And somehow... it always did.

Closing Reflection

Today, whenever the cool breeze carries the fragrance of the first rain, I am no longer standing in the present. I am once again that carefree child—hearing my father's joyful call, watching my grandmother read the skies, breathing in the aroma of my mother's pakodas, gathering fallen mangoes at dawn, sleeping beneath star-filled skies, and waking to another day of simple, shared happiness.

Children today may have comforts we never imagined, but I often wonder whether they will ever know the incomparable joy of waiting for the first monsoon shower, racing paper boats, gathering tapka mangoes at sunrise, or sleeping in the open courtyard surrounded by an entire family. Those monsoons did far more than quench the thirst of the earth. They nourished our hearts, strengthened family bonds, and gifted us memories that no passing season can ever wash away.

Some childhoods are measured in years.

Mine was measured in monsoons.

Freelance Poet and Writer
anitathak@gmail.com

The Canvas of Every Child

Dr. Nirmal Gulia

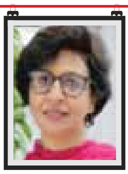

Where Children Find Their Own Sky: Nurturing Potential with Heart, in their own Time, in their own Way.

Imagine a classroom in Haryana during the time of golden morning. On one side, a girl is humming a folk song and at the same time, demonstrating the water cycle on the reverse side of her notebook. At her elbow a boy is silently constructing a model of a bridge out of the odds and ends of matchboxes, putting into tangible form a chapter on forces and pressure. And close to the window, a child with a learning difference is working on a tablet, with an AI-enhanced reading aid, listening to the textbook paragraph read aloud - words finally becoming clear.

It is no dream. This is how our classrooms may appear. Something extraordinary is always occurring in the silent parts of our classrooms and our homes. We find a child lost in tracing the lines in the dust, another asking endless 'Why' questions, one silently observing everything around—these are not distractions from learning; they are learning.

Children are not merely growing up--they are growing out. And there is a sky of possibilities in every child, and it cannot be forced open, but must be discovered.

Every Child is More Than What We See

At the root level, we often fall into the habit of defining children through marks, ranks, and performance. But a child is far more than a report card.

A child who struggles to read may be a deep thinker.

A child who talks less may be observing more than we realize.

A child who cannot write neatly may think beautifully.

A child who questions everything may be preparing to change something.

All children can learn- only the pace and the path are different.

A classroom does not have to be

a silent and fearful place- it is to be a living place full of inquisitions, questions and interactions.

THEINVISIBLECURRICULUM-WHAT CHILDREN LEARN.

Art of Noticing: The best tool of a teacher.

Noticing is simple, yet powerful:

» Who completes his work fast and then assists others?
» To whom is it easier to draw than write?
» Who falters, and attempts anew?

As we listen to children, we begin to truly educate them.

A teacher who notices sends a message to all of the children: "You matter." Education can only be real when it connects to life-talks about life. It becomes joyful-a plaything and when learning becomes joyful, it becomes the foundation of education.

Children do not have to be compelled to learn; when learning is a pleasant affair they will start pulling themselves up.

The student in Class VI is not ornamenting a Geography lesson when she sketches the course of the river Yamuna as it flows off to the Gangetic plains. She is geographically thinking. She is mentally geometrical. She literally is painting with knowledge.

Children should not be made to read about plants, but rather grow them. They can measure their classroom, rather than memorizing measurements.

» Imagination can be built through a mere storytelling circle.
» Confidence can be built through group discussions.
» Learning can be related to life by taking walks around the locality.
» Collaboration can be fostered by peer activities.

Change does not necessarily require radical reforms- change starts with small, significant steps in the normal classrooms through embracing some

practices:

» The 'Wonder Wall'- Devote a little area to which children can stick their questions--however simple or odd they may be. This creates an interest and demonstrates that all questions count.
» 'My Way of Learning' Time- Once a week give the child a choice on how he/she wants to express learning; by drawing, speaking, acting, and writing. This respects individuality.
» Circle Time Conversations Sit and just chat - about feelings, experiences or ideas. This creates emotional strength and bond.
» Peer Canvas- Children teach one another. The child who understands fractions through origami teaches the child who only understands fractions abstractly.
» Learning from Surroundings -Turn the surrounding world - fields, markets, homes - into living classrooms. This renders learning realistic and relatable. Experiential classroom produces learners with the ability to relate knowledge to life.

Ask at the end of the day:

"What did you like learning today?"

"What was difficult?"

Education should change the focus of 'What to think' to 'How to think'.

Children should not be led, but ruled. Instructions must be more like mentoring, rather than coercion:

» Encourage, don't impose
» Suggest, don't force
» Pass by, do not rush to pass.

A child who is keen on telling stories is able to tell stories in assembly.

A well-organized child can guide small group activities.

Leadership is effective when it nurtures and not when it dictates. Excessive control is a door bar. Too much control closes doors. Too much freedom without support creates confusion.

The balance lies in walking with the child.

BIG CHANGE USUALLY STARTS WITH SMALL WORDS.

"You can try."

"I believe in you."

"It's okay to make mistakes."

These phrases are free words--but they create trust which endures forever. Such a slight boost can make a lifetime.

Children learn confidence when their voice is heard.

Children learn fear when they are constantly judged.

Children learn curiosity when their questions are welcomed.

Children learn silence when they are ignored.

Children are able to learn best when they feel secure, not when they are judged. When a child who is unable to write a coherent paragraph is asked to explain the same thing to a younger

child, he or she can be amazingly clear in his or her comprehension. When a child obtains low marks in a test on trigonometry, he or she, may correctly use trigonometry principles. When the assessment measures only one output, it is not measuring the child, it is measuring the assessment.

The question then is not 'what we teach, but how we make children feel as they learn'.

When classrooms become spaces of inquiry, children become thinkers—not just test-takers.

Am I evaluating what I taught, or what the child knows? Is it speed, or depth I measure? Am I honoring memory, or the power to relate and utilize? Is it the child I see before me, or am I judging him/her by a supposed ideal? Honest answers to these questions are the beginning of transformed practice.

Do we help children to discover themselves or do we demand that they be put into a predetermined mold? A HUGE REFLECTION?

Shyamalan (2013) admonishes against molding children in your own image but assists them to find theirs.

LET EACH CHILD HIS/HER OWN SKY FIND.

Each child bears a spark. Some are early shiners, some late--but all in all. We have no business to make comparisons of lights, but to safeguard all fires.

When we coordinate our efforts with care, understanding and timely support, children feel at home.

LET THE CHILDREN BE ALLOWED TO GROW WITHIN, THEY RISE, THEY CREATE, AND THEY INSPIRE. It is about nurturing complete human beings—confident, compassionate, and ready to find and create their own path.

If we pause long enough to truly see, we will realize: children are not just growing up… they are developing.

A teacher does not sculpt, but is like a gardener, providing conditions under which growth can occur. Gently, but firmly, NEP 2020 replaces this with another metaphor: the teacher as a gardener.A gardener does not give a plant a form. He interprets the ground, modulates the sun, eliminates impediments, and provides the environment where the plant can develop into itself.

NEP 2020 has given us the mandate Art provides us with the way. Empathy gives us the compass. Technology gives us new tools and resources.

And the children--they are all different, they are all complete--give us the reason.

The most powerful classrooms are not the most advanced—they are the most accepting-They Should Feel Like Home.

"What we teach children to love and admire will be of more consequence to them than all we make them learn." — John Ruskin

Love of learning is the most future-prepared skill.

Lecturer in English
DIET Machhrauli, Jhajjar

Views of Vivekananda

Manoj Vashishtha

Introduction: An Epic Etched on the Brow of Time

Upon the infinite horizon of Indian history, certain constellations arise whose brilliance transcends the boundaries of time, illuminating the path of humanity for ages to come. Swami Vivekananda is one such resplendent sun, who, through his visionary rays, not only annihilated the darkness of India's ignorance but also introduced the entire world to the eternal and universal light of 'Vedanta'. He was not merely a saffron-clad monk; he was the progenitor of spiritual nationalism, a pioneer of social reform, and a visionary who dreamt of reinstating India as the 'World Teacher' (Vishwa Guru). His being a 'Universal Victor' did not signify the conquest of territories through weaponry, but a profound victory over the global psyche through the strength of his invincible ideas, compassion, and wisdom.

1. The Clarion Call of Chicago: The Dawn of Global Consciousness

The formal clarion call of Swami Vivekananda's global victory was sounded on September 11, 1893, at the 'Parliament of the World's Religions' in Chicago. It was not merely a speech, but the roar of a dormant Indian soul. When he stood upon the dais and uttered the magical words, "Sisters and Brothers of America," a crowd of seven thousand rose in a two-minute standing ovation. This was not just an address; it was the global manifestation of the millennia-old Indian ethos of 'Vasudhaiva Kutumbakam' (The World is One Family).

Through logic and evidence, he proved that Hinduism is not a dry collection of rituals but a scientific, rational, and liberal way of life. He clarified that just as all rivers eventually merge into the ocean, so do all the various paths and sects of the world ultimately lead to the same Divine. This declaration uprooted the arrogance of the West, which then perceived Eastern civilization as 'superstitious' and 'uncivilized'. Vivekananda taught the world the lesson of tolerance and universal acceptance—a lesson the turbulent world of today requires most urgently.

2. Educational Philosophy: The Grand Sacrifice of 'Man-Making'

As an educationist, the views of Vivekananda resonate as the very soul of today's 'National Education Policy' (NEP 2020). For him, education was not a lifeless accumulation of information in the brain. He explicitly stated: "Education is the manifestation of the perfection already existing in man." His educational philosophy was based on 'five-dimensional' development:

Intellectual Excellence: Founded upon logic and science.

Physical Prowess: For high ideals cannot be executed without "muscles of iron and nerves of steel."

Ethical Purity: To render the student a person of character and integrity.

Self-Reliance: Education that teaches an individual to stand on their own feet.

Social Consciousness: Rendering the individual responsible toward society.

He prioritized 'Character Building' over mere bookish knowledge. He believed that if education does not make us sensitive toward the downtrodden, it is utterly futile.

3. Social Revolution: Rejection of Dogma and Service to 'Daridra Narayana'

Swami Vivekananda was a great egalitarian. He struck a formidable blow against the social inertia and evils like untouchability prevalent at the time. His revolutionary maxim was—"Birth is nothing; environment and action are everything." Rejecting the pride of caste superiority, he established 'Humanity' as the supreme caste.

He brought the Divine out from the confines of temples and idols and consecrated Him as 'Daridra Narayana' (God in the form of the poor). He warned the educated class that any person who, having been educated at the expense of the poor, pays no heed to them, is a 'traitor' and 'ungrateful'. "Service to man is service to God"— this mantra remains the greatest guiding light in the field of social service. For him, a true society was one where even the person in the last row possesses equal opportunities for knowledge, wealth, and dignity.

4. The Synthesis of East and West: A Global Bridge

Vivekananda provided the world with a new 'Global Vision'. He observed that the West possessed 'Science and Organizational Power' but lacked peace; whereas India possessed 'Spiritual Peace' but suffered from material poverty. He emphasized a synthesis of both. He desired that every home echo with the Upanishads while simultaneously housing state-of-the-art scientific laboratories. He advocated learning from Western progress but was a staunch opponent of severing one's cultural roots. This equilibrium establishes him as a 'Modern Monk'.

5. Youth Power: The Invincible Energy of Nation-Building

Vivekananda's deepest faith resided in the youth power of India. He considered the youth to be a powerhouse of 'infinite energy'. His core mantra was— "Strength is life, weakness is death." He called upon the youth to renounce mental cowardice and recognize their inner strength.

His five-fold formula for the youth remains worthy of being etched in letters of gold:

Fearlessness: Fear is the root cause of all sorrows and evils.

Self-Confidence: Faith in oneself is synonymous with faith in God.

Concentration: Concentration is the only key to open the locked doors of knowledge.

Continence and Self-Control: The conservation of energy builds character.

Dedication to the Goal: "Arise, awake, and stop not till the goal is reached."

6. The Guru-Disciple Tradition: The Influence of Ramakrishna Paramahansa

The personality of Vivekananda was sculpted under the shadow of his Guru, Shri Ramakrishna Paramahansa. The 'realization' of Paramahansa played a vital role in transforming the rationalist 'Narendra' into the spiritual 'Vivekananda'. The Guru taught that religion is not a subject of debate, but a subject of direct experience. This initiation gave Vivekananda the confidence to stand undaunted on the Chicago stage.

7. Vision 2026: From Education to Nation-Building

Implementing Swamiji's vision in the context of education is our solemn resolve. Under 'Vision 2026', our goal is not merely to prepare students for examinations but to craft them into 'Complete Human Beings'.

Digital Literacy and AI: Aligning students with modern technology in accordance with Swamiji's scientific vision.

Yoga and Mental Health: Practicing 'Karmayoga' for liberation from examination stress.

Community Service: Engaging in social service through literacy and cleanliness drives at the local level.

8. Conclusion: The Timeless Vivekananda

In a brief lifespan of only 39 years, Swami Vivekananda accomplished work that would take centuries to achieve. He remains among us today as a 'torch-bearer'. His philosophy does not belong to a single religion or sect, but to the whole of humanity.

Today, as India marches toward 'Developed India @ 2047', the thoughts of Vivekananda are the foundation upon which the edifice of a capable, prosperous, and cultured nation will be built. It is the duty of us all that we do not confine his ideas to libraries alone, but manifest them in our conduct.

"Strength is Life." Let us all unite to build the India of this brave monk's dreams.

Educationist
Government Senior Secondary School Rewari, Haryana

Monsoon: A Season of Memories and Emotions

Dr Vijay Garg

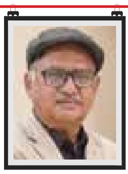

Among India's many seasons, the monsoon—or Sawan—holds a special place in people's hearts. It is much more than a period of rainfall; it is a season that awakens memories, deepens emotions, celebrates nature, and strengthens cultural traditions. The first drops of rain do not merely quench the thirst of the earth; they also revive cherished moments hidden deep within our hearts. The fragrance of wet soil, lush green landscapes, melodious folk songs, colorful swings, and gentle showers create an atmosphere that is both refreshing and nostalgic.

One of the greatest attractions of Sawan is its breathtaking beauty. After months of scorching summer heat, dark clouds gather in the sky, and rain transforms the landscape. Dry fields become green, rivers and ponds fill with water, birds sing joyfully, and the entire environment comes alive. This transformation does not only delight the eyes but also brings peace and happiness to the human mind. Nature seems to celebrate life in its purest form.

Sawan is also a season of memories. Many people fondly remember their childhood days of playing in the rain, sailing paper boats through puddles, laughing with friends, and listening to grandparents' stories while enjoying hot tea and crispy snacks at home. As people grow older, these memories become even more precious. A single shower can transport us back to those carefree days, reminding us that happiness often lies in life's simplest moments.

The monsoon is deeply rooted in India's cultural and spiritual heritage. The month is considered sacred for the worship of Lord Shiva, with millions of devotees visiting temples, observing fasts, and participating in pilgrimages. Festivals such as Hariyali Teej, Nag Panchami, and Raksha Bandhan are celebrated during this season, bringing families and communities together. These festivals are not merely religious occasions but also opportunities to strengthen relationships, express gratitude, and preserve age-old traditions.

In Indian literature, music, and art, Sawan has always symbolized love, longing, hope, and reunion. Poets have described the monsoon as a messenger of romance as well as separation. Folk songs celebrate the joy of swinging beneath green trees, the excitement of meeting loved ones, and the beauty of rain-soaked landscapes. For centuries, artists and writers have found endless inspiration in the sights and emotions of the rainy season.

In today's fast-paced digital world, people often spend more time in front

of screens than in the company of nature. The monsoon gently reminds us to slow down, step outside, and reconnect with the world around us. Watching raindrops fall from a window is comforting, but walking in a garden after a shower, listening to birds, or simply breathing in the fragrance of wet earth offers a deeper sense of calm and mindfulness. Sawan encourages us to rediscover the simple pleasures that modern life often makes us overlook.

The rainy season also teaches an important lesson about resilience and renewal. Just as the parched earth becomes green again after receiving rain, human life too can recover from difficult times. Every rainfall carries a message of hope—that no period of hardship lasts forever, and every dry spell is eventually followed by new beginnings. The monsoon reminds us that change is a natural part of life and that hope often arrives quietly, like the first drops of rain.

At the same time, Sawan reminds us of our responsibility toward the environment. Climate change, deforestation, pollution, and the depletion of water resources threaten the balance of nature. If these challenges continue unchecked, future generations may never experience the beauty of the monsoon as we know it today. Protecting forests, conserving water, reducing pollution, and planting trees are not merely environmental duties but essential steps toward preserving the emotional and cultural heritage associated with the rainy season.

Ultimately, Sawan is far more than a month on the calendar. It is a celebration of emotions, relationships, memories, and the enduring bond between humanity and nature. It refreshes not only the earth but also the human spirit, reminding us to cherish our loved ones, appreciate nature's beauty, and remain hopeful even during life's most challenging moments. Every year, the monsoon returns with fresh rain, but it also brings something even more valuable—the opportunity to relive old memories while creating beautiful new ones.

Retired Principal
Street Kour chand MHR Malout
Punjab- 152107

Guru Purnima

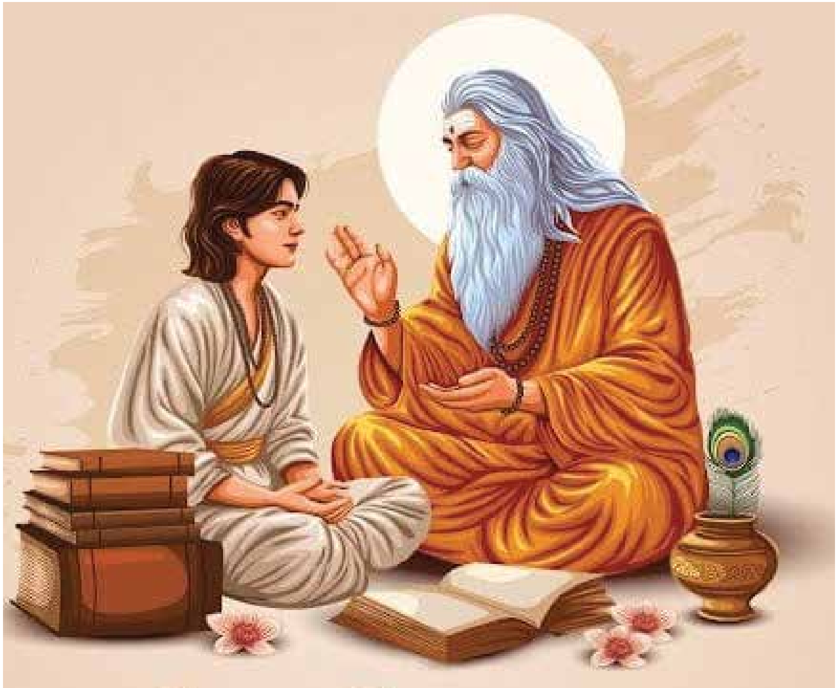

Guru Purnima is one of the most significant and revered festivals in India. It is celebrated to express gratitude and respect towards gurus, teachers, mentors, and spiritual guides who enlighten us with knowledge and wisdom. The word "Guru" comes from Sanskrit, where "Gu" means darkness and "Ru" means remover. Thus, a guru is someone who removes the darkness of ignorance and leads a person towards knowledge and truth. Guru Purnima is observed on the full moon day (Purnima) in the Hindu month of Ashadha, which usually falls in July or August.

The festival has great importance in Hinduism, Buddhism, and Jainism. It is a day dedicated to remembering the invaluable role of teachers in shaping the lives of individuals and society. Teachers not only provide academic knowledge but also inspire moral values, discipline, confidence, and character. Guru Purnima reminds us that education is not merely about acquiring information but about becoming a better human being.

According to Hindu tradition, Guru Purnima is celebrated in honor of the great sage Maharishi Ved Vyasa, who is regarded as one of the greatest scholars in Indian history. He is believed to have compiled the four Vedas, written the Mahabharata, and composed the eighteen Puranas. Because of his immense contribution to Indian literature and philosophy, Guru Purnima is also known as Vyasa Purnima. On this day, devotees pay homage to Maharishi Ved Vyasa and seek blessings for wisdom and spiritual growth.

Guru Purnima also holds special significance in Buddhism. It is believed that on this day, Lord Buddha delivered his first sermon at Sarnath after attaining enlightenment. This sermon, known as the "Dhammacakkappavattana Sutta," marked the beginning of the spread of Buddhism. Buddhist monks and followers observe the day by meditating, offering prayers, and reflecting on the teachings of Buddha. Similarly, in Jainism, Guru Purnima commemorates the day when Lord Mahavira accepted Gautam Swami as his first disciple, highlighting the sacred bond between teacher and student.

The celebration of Guru Purnima varies across different regions and traditions. In schools and colleges, students organize cultural programs, speeches, songs, and performances to honor their teachers. They present greeting cards, flowers, and gifts as tokens of gratitude. Educational institutions often arrange special assemblies where students express their appreciation for the guidance and support they receive from their teachers.

In spiritual ashrams and temples, devotees gather to perform prayers, chant sacred hymns, meditate, and listen to spiritual discourses. Disciples offer flowers, fruits, and traditional offerings to their gurus as a mark of respect. Many people observe fasting and spend the day reading sacred scriptures such as the Bhagavad Gita, the Upanishads, and the teachings of saints. The atmosphere is filled with devotion, humility, and gratitude.

The importance of Guru Purnima extends beyond religious rituals. It teaches the values of respect, gratitude, humility, and lifelong learning. In today's fast-paced world, teachers continue to play a vital role in shaping responsible citizens and future leaders. They help students develop critical thinking, creativity, discipline, and ethical values. A true guru not only teaches lessons from books but also inspires individuals to overcome challenges and achieve their highest potential.

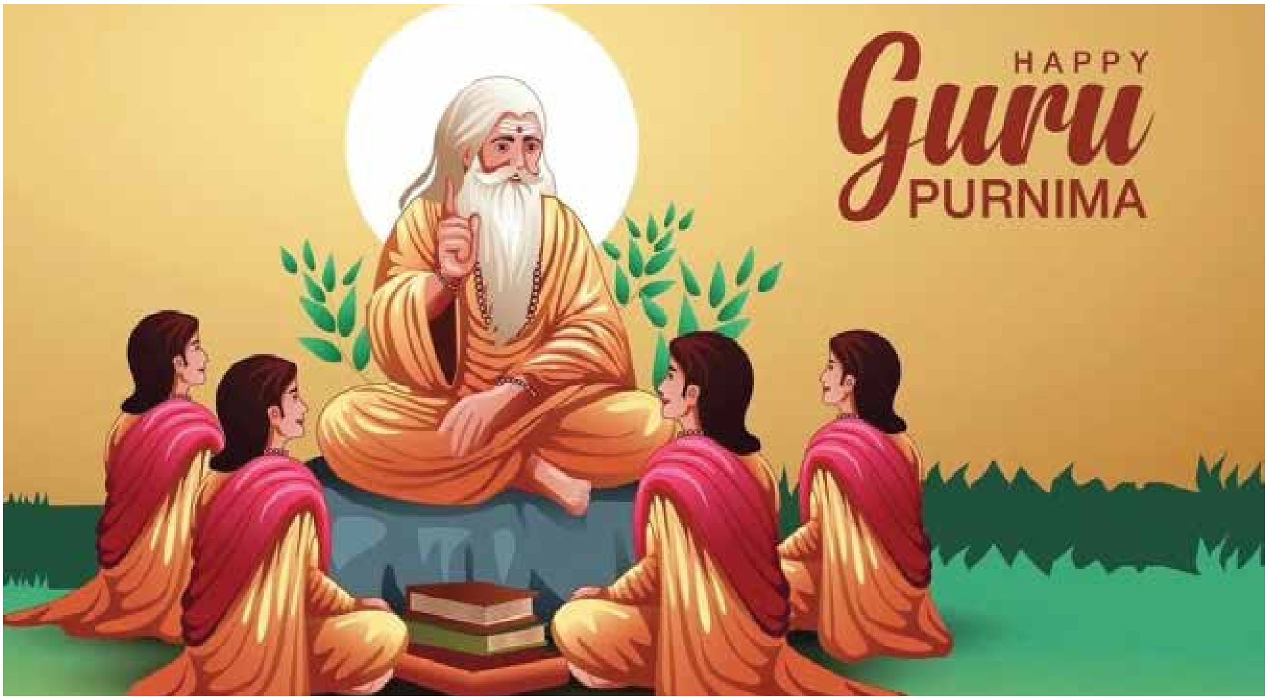

In Indian culture, the relationship between a guru and a disciple is considered sacred. Ancient gurukuls were centers of learning where students lived with their gurus and learned not only academic subjects but also life skills, discipline, and moral values. This close bond fostered mutual trust, respect, and dedication. Even today, the essence of this relationship remains relevant. Modern teachers, professors, coaches, mentors, and even parents often serve as gurus by guiding individuals in different aspects of life.

Guru Purnima is also an opportunity for self-reflection. It encourages people to evaluate their personal growth and acknowledge those who have positively influenced their lives. Besides teachers, one may express gratitude to parents, elders, coaches, friends, and mentors who have offered guidance during difficult times. The festival reminds us that learning is a lifelong process, and every person we meet has the potential to teach us something valuable.

The teachings of a guru help build a strong foundation for success and happiness. Knowledge received from teachers empowers individuals to make informed decisions, solve problems, and contribute positively to society. By honoring gurus, we also recognize the importance of education in building a peaceful, progressive, and compassionate world. The respect shown to teachers on Guru Purnima encourages future generations to value education and uphold the dignity of the teaching profession.

In recent years, Guru Purnima has also gained recognition in workplaces and professional settings. Many organizations acknowledge mentors and senior colleagues who guide younger employees in their careers. This reflects the universal relevance of the festival, as mentorship plays an essential role in personal and professional development. The principles of gratitude, respect, and continuous learning remain meaningful across all fields of life.

Guru Purnima is not merely a religious festival but a celebration of knowledge, wisdom, and the timeless bond between teachers and students. It reminds us that behind every successful individual stands a teacher who has inspired, encouraged, and guided them along the way. By expressing gratitude to our gurus, we acknowledge their selfless efforts in shaping our character and future.

In conclusion, Guru Purnima is a beautiful festival that celebrates the importance of education, wisdom, and guidance. It honors the contributions of teachers, spiritual leaders, and mentors who illuminate our lives with knowledge and values. The festival teaches us to remain humble, grateful, and committed to lifelong learning. As we celebrate Guru Purnima each year, we should remember to respect our teachers not only through words and gifts but also by practicing the lessons they have taught us. Their guidance helps us become responsible individuals and better citizens, making Guru Purnima a truly meaningful and inspiring occasion.

Raksha Bandhan

Raksha Bandhan is one of the most cherished and widely celebrated festivals in India. It is a festival that symbolizes the deep bond of love, trust, care, and protection between brothers and sisters. The term "Raksha Bandhan" is derived from two Sanskrit words: "Raksha," meaning protection, and "Bandhan," meaning bond or tie. Thus, Raksha Bandhan signifies the sacred bond of protection and affection. The festival is celebrated on the full moon day (Purnima) of the Hindu month of Shravana, which usually falls in August.

Raksha Bandhan has been celebrated in India for centuries and holds great cultural, religious, and emotional significance. Although it is primarily associated with the relationship between brothers and sisters, the festival also represents love, unity, respect, and harmony among families and communities. It reminds people of the importance of standing by one another during times of joy and hardship.

The central ritual of Raksha Bandhan is the tying of a sacred thread called a "rakhi" by a sister on her brother's wrist. Before tying the rakhi, the sister performs an aarti, applies a tilak on her brother's forehead, and offers sweets. The brother, in return, gives gifts to his sister and promises to protect her throughout her life. In modern times, this promise is understood not only as physical protection but also as emotional support, respect, encouragement, and lifelong companionship. Today, many sisters also pledge to support and care for their brothers, making the festival a celebration of mutual love and responsibility.

Raksha Bandhan is associated with several legends and historical stories. One of the most famous legends comes from the Hindu epic Mahabharata. It is believed that Lord Krishna injured his finger while handling the Sudarshana Chakra. Seeing him bleed, Draupadi tore a strip from her sari and tied it around his finger to stop the bleeding. Deeply touched by her gesture, Lord Krishna promised to protect her whenever she needed help. Later, during the incident of her humiliation in the Kaurava court, Krishna protected Draupadi by providing her with an endless length of cloth. This story is often regarded as an example of the sacred bond represented by Raksha Bandhan.

Another popular story is related to Queen Karnavati of Mewar and the Mughal Emperor Humayun. According to tradition, when Queen Karnavati faced the threat of invasion by Bahadur Shah, she sent a rakhi to Emperor Humayun seeking his protection. Respecting the sacred bond symbolized by the rakhi, Humayun is said to have marched to help her. Although historians debate the details of this account, it remains a well-known example of how Raksha Bandhan symbolizes trust and protection beyond family relationships.

Another legend connects Raksha Bandhan with Lord Indra and his wife, Indrani. According to ancient scriptures, during a fierce battle between the gods and demons, Indrani tied a sacred thread around Lord Indra's wrist after chanting protective prayers. This thread was believed to give him strength and divine protection, helping him achieve victory. This story highlights the spiritual significance of the sacred thread.

Raksha Bandhan is celebrated with great enthusiasm across India and in many other countries where Indian communities live. Preparations begin several days before the festival. Markets are beautifully decorated with colorful rakhis, greeting cards, sweets, chocolates, gifts, and decorative items. Rakhis are available in countless designs, ranging from simple handmade threads to elaborate ones decorated with beads,

pearls, stones, and cartoon characters for children. Eco-friendly and handcrafted rakhis have also become increasingly popular as people become more environmentally conscious.

On the day of the festival, family members wear traditional clothes and gather to celebrate. Sisters prepare a puja thali containing a diya (lamp), kumkum, rice grains, sweets, and the rakhi. After performing the rituals, families enjoy festive meals together. Popular sweets such as laddoos, barfi, rasgulla, gulab jamun, and kaju katli are prepared and shared. The festival strengthens family ties and creates lasting memories through laughter, conversations, and celebrations.

In modern times, Raksha Bandhan has evolved beyond its traditional meaning. Many women tie rakhis to cousins, close friends, neighbors, teachers, and even soldiers as a gesture of respect and gratitude. Soldiers stationed at the country's borders often receive thousands of rakhis from school children and women across India, expressing appreciation for their service and sacrifice. This practice broadens the meaning of Raksha Bandhan by recognizing those who protect society and the nation.

The festival also promotes social harmony and unity. In many communities, people from different religions and backgrounds participate in Raksha Bandhan celebrations. The festival encourages feelings of brotherhood, equality, compassion, and mutual respect. In some places, people tie rakhis to trees to express their commitment to protecting nature and the environment. Environmental organizations organize campaigns encouraging citizens to preserve forests and natural resources, giving the festival a meaningful ecological message.

Technology has also transformed the way Raksha Bandhan is celebrated. Families separated by distance stay connected through video calls and social media. Sisters send rakhis and gifts through postal and courier services or online shopping platforms. Virtual celebrations have made it possible for loved ones living in different countries to continue observing the festival together despite geographical distances.

Raksha Bandhan teaches several valuable lessons. It reminds us that strong relationships are built on trust, love, respect, and responsibility. The festival emphasizes that family members should support each other during both happy and difficult times. It also teaches gratitude by encouraging siblings to appreciate the lifelong companionship they share. The spirit of protection celebrated during Raksha Bandhan extends beyond family to society, inspiring people to care for one another and contribute to a more compassionate world.

The importance of Raksha Bandhan remains relevant in today's rapidly changing society. While traditions may evolve, the core values of affection, mutual respect, equality, and support continue to inspire people of all ages. The festival celebrates not only biological relationships but also the bonds of friendship, mentorship, and social responsibility that enrich human life.

In conclusion, Raksha Bandhan is much more than the ritual of tying a sacred thread. It is a joyful celebration of love, trust, protection, and lifelong commitment between siblings and among all those who care for one another. It strengthens family relationships, promotes social unity, and reminds us of the importance of standing together in times of need. By celebrating Raksha Bandhan with sincerity and affection, we preserve a beautiful tradition that continues to spread happiness, harmony, and goodwill across generations. It is truly one of India's most meaningful and heartwarming festivals.

Krishna Janmashtami

Krishna Janmashtami, also known simply as Janmashtami, is one of the most important and widely celebrated festivals in India. It marks the birth of Lord Krishna, the eighth incarnation of Lord Vishnu, who is regarded as the protector of righteousness and the destroyer of evil. Celebrated with immense devotion and enthusiasm, Janmashtami falls on the eighth day (Ashtami) of the Krishna Paksha (dark fortnight) in the Hindu month of Bhadrapada, which usually occurs in August or September. The festival is observed not only in India but also by Hindu communities across the world.

Lord Krishna is one of the most beloved deities in Hinduism. He is worshipped as a divine child, a playful cowherd, a wise philosopher, a compassionate friend, and a courageous warrior. His life and teachings continue to inspire millions of people. The Bhagavad Gita, one of the most sacred texts of Hinduism, contains Lord Krishna's teachings to Arjuna during the battle of Kurukshetra. These teachings emphasize the importance of duty, righteousness, devotion, self-discipline, and selfless action.

According to Hindu mythology, Lord Krishna was born in the city of Mathura to King Vasudeva and Queen Devaki. At that time, Mathura was ruled by the cruel King Kansa, who was Devaki's brother. A prophecy foretold that Devaki's eighth son would become the cause of Kansa's death. Terrified by this prediction, Kansa imprisoned Devaki and Vasudeva and killed their first six children. The seventh child, Balarama, was miraculously transferred to the womb of Rohini through divine intervention. When Krishna was born as the eighth child at midnight, extraordinary events took place. The prison doors opened automatically, the guards fell into a deep sleep, and the chains binding Vasudeva broke. Carrying the newborn Krishna in a basket, Vasudeva crossed the flooded Yamuna River. It is believed that the serpent Sheshnag spread its hood over the infant to protect him from the rain. Vasudeva safely reached Gokul and exchanged Krishna with the newborn daughter of Yashoda and Nanda before returning to the prison.

Krishna spent his childhood in Gokul and later in Vrindavan under the loving care of Nanda and Yashoda. His childhood stories are filled with joy, adventure, and miracles. He was known for his playful nature and his love for butter, earning the affectionate name "Makhan Chor." Krishna often played delightful pranks with his friends and the gopis (cowherd girls). Despite his mischievous behavior, he demonstrated divine powers from an early age by defeating dangerous demons such as Putana, Trinavarta, Bakasura, and Aghasura, who were sent by Kansa to kill him.

One of the most famous incidents from Krishna's childhood is the lifting of Govardhan Hill. When the people of Vrindavan prepared to worship Lord Indra, Krishna advised them instead to honor Govardhan Hill, which provided them with food and shelter. Angered by this, Indra sent torrential rains to destroy the village. Krishna lifted the entire Govardhan Hill on his little finger, providing shelter to the villagers and their cattle for seven days. This event demonstrated his divine power and taught the importance of humility and faith.

Krishna Janmashtami is celebrated with great devotion throughout India. Preparations begin several days in advance. Homes and temples are cleaned and decorated with flowers, lights, colorful rangolis, and mango leaves. Beautiful idols of baby Krishna are dressed in attractive clothes and adorned with ornaments. Devotees create small cradles for the infant Krishna and decorate them with flowers and ribbons. Many people observe a day-long fast and spend the day singing devotional songs, chanting prayers, reading the Bhagavad Gita, and listening to stories from Krishna's life.

The most significant celebrations take place at midnight, the believed time of Krishna's birth. Temples are beautifully illuminated, and special prayers and bhajans are performed. At the stroke of midnight, devotees welcome the birth of Lord Krishna by ringing bells, blowing conch shells, and performing elaborate aarti ceremonies. The idol of baby Krishna is placed in a decorated cradle and gently rocked by devotees as a symbol of welcoming the divine child. The atmosphere is filled with devotion, music, and joy.

One of the most exciting traditions associated with Janmashtami is Dahi Handi, especially popular in Maharashtra. According to Krishna's childhood stories, he loved stealing butter from pots hung high by the village women. To recreate this playful act, an earthen pot filled with curd, butter, sweets, or money is suspended at a considerable height. Teams of young participants, known as Govindas, form human pyramids to reach and break the pot. Large crowds gather to watch these competitions, which are accompanied by music, dancing, and cheering. Dahi Handi symbolizes teamwork, determination, courage, and unity.

In Mathura and Vrindavan, the birthplace and childhood home of Lord Krishna, Janmashtami is celebrated with exceptional grandeur. Thousands of pilgrims visit these sacred cities to participate in special prayers, processions, devotional singing, and dramatic performances depicting episodes from Krishna's life. Temples such as the Shri Krishna Janmabhoomi Temple and the Banke Bihari Temple are magnificently decorated and attract devotees from around the world.

Krishna Janmashtami teaches many valuable lessons that remain relevant today. Lord Krishna emphasized truth, righteousness, compassion, courage, humility, and devotion. His teachings in the Bhagavad Gita encourage individuals to perform their duties sincerely without attachment to the results. He taught that one should remain calm in success and failure, maintain faith in God, and always stand for justice and truth. These timeless principles continue to guide people in their personal, professional, and spiritual lives.

The festival also strengthens family and community bonds. Families gather to celebrate, prepare special dishes, exchange greetings, and participate in religious ceremonies. Children often dress as little Krishna and Radha, adding joy and color to the celebrations. Schools and cultural organizations organize dramas, dances, quizzes, and competitions based on Krishna's life, helping younger generations learn about India's rich cultural and spiritual heritage.

In modern times, Krishna Janmashtami has become a global celebration. Hindu communities across countries such as the United States, the United Kingdom, Canada, Australia, South Africa, and many others celebrate the festival with devotion. Temples organize cultural programs, devotional music, lectures, and charitable activities, spreading the message of love, peace, and righteousness to people of all backgrounds.

In conclusion, Krishna Janmashtami is a festival that celebrates the birth of Lord Krishna, whose life and teachings continue to inspire millions around the world. It is a celebration of faith, devotion, love, wisdom, and the triumph of good over evil. The festival reminds us to live with honesty, compassion, courage, and selfless service while performing our duties with dedication. By celebrating Krishna Janmashtami, people not only honor the birth of a divine incarnation but also reaffirm their commitment to the timeless values that Lord Krishna taught humanity. The festival remains a vibrant symbol of India's rich spiritual heritage and continues to unite people in joy, devotion, and hope.

आदरणीय संपादक महोदय!

शिक्षा सारथी का 'मई-जून-2026' अंक पढ़ने का अवसर मिला। मुख्यपृष्ठ को देखते ही आभास हुआ कि यह अंक विशेष रूप से 'स्कूल प्रबंधन समिति' के नवीन दिशा-निर्देशों पर आधारित है। सभी आलेख ज्ञानवर्धक हैं।

सन् 2047 तक भारत को विकसित राष्ट्र बनाने का सपना यदि पूरा करना है, तो पहले हमें शिक्षा के क्षेत्र से ही शुरुआत करनी होगी और यह स्कूल प्रबंधन समिति के सहयोग के बिना संभव नहीं है। डॉ. प्रमोद कुमार के आलेख 'कक्षा-तत्परता कार्यक्रम-2026' में चालू सत्र में इस कार्यक्रम में किए जाने वाले परिवर्तनों के विषय में जानकारी प्राप्त हुई।

सुदेश रानी के लेख में सुपर-100 के विद्यार्थियों की उपलब्धि के बारे में पढ़कर बहुत गर्व महसूस हुआ। सत्यवीर नाहड़िया के आलेख 'कमालपुर स्कूल का कमाल' शीर्षक को पढ़ कर दूसरे विद्यालयों को भी बेहतर करने की प्रेरणा मिलती है। दर्शन लाल बवेजा का 'खेल-खेल में विज्ञान' रोचक और नवीन जानकारी से भरपूर है। 'बाल सारथी' के सभी भाग बहुत मज़ेदार लगे।

शिक्षा सारथी का यह अंक बहुत रोचक और ज्ञानवर्धक लगा। संपूर्ण संपादन-मंडल बधाई का पात्र है।

नीलम देवी
प्रवक्ता संस्कृत
स्व. से. चौ. ज. रावमा विद्यालय, गिगनाऊ
खण्ड- लोहारू, भिवानी

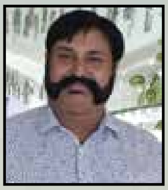

आदरणीय संपादक जी!

यह पत्रिका शिक्षा के विभिन्न आयामों को सुंदर ढंग से प्रस्तुत करती है। सामुदायिक भागीदारी, विद्यालय प्रबंधन और शिक्षक की भूमिका जैसे विषय हमें बताते हैं कि शिक्षा केवल कक्षा तक सीमित नहीं, बल्कि समाज और राष्ट्र निर्माण का आधार है। विज्ञान, रोबोटिक्स और नवाचार आज के विद्यार्थियों को भविष्य के लिए तैयार कर रहे हैं। वहीं कला, संस्कृति और परंपराओं से जुड़ाव हमारी जड़ों को मज़बूत करता है। माहवारी शिक्षा, स्वच्छता और समानता जैसे विषयों पर जागरूकता एक स्वस्थ एवं संवेदनशील समाज के लिए आवश्यक है।

कक्षा तत्परता कार्यक्रम, सुपर-100 और खेल-खेल में विज्ञान जैसी पहलें बच्चों में सीखने की रुचि और आत्मविश्वास बढ़ाती हैं। एक शिक्षक के रूप में मेरा विश्वास है कि शिक्षा का उद्देश्य केवल अच्छे अंक नहीं, बल्कि अच्छे इंसान और जिम्मेदार नागरिक भी बनाना है।

आशा है, यह पत्रिका प्रत्येक पाठक को कुछ नया सीखने और सकारात्मक बदलाव के लिए प्रेरित करेगी।

शिव कुमार
प्रवक्ता इतिहास
राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, कोयर माजरा
जिला-करनाल, हरियाणा

शून्य : भारत की अमूल्य देन

आर्यभट्ट ने राह दिखाई,
ब्रह्मगुप्त ने पहचान दिलाई।
शून्य बना संख्या महान,
गणित को मिला नया ज्ञान।

दस, सौ, हज़ार बनने लगे,
हिसाब सभी के सरल होने लगे।
शून्य ने गणना को दी नई उड़ान,
बढ़ने लगा गणित का मान।

शून्य-एक से चलता कंप्यूटर संसार,
इनसे जुड़ी तकनीक अपार।
मोबाइल, विज्ञान और अंतरिक्ष ज्ञान,
शून्य से बदला सारा जहान।

कुछ नहीं होकर सब कुछ बना,
शून्य से आधुनिक संसार सजा।
शून्य भारत का अमूल्य योगदान,
जग में गूँजे इसका यश-गान।

चीनू अग्रवाल
गणित अध्यापिका
पीएम श्री राजकीय उच्च विद्यालय, दप्पर
मोहाली, पंजाब

स्वदेश

वह हृदय नहीं है पत्थर है,
जिसमें स्वदेश का प्यार नहीं।।

जो जीवित जोश जगा न सका,
उस जीवन में कुछ सार नहीं।
जो चल न सका संसार-संग,
उसका होता संसार नहीं।।

जिसने साहस को छोड़ दिया,
वह पहुँच सकेगा पार नहीं।
जिससे न जाति-उद्धार हुआ,
होगा उसका उद्धार नहीं।।

जो भरा नहीं है भावों से,
बहती जिसमें रस-धार नहीं।
वह हृदय नहीं है पत्थर है,
जिसमें स्वदेश का प्यार नहीं।।

जिसकी मिट्टी में उगे बढ़े,
पाया जिसमें दाना-पानी।
है माता-पिता बंधु जिसमें,
हम हैं जिसके राजा-रानी।।

जिसने कि खजाने खोले हैं,
नवरत्न दिये हैं लासानी।
जिस पर ज्ञानी भी मरते हैं,
जिस पर है दुनिया दीवानी।।

उस पर है नहीं पसीजा जो,
क्या है वह भू का भार नहीं।
वह हृदय नहीं है पत्थर है,
जिसमें स्वदेश का प्यार नहीं।।

निश्चित है निस्संशय निश्चित,
है जान एक दिन जाने को।
है काल-दीप जलता हरदम,
जल जाना है परवानों को।।

है लज्जा की यह बात शत्रु–
आये आँखें दिखलाने को।
धिक्कार मर्दुमी को ऐसी,
लानत मर्दाने बाने को।।

सब कुछ है अपने हाथों में,
क्या तोप नहीं तलवार नहीं।
वह हृदय नहीं है पत्थर है,
जिसमें स्वदेश का प्यार नहीं।।

- गयाप्रसाद शुक्ल 'सनेही'